वज्राङ्गबली-हनुमान

सम्पादक :—
कमलकुमार जैन शास्त्री 'कुमुद'
फूलचंद जैन 'पुष्पेन्दु'
खुरई (जिला-सागर) म० प्र०

प्रकाशक
भीकमसेन रतनलाल जैन
१२८६ वकीलपुरा, देहली-११०००६

कुंथु सागर स्वाध्याय सदन प्रकाशन
खुरई (जिला-सागर) म० प्र०

३१ जुलाई १९७३ 31.7.73

प्र० संस्करण २००० | वी० नि० संवत् २४९९ | लागत-मूल्य २-००
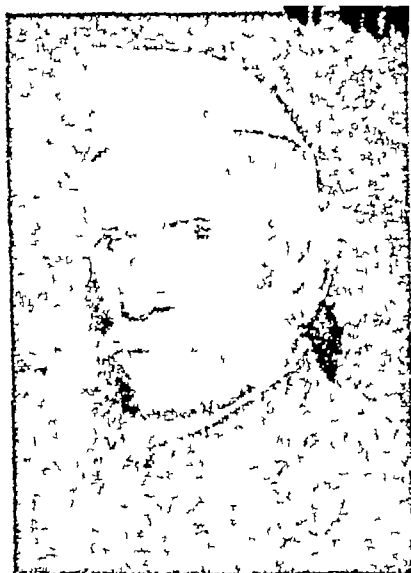
पूर्वाभास

"रामायण" इस कल्पकाल की एक अत्यन्त लोकप्रिय कृति है, जो विविध भाषाओ, विविध देशो और विविध धर्मो मे युगो-युगो से विविध शैलियो मे गाई जाती रही है। सत-मुनियों से लेकर अद्यतन कवियो की वाणी भी इसके मुख्य-गौण पात्रों का चरित्र-चित्रण कर—

"यत्कोकिल. किलमधौ मधुर विरौति"

की भाँति मुखर हो-हो उठी है। यही कारण है कि रामायण विषयक कोटि-कोटि ग्रथ महाकाव्य और खंड काव्यों के रूप मे हमारे समक्ष विद्यमान हैं।

प्रस्तुत "वज्रागवली हनुमान" भी एक ऐसा ही खंड-काव्य है—जिसकी प्राण-कथा पदम-पुराण नामक जैन रामायण के वाछनीय स्थलो के आधार-स्तम्भो पर लिखी गई है। भावो की अनादि-निधनता को लक्ष्य मे रखते हुए हमने इसकी भाषा की पुरातनता को भी अक्षुण्ण ही रखा है, दान-कथा या शील-कथ

की भाँति। अस्तु।

असल मे तो यह खड-काव्य कविवर श्री ब्रह्मराय रचित 'हनुमान-चरित्र' का आमूल-चूल सशोधन मात्र है, हमारी अपनी कोई मौलिकता इसमे किंचित् भी नही है। तथापि इसके पुनर्लेखन की अनिवार्यता का मुख्य कारण यह रहा कि मूल हस्त-लिखित प्रतियाँ लिपिकारो की कलम-कुल्हाडियो से आहत होकर जव मुद्राराक्षसो (कपोजीटरो) की शरण मे आई तो उनकी महती कृपा से मरणासन्न ही हो गई।

सूरत से प्रकाशित "हनुमान-चरित्र" इसका ज्वलन्त उदाहरण है। किमधिकम्।

इस ग्रथ के प्रकाशन का सारा भार उठाने वाले वावू रतन-लाल जी जैन कालका निवासी जो कि वर्तमान में एक लम्बे अरसे से वकीलपुरा, देहली मे रहते हैं हमारे सुपरिचित घनिष्ठ मित्रो मे से एक है जिन्होने मेरी तुच्छ लोह-लेखनी पर विमुग्ध होकर मुझे यह ग्रथ लिखने को सदैव प्रेरित किया है। अस्तु, उनका हम जितना भी आभार माने थोडा ही होगा।

"वज्रागवली हनुमान" उन ही की सतत् प्रेरणा का प्रतिफल है। वावू रतनलाल जी जैन की साहित्य प्रकाशन की अभिरुचि कोई नई नही है, अपितु समय-समय पर वे अपने न्यायोपार्जित वित्त का सदुपयोग सदा-सर्वदा से जैन साहित्य के प्रकाशन पर किया करते है।

जिन वाणी सरस्वती मन्दिर के यह भक्त पुजारी अपने हृदय मे, समर्पण का कितना गहरा भाव छिपाये हुए हैं वह लेखनी से नही, प्रस्तुत प्रत्यक्ष दर्शन से ही मापा जा सकता है। 'सादा-जीवन, उच्च विचार' के ज्वलत प्रतीक 'श्री वावू रतन-लालजी' पवित्र खादी से अपनी देह को विभूषित किये हुए यदि कदाचित् समागम पथ पर आप को मिल जावे तो सर्वप्रथम प्रश्न

यही होगा—पण्डित जी प्रचार योग्य सत्साहित्य के प्रकाशन की यदि कोई योजना हो तो हमे नही भूलियेगा।

अस्तु आत्म निह्नवता का गुण तो आप मे कूट-कूट कर भरा है। यही कारण है कि जहाँ उनकी प्रशस्ति मे हमे यहाँ २-४ पृष्ठ भरना अनिवार्य था वहाँ केवल २-४ परिचयात्मक पक्तियाँ ही उनके व्यक्तित्व की झाँकी दिखाकर सन्तोष करना पड रहा है।

काव्य-दृष्टि से किसी भी खड-काव्य मे जो लक्षण होना चाहिए वे सब इसमे विद्यमान है। नव-रस-अलकारो से युक्त यह चौपाई छद काव्य सयोग-वियोग, शृ गार और करुण-वीर रस के फिल्मी दृश्य उपस्थित करता है।

जैन धर्म का प्राण वैराग्य रस है और इस रस से यह काव्य पूर्णरूपेण ओत-प्रोत है। यथा स्थान जैन तत्त्वों का निरूपण करते चलना इस काव्य की अपनी एक अनूठी शैली है।

कमलकुमार जैन शास्त्री

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य के चरितकाव्यो को देखने से पता चलता है कि ये चरित्रकाव्य प्रबन्धकाव्य का ही एक प्रकार है। यही कारण है कि प्राय चरित्र-काव्यों को चरित, कभी कथा और कभी पुराण कहा गया है, जैसे 'पउमचरिउ', 'रिट्ठणेमिचरिउ', 'जसहर-चरिउ', 'पज्जण्णकहा', 'भवित्त कहा', 'महापुराण', 'हरिवश पुराण', आदि। संस्कृत मे चार शैलियों के प्रबन्ध काव्य मिलते है—शास्त्रीय शैली, ऐतिहासिक शैली, पौराणिक शैली और रोमाचिक शैली। इसमे से प्रथम के अतिरिक्त अन्य तीन शैलियो मे चरित काव्य लिखे गये है। ऐतिहासिक शैली के चरित काव्यो मे—'पृथ्वीराज विजय,' बिक्रमाकदेव चरित', 'कुमारपाल चरित', 'गउडबहो' आदि हैं। पौराणिक शैली मे लिखे गये चरित काव्यो मे 'पद्मचरित', 'पार्श्वनाथ', 'पउम चरिय', 'महापुराण', 'पास पुराण', आदि प्रमुख हैं। रोमासिक शैली के चरितकाव्यो मे 'नवसाहसाक चरित', 'चन्द्रप्रभचरित', 'शान्तिनाथ चरित', 'मलयसुन्दरी कहा', 'अजणा सुन्दरी चरित', 'भविसयत्त कहा', 'करकण्डु चरिउ', 'जसहर चरिउ', आदि महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं।

चरित काव्य शैली जीवनचरित की शैली होती है, जिसमे प्रारम्भ मे या तो ऐतिहासिक ढग से नायक के पूर्वज, माता-पिता और वश का वर्णन रहता है या पौराणिक ढग से उसके पूर्व भावो का वृतान्त तथा उसके जन्म के कारणो का वर्णन होता है अथवा कथाकाव्य की तरह उसके माता-पिता, देश

और नगर का वर्णन रहता है। उसमें चरित नायक के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक की अथवा कई जन्मो (भवान्तरो) की कथा होती है।

चरित काव्यो मे प्राय· प्रेम, वीरता, धर्म या वैराग्य-भावना का समन्वय दिखलाई पडता है। पर सव मे कोई न कोई प्रेम-कथा अवश्य होती है। उसके पौराणिक कथानक मे प्रेमाख्यानक रग भर कर उसे अधिक सजीव वनाने का प्रयत्न किया जाता है। जैन चरित-काव्यो मे प्राय अन्त मे नायक किसी प्रेरणा या उपदेश से ससार से विरक्त होकर जैन मुनि वन जाता है। इन जैन चरित-काव्यो मे अलौकिक अति प्राकृत और अतिमानवीय शक्तियाँ, कार्यों और वस्तुओ का समावेश अवश्य रहता है, जो पौराणिक और रोमासिक शैली के कथा काव्यो, पौराणिक कथाओ और लोक कथाओ की देन है। इस कारण इसमे साहसपूर्ण, आश्चर्योत्पादक और रोमासिक कार्यों तथा तत्त्वो की अधिकता होती है और उन सभी कथानक रूढियो की भरमार होती है, जो लोक-कथा और कथा-आख्यायिका मे वहुत अधिक मिलती है।

इन चरित काव्यो का कथानक शास्त्रीय प्रवन्ध काव्यो जैसा पच सधियो से युक्त और कार्यान्विति वाला नही होता, वह कथा काव्यो की तरह स्फीत, विशृ खल, गुम्फित या जटिल होता है। इनकी शैली प्रवन्ध काव्यो जैसी अतिशय अलकृत, चमत्कारपूर्ण या पाण्डित्य प्रदर्शन की प्रवृत्ति से युक्त नही होती, वल्कि इसमे अधिक सहजता, सरलता, सादगी और सामान्य जनता के लिये पर्याप्त आकर्षण होता है। इन चरित-काव्यो का उद्देश्य अधिक उभरा और स्पष्ट होता है यह उद्देश्य कभी धार्मिक कभी प्रशस्तिमूलक और कभी लोक कल्याणा-

भिनिवेशी होता है। इसी कारण चरितकाव्य उपदेशात्मक, प्रचारात्मक या प्रशास्तिमूलक प्रतीत होते हैं

सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श और आधुनिक भारतीय भाषाओं सभी मे लिखे हुए जैन चरित काव्यो मे विषय वस्तु की सामानता मिलती है। इसका सबसे बडा कारण है कि उनके सामने कथानको का स्वरूप प्राय निश्चित रहता था, प्रतिभा सम्पन्न कवि परम्परा मे बधी कथा मे काव्यानुकूल प्रसगो पर प्राय अपने कवित्व की प्रतिभा प्रदर्शन करते थे। ये जैनचरित काव्यो के दो प्रकार मिलते हैं—अनेक पात्रो की कथा वाले ग्रन्थ और एक पात्र की कथा कहने वाली कृतियाँ। प्राकृत और अपभ्र श जैन कवियो द्वारा लिखित जैन काव्यो की जो धारा मिलती है वह वडी ही गौरवशालिनी है।

जैन महाराष्ट्री का प्राचीनमत चरितकाव्य विमल सूरि कृत 'पउम चरिय' है, जिसमे राम की कथा जैन पुराणो के ढग पर कही गयी है। इसकी रचना सम्भवत महावीर स्वामी के निर्वाण के ५३० वर्ष वाद हुआ। समस्त काव्य गाथा छदो मैं निवद्ध है, किन्तु कही-कही सस्कृत वर्णिक वृत्त भी प्रयुक्त हुए हैं। अन्य चरित काव्यो मे शीलाक (८६८ ई०)का 'चउपन्न महापुरिम-चरिय', 'वर्धमान' (११०३ ई०) का 'आदिनाथ-चरित', हरिभद्र (१२ वी सदी ई०) का 'मल्लिनाथ चरित' तथा 'चन्द्रप्रभ चरित', लक्ष्मण भणि (११४३ ई०) का सुपस्सनाह चरिय', गुणचन्द्र का महावीर चरित (११९० ई०) प्रसिद्ध है।

प्राचीन अपभ्र श मे पुष्पदन्त का भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होने महापुराण की रचना की, जिसमे ६३ महापुरुषो के चरित्रो का वर्णन है। ये अत्यधिक अक्खड स्वभाव के थे अतएव इन्हे 'अभिमग्न मेरु' 'अभिमान चिह्न', 'कवि-पिशाच' जैसी

विचित्र पदवियों से ।५भूषित किया गया था। 'महापुराण' मे जैन शलाका पुरुषो के जीवन का वर्णन है। आरम्भिक ३७ सधियो मे तीर्थंकर ऋषभदेव के चरित्र का वर्णन है। इसके अतिरिक्त ११ सधियो मे रामचरित्र एव १२ सधियो मे कृष्ण चरित्र का निरूपण भी किया गया है। पुष्पदन्त के महापुराण को जैन धर्मानुयायी उसी आदर की दृष्टि से देखते है जिस दृष्टि से ब्राह्मण धर्मानुयायी महाभारत को। इनकी दूसरी कृति 'जस हर चरिउ' मे मुनि यशोधर के चरित्र का वर्णन है, जिसमे कापालिक शैव-मत पर जैनधर्म की विजय घोषित की गई है। इसके उपरान्त धनपाल की "भविसयत्त कहा" (११वी शती) को लिया जा सकता है। इसके रचनाकार धक्कडवशीय दिगम्बर जैन थे और उनकी माता का नाम धनश्री था। यह चरित काव्य २२ सन्धियो का है, जिसमे गजपुर के नगर सेठ धनपति के पुत्र भविष्यदत्त की कथा वर्णित है। साहित्यिक दृष्टि से 'भविसयत्त कहा' एक रुचिर और कलात्मक कृति है। अपभ्र श चरितकाव्यो की परम्परा मे "मुनि-कनकामर" (११वी शती उत्तरार्द्ध) का 'कर कण्ड चरिउ' प्रसिद्ध कृति है, जो काव्योचित लालित्य की दृष्टि से उदात्त कृति न होते हुए भी, कथानक-रूढियो के अध्ययन की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण है। इस काव्य मे 'प्रत्येक बुद्ध' महात्मा 'करकण्ड' के जीवन की कथा १० परिच्छेदो मे विभक्त है।

विभिन्न जैन भण्डारो की प्रकाशित सूचियो मे इस प्रकार के ग्रन्थो के उल्लेख मिलते है। इनमे धर्म सूरि (१२०९ ई०) की रचित 'श्री जम्बू स्वामी रासा' की भाषा मे अपभ्र श का आभास मिलता है। शब्दावली तद्भव प्रधान है। इसी प्रकार अम्बदेव कृत चरित्र काव्य 'सघपति समराराए' (१४वी शता०

वि०) मे दानवीर समरशाह का चरित्र भाषा मे वर्णित है। अन्य कृतियो में भाषा निरन्तर विकसित होती गई। १३५५ ई० मे रचित उदयवन्त कृति 'गौतमरासा' (अप्रकाशित), विद्धूण कृत १३६६ ई० मे रचित 'ज्ञान पचमी चउपइ', १४८६ ई० मे दयासागर सूरि रचित 'धर्मदत्त चरित', ईश्वर सूरि कृत 'ललिलाङ्गचरित्र (१५०५ ई०), सार सिखा-मनरास (१४६१ ई०) यशोधर चरित्र' (१५२४ ई०), 'कृपण चरित्र' (१५२३ ई०), ठकरसी कृत 'कुशल लाभ कृत', १५५६ ई० मे रचित 'माधवानल चौपाई', विद्याभूपण सूर कृत 'भविष्यदत्त रास', रायमल्ल कृत 'हनुमन्त चरित्र' (१५५६ ई०) और 'भविष्यदत्त चरित्र', जिनदास कृत 'जम्बू चरित्र' (१५८५ ई०), बनवारी लाल कृत 'भविष्यदत्त चरित्र' (१६०६ ई०), नन्द कृत 'यशोधर चरित्र' (१६२३ ई०) आदि प्रमुख हैं। इस प्रकार इन चरित काव्यो की रचना अठारहवी उन्नीसवी शती तक होती रही। उदाहरण के लिए आमेर शास्त्र भाण्डार मे प्राप्त खुशालचन्द कृत 'हरिवश पुराण' (१७२३ ई०), 'पद्मपुराण' (१७२६ ई०), धन्यकुमार चरित्र', 'जम्बू स्वामी चरित्र', का उल्लेख किया जा सकता है।

ये 'जैन-चरित्र-काव्य' जैसा कि पूर्व मे ही कहा गया है प्राय सस्कृत, प्राकृत अपभ्र श और पुरानी हिन्दी मे ही प्राप्त है, इनमे अपभ्र श मे लिखे गये चरित्र-काव्यो का विशेप महत्त्व है। सन् १६३३ के करीव जर्मन के खोजी विद्वान् हरमन याकोवी भारत आये और अहमदावाद के जैन भण्डार का निरीक्षण करते हुए उन्हे एक साधु के पास से 'भविसयत्त कहा' नामक पुस्तक देखने को मिली। उसके उपरात उन्हे 'नेमिनाथ चरित' ग्रन्थ भी प्राप्त हुआ। तव से विभिन्न जैन भण्डारो से विद्वानो द्वारा अनेकानेक ग्रन्थ प्रकाश में लाये गये। जिनमे पाटण का जैन ग्रथ

भण्डार, भण्डारकर रिसर्च इसटीट्युट, पूना व कारजा का जैन भण्डार अपना ऐतिहासिक महत्त्व रखते है। जिन विद्वानों ने इन चरित काव्यो को खोजकर प्रकाश मे लाने का कार्य किया उनमे—सर्व श्री चिमनलाल डाह्या भाई दलाल, पाण्डुरग गुणे, मुनि जिन विजय, आदिनाथ उपाध्ये, नाथूराम प्रेमी, डॉ हीरालाल, डॉ परशुराम वैद्य, लालचन्द गाँधी, डॉ जगदीश चन्द्र जैन और डॉ अल्सडोर्फ आदि प्रमुख हैं।

उक्त ग्रथ हनुमान जी से सम्वन्धित है, जो कि वानर वशी थे। 'वानर वश' और हनुमान जी के सम्वन्ध मे अनेक विचित्र वाते विभिन्न ग्रन्थो मे कही गयी है। उन पर भी यत्किंचित विचार कर लेना समीचीन होगा।

रामायण मे निर्दिष्ट 'वानर' विद्या, वुद्धि, ज्ञान, कला, ऐश्वर्य, सम्पत्ति, राज्य, भोग, वल, चातुर्य, राजनीति आदि गुणो मे किसी भी मानव जाति से कम न थे। इन लोगो का राज्य किष्किधा मे था एव वालि सुग्रीव एव अगद इनके राजा थे। हनुमान सुग्रीव के प्रमुख अमात्य थे। रे० फा० कामिल बुल्के के अनुसार, "वानर विध्यप्रदेश एव मध्य भारत मे अनार्य जातियाँ थी। छोटा नागपुर मे रहनेवाली उराओ एव मुण्डा जातियो मे आज भी तिग्गा, हलमान, वजरग, गडी नामक गोत्र प्राप्त है—जिन सवका अर्थ 'वानर' ही है। यही नही सिहभूमि की भुईयाँ जाति के लोग आज भी अपना वश 'पवन' अथवा 'हनुमत्' से वताते हैं (रामकथा–का० बुल्के, पृष्ठ १२१-१२२)।

पुराणो मे वानरो को हरि नामातर दिया गया है एवं उन्हे पुलह एव हरिभद्रा की सतान वताया गया है। व्रह्माण्ड पुराण के अनुसार पुलह ऋषि की वारह पत्नियाँ थी जिनके नाम-हरिभद्रा, मृगी, मृगमदा, इरावती, भूता, कपिशा, दष्ट्रा, ऋषा, तिर्या,

श्वेता, सरमा व सुरसा था (ब्रह्माण्ड ३-७ पृष्ठ १७१-१७३)। इसमे से हरिभद्रा की सतति मे वानर, गोलागुल, नील, द्वीपिन्, मार्जार, तरक्षु तथा किन्नर का उल्लेख किया गया है। हरिभद्रा से उत्पन्न होने के कारण ही 'वानरो' को 'हरि' नामान्तर प्राप्त हुआ। इसी प्रकार ब्रह्माण्ड पुराण मे वानरो के प्रमुख ग्यारह कुलो—द्वीपिन्, शरभ, सिह, व्याघ्र, नील, शल्पक, ऋक्ष, मार्जार लोहास, वानर, मायाव—का भी उल्लेख है (३ ७. १७६, ३२०)।

कई विद्वानों के अनुसार हनुमान कृषि सम्बन्धी एक देवता थे जो सभवत वर्षाकाल मे उत्पन्न हुए थे और वायु के अधिष्ठाता थे। इसीलिए वैदिक मन्त्रों मे उन्हे मरुत् देवता के रूप मे स्मरण किया गया है। इसीलिए वायु पुत्र होने के कारण, ये कामरूपधर (आकाशगामी) है। आठवी शताब्दी तक हनुमान जी रुद्रावतार माने जाने लगे एव इनके ब्रह्मचर्य पर जोर दिया जाने लगा। वाद में महावीर हनुमान का सम्बन्ध प्राचीन यक्षपूजा (वीरपूजा) के साथ जुड गया एव वल एव वीर्य के देवता के नाते इनकी लोकप्रियता एव उपासना व्यापक होती गई। आनन्द रामायण के अनुसार तो पृथ्वी के सभी वीर हनुमान के अवतार हैं—

'ये ये वीरास्त्वत्र भूम्या वायुपुत्रा शरूपिण '

इस प्रकार भारतीय साहित्य के इस उज्ज्वल चरित्र को विभिन्न धर्मावलम्बियो ने अपनी धार्मिक मान्यताओं के आधार भूमियो से इसे देखा परखा और आँका है। जहाँ वाल्मीकि रामायण मे शौर्य, चातुर्य, वल, धैर्य, पाण्डित्य, नीति एव पराक्रम आदि दैवी गुणो का आलय कहा गया है—

शौर्य, दाक्ष्य, वल, धैर्यं, प्राज्ञता, नय साधनम्।
विक्रमश्च, प्रभावश्च हनुमति कृता लया ॥
(व रा उ. ३५ ३)

वहाँ उन्हे विनम्रता, निरभिमानता, दीनता, वाणी की मनोहारिता आदि सत्त्वगुणो से विभूषित भी किया गया है। इस प्रकार भारतीय महाकाव्यों मे रामायण, महाभारत के अतिरिक्त पद्मपुराण, नारदपुराण, शिवपुराण, ब्रह्माण्डपुराण तथा रामचरितमानस मे हनुमान के चारु चरित्र का सुन्दर निरूपण किया गया है।

जैन धर्म ग्रन्थ पद्मपुराण के आधार भूमि पर लिखा गया कवि ब्रह्मराय जी का 'वज्राङ्गवली हनुमान', एक सुन्दर चरित काव्य है। इस मे हनुमान के सम्पूर्ण विराट व्यक्तित्व को ही नही उनकी उज्जवल वश परम्परा और पूर्वजो की जीवन कथा को भी विवेचित किया है। वे कुलीन वानरवशी धीरोदात्त नायक है। न्याय, नीति, धर्म, दर्शन के आख्याता और सुख शान्ति के प्रदाता है। आपका वल, पराक्रम और तेज आश्चर्यमयी घटनाओ से पूर्ण है और चरित्र सर्वांग से ध्येय, शिक्षणीय तथा अनुकरणीय है। उक्त ग्रन्थ वर्णनात्मक है। कथा इसकी पौराणिक है और विभिन्न प्रकरणो मे विभाजित है। कही कही-असम्वद्ध घटनाओं का भी वर्णन है किन्तु अनेक वस्तुओ परिस्थितियो और भावो के सक्षिप्त एव स्वाभाविक वर्णन सहज ही सराहनीय है। उक्त काव्यग्रन्थ मे निरूपित प्रकृत-चित्रण और वैराग्य प्रकरण वहुत सुन्दर वन पडे है।

भाषा ब्रज है। ग्रन्थ मे यूँ तो सभी रसो का सम्यक् निरूपण हुआ है, किन्तु वीर, शृगार और शान्ति रस (भक्ति रस) की प्रधानता है। परम्परा के अनुसार नगर, वन, पर्वत, वाटिका ऋतु, विवाह, युद्ध, सयोग, वियोग आदि के उत्कृष्ट वर्णन और हिमालय, महेन्द्रपुर तथा मानसरोवर आदि के मनोहारी दृश्य अत्यधिक मोहक बन पड़े है। इसका उद्देश्य चतुर्वर्ग मे से जैन

धर्म-दर्शन अथवा लोकधर्म का प्रतिपादन ही है। उक्त ग्रन्थ प्राचीन है (१६१६) अतएव इसको उसी काल की काव्य-कला के मापदण्ड पर नापना उचित होगा। ग्रन्थकार ने जिस भक्ति भावना से प्रेरित होकर इस धर्म ग्रथ का प्रणयन किया है यदि उसी भूमि पर उतरकर विज्ञ पाठक पठन-पाठन करेगे तो उन्हे उस अलौकिक परमानन्द का आभास अवश्य होगा, जिस उद्देश्य से इसकी रचना हुई है। विश्वास है, धर्म प्राण प्रेमियों के बीच कवि ब्रह्मराय जी का यह ग्रन्थ विशेष श्रद्धा का अधिकारी होगा।

प्रस्तुत ग्रन्थ को प्रकाश मे लाने का सारा श्रेय पडित कमल-कुमार जी को है जो अध्ययनशील खोजी प्रवृत्ति के पारखी पडित हैं। साथ ही कविवर फूलचन्द जी 'पुष्पेन्दु' के परिश्रम की भी प्रशसा कहे विना न रहूँगा जो भाषाविद् और साहित्य रसिक ही नही 'मिशन स्प्रिट' से कार्य करने वाले विद्वान् हैं। ये दोनो विद्वान साधुवाद के अधिकारी हैं जिन्होने मुझे कुछ कहने के लिए सभी पाठको के सामने ला खडा किया। प्रस्तुत काव्य ग्रन्थ अपने पाठको के हाथो मे देकर मैं निश्चित हूँ। मुझे विश्वास है, जैन-धर्म के स्वीकृत सिद्धान्तो के आधार पर निर्मित यह ग्रन्थ पाठक प्रेमियो मे एक नई प्रेरणा और शक्ति देने मे समर्थ होगा —

'ज्योति· शूर पुरस्कृधि'

(हे वीर ! आगे हमे ज्योति प्रदान करो)

—चारुचन्द्र द्विवेदी

६, जुलाई १९७३

प्रवक्ता, हिन्दी-विभाग

कला एव वाणिज्य महाविद्यालय,

खुरई, सागर (म० प्र०)

प्रस्तुत परिचय 'आत्मायन' से लिया गया है। आत्म-कथा को ही मेरी श्रद्धा व निष्ठा आत्मायन कहती है। यह आदर्श पवित्र-आत्म-कथा स्वय शीर्षक नायक द्वारा लगभग तीन सौ पृष्ठों मे लिखी गई है। अपने जीवन भर की ज्ञानानुभूतियाँ उन्होने डायरियो और वहियो मे अभिव्यक्त की है, क्योंकि व्यर्थ की वाचालता से वे निरन्तर वचते थे—दूर रहते थे।

वस्तुत उनके जीवन का प्रत्येक क्षण सच्चे देव, शास्त्र, गुरुओ के चरणो मे समर्पित था। उदासीनता व्रत सयम-प्रतिमा आदि यदि उनके क्रमिक जीवन-सोपान थे तो समाधि मरण उनकी मजिल। इस पुनीत मजिल पर उन्होंने २४ नवम्बर सन् १९७२ को सफलता पूर्वक पदार्पण किया। एक सत का मरण महोत्सव जिस धूमधाम और उल्लास के पावन वातावरण मे निष्पन्न होना चाहिये वह सव खुरई नगर की जैना-जैन

जनता द्वारा सादर अभिनन्दित हुआ।

उनकी मानव-पर्याय के प्रारम्भिक २५ वर्ष छोड दीजिये शेप ४७ वर्षो का प्रत्येक क्षण किस प्रकार व्यतीत हुआ ? उदाहरण के लिये उसकी एक झलक उन्ही की डायरी के पन्नो मे से .—

माघ कृ० १० वुध ६८ दि० २४-१-६८ खुरई

प्रात ४ वजे जागरण। मेरी भावना, सामायिक-पाठ, सूत्र पाठ सग्रह, कल्याणालोचना, वारह भावना, प्रतिक्रमण, भक्ति। ६ वजे प्रात. स्नान। वडकुल जिन मन्दिर मे अभिषेक-वन्दन-पूजन-स्वाध्याय। मलैया जिन मन्दिर मे भी तथावत्। नवीन एव प्राचीन दि०जैन मन्दिरो मे भी क्रमश उपरोक्त पुनरावृत्ति। साढे दस वजे घर वापिस। शुद्धि के उपरान्त १२ वजे भोजन तदुपरान्त ढाई वजे तक सामायिक। साढे तीन वजे तक स्वाध्याय करके उसे कापी मे दर्ज किया। पाँच वजे सायँकाल प्रतिक्रमण। ६ वजे से साढे नौ वजे तक नये मदिर जी मे क्रमशः सन्ध्या-सामायिक-शास्त्र-श्रवण। घर वापिसी रात्रि १० वजे। तदन्तर डायरी लेखन। रात्रि ११ वजे शयन। समाप्त।
ॐ शान्ति.। ॐ शान्ति। ॐ शान्ति।

उनकी यही समय सारिणी थी। नर-भव की सार्थक सिद्धि के लिये वे आजीवन निरन्तर जागरूक और सचेष्ट रहे। नैतिकता-मानवता-धार्मिकता एव आत्मिकता का क्रम न केवल उनकी दार्शनिकता मे ही समाया रहा वल्कि पूर्ण रूपेण प्रतिक्षण उनके व्यवहारो मे भी यथावत्प्रयुक्त होता रहा।

संत समागम एव मुनि भक्ति के लिये तो ये सव कुछ करने को तत्पर रहते थे। क्योकि मुनिधर्म को ही इन्होने मानवता का उत्कृष्ट आदर्श मानकर अपना लक्ष्य विन्दु केन्द्रित किया था। यही कारण है कि इन्होने अपने युग के यावत् दि० जैन

मुनियो के दर्शन-वदना-वैयावृत्य करके उनके सक्षिप्त जीवन चरित्र प्रवचनो सहित अपनी डायरियो मे लिपिवद्ध किये हैं। खुरई नगर के स्थानीय चातुर्मासो के दैनिक विस्तृत लेखाङ्कन मे पृष्ठो के पृष्ठ रगे पडे है। इनमे से सन् १९६३ मे सम्पन्न पूज्य श्री १०८ धर्मसागर जी महाराज का ससघ चातुर्मास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है क्योकि इन्हे ही श्री वालचन्द्र जी ने अपनी ७ वी प्रतिमा ग्रहण का दीक्षा गुरु स्वीकार किया था। इसके पूर्व वे दूसरी प्रतिमा धारण किये हुए थे। वीच की प्रतिमाओं के पथ पर तो अभ्यास रूप से वे क्रमश अग्रगामी थे ही। सन् १९५१ मे सम्पन्न पूज्य मुनि १०८ श्री समन्तभद्र जी महाराज (दक्षिण) के खुरई चातुर्मास से भी ये नितान्त प्रभावित थे।

असल मे इनके जीवन का मोड सन् १९३१ मे सम्पन्न श्री १०८ सूर्यसागर जी महाराज के ससघ खुरई चातुर्मास से तथा पूज्य श्री शान्तिसागर जी छाणी के दर्शन से प्रारम्भ हुआ। तभी से उन्होने अपने पूर्व कुसस्कारो को तिलाञ्जली देकर अपने भावी अमूल्य जीवन को सयम-पथ पर आगे वढाया। तभी गुरहा वश भूपण श्री १०५ ऐलक विशाल कीर्ति जी महाराज के ब्रह्मचारी दीक्षा प्रसंग ने इन्हे सवसे अधिक प्रेरणा दी और इनका जीवन आत्मावलोकन, आत्मनिरीक्षण, सामायिक प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, वदन, अर्चनादि के स्वर्णिम साँचे मे ढल गया। सर्व श्री १०८ आचार्यवर शान्तिसागर जी, शिवसागर जी, आनन्दसागर जी आदि सभी मुनियो के समागम मे ये यथा समय रह कर लाभान्वित होते रहे। पूज्यवर्णी वजी के जीवन-दर्शन से भी ये अत्यन्त प्रभावित रहे। वैयावृत्य, आहार व्यवस्था और भक्ति द्वारा श्री मुनियो के मूल गुण ग्रहण करने के लिये ये सदैव लालायित रहते थे। पूज्य आचार्य श्री शान्ति सागर जी महाराज के अन्तिम समाधिमरण सदेश का पाठ तो

ये नित्य ही करते थे । अस्तु

भारत के सभी छोटे बडे तीर्थों की वदनाएँ इन्होने सपरिवार तथा एकाकी बीसो बार की हैं। पच कल्याणक प्रतिष्ठा मेले, चातुर्मास समारोह, शिविर आदि कदाचित् ही कभी कोई छूटे हो। इन सब का विस्तृत वर्णन उनकी डायरियों मे भरा पड़ा है। एक २ विद्वानो के प्रवचनो के साराश कापियो मे लिपिबद्ध हैं। नगर के प्राय सभी धर्मानुरागी बन्धुओं और विद्वानो के शुभ नाम श्रद्धापूर्वक लिखे गये हैं। देश के समस्त युगीन नेता श्री विनोवा भावे आदि के सक्षिप्त परिचय लिखकर तथा तत्कालीन परिस्थितियो का चित्रण कर इतिहास की ओर इन्होने अपनी रुचि प्रकट की है। अपनी लेखनी द्वारा उन्होंने जीव मात्र के साथ २ परिचय मे आने वाले सभी सज्जनो के नाम लिख-लिख कर बार २ क्षमा याचना की है।

जीवन के प्रारम्भिक पृष्ठो मे इन्होने अपना जन्म स्थान डुगासरा (जिला सागर), जन्म काल सन् १९०० ई०, पूज्य पितामह श्री गिरधारीलाल जी, पूज्य पितु श्री गुलावचद जी निरूपित किये हैं। प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षाओं के स्थान क्रमशः गढाकोटा, सागर तथा खुरई रहे हैं। लौकिक शिक्षा का अत मैट्रिक परीक्षा की अनुत्तीर्णता मे होता है क्योकि तभी ये सं० ७८ मे पितृविहीन होकर विक्षिप्त से हो गये थे। आर्थिक विपन्नता और कठोर-दुस्तर उत्तरदायित्वो ने उन्हे किंकर्त्तव्य विमूढ सा वना दिया था। वे तो इनकी पूज्य मातेश्वरी ही थी जिन्होने आजीवन परम स्वावलम्बिनी रह कर स्वय आजीविकोपार्जन करके इनकी गृहस्थी को यथावत् टिकाये रखा। पुण्योदय से चरित्र नायक द्वारा अगीकृत वैद्यक व्यवसाय चमका, सामाजिक प्रतिष्ठा बढी और फलस्वरूप धर्म की प्रगाढ रुचि जागृत हुई। सतति प्राप्ति मे यद्यपि दस की सख्या इन्होंने

गिनाई तथापि केवल पॉच ही इस लोक मे विद्यमान है।

उपरान्त के पृष्ठो मे जगह २ इन्होने अपनी सहधर्मिणी श्री लाडली जी की निरक्षरता, सरलता, और मद कषाय की भूरि-भूरि प्रशसा की हैं। इनके क्षीण शरीर ने सदैव ही इनकी आत्मा के साथ धोखा दिया। आत्मा ने भी उसकी घोर उपेक्षा की। उसे कभी भी भोगासक्ति के लिये प्रयुक्त नही किया गया वल्कि व्रत-सयम उपवासादिक द्वारा कृश करके उसकी वाह्य असुन्दरता को आन्तरिक-सौन्दर्य के वल से तेजस्विता मे परिणत कर दिया। शीत और वात जन्य वीमारियाँ तो वर्ष मे आठ २ महीने इन्हे सयम पथ से डगमगाने के लिये आती रही परन्तु मरते दम तक भी इनकी चैत्य-वदना, सामायिक प्रतिक्रमण आदि दैनिक क्रम छूटा नही। एक रोग तो इतना जवरदस्त हठी और दुखदाई था कि सन् ३७ से पीछे पडा तो लगातार सन् ६७ तक छाया की भाति निरन्तर साथ ही रहा आया। उसकी तीव्र वेदना से देखने वालो के हृदय भी प्रकम्पित हो जाते थे परन्तु भुक्त भोगी श्री वालचन्द्र जी भेद-ज्ञान के वल से ही सदैव उस परीषह को जीत कर उसकी घोर उपेक्षा करते रहे।

औपधोपचार न तो इस रोग का कही हो सकता था और न करवाया ही इसलिये कि भारत के सभी डाक्टरों ने इसे लाइलाज घोषित कर दिया था। वह रोग था जवडे की नसों में वायु विकार का भर जाना। इसकी तीव्र वेदना ने इन्हे कई वार विक्षिप्त भी कर दिया परन्तु सयम वल ने उसे चुनौती जो दे रखी थी। अन्ततोगत्वा ४० वर्ष के वाद आहार-विहार के इसी सयम ने उसे धराशायी कर ही दिया।

डायरी के ये पृष्ठ इतने महत्त्वपूर्ण नही जितने कि चारो अनुयोगो के आधार पर उनकी स्मृति और धारणा द्वारा लिखे

आत्मानुभव और आत्मोत्थान के सैकडों पृष्ठ हैं। सारा जैनागम अध्यात्म के दर्शन सहित उनमें भरा हुआ है।

साराशत: इनके संयम-मार्ग ने जहा इनके नोकर्म जन्य शरीरादिक की अस्वस्थता पर विजय पाई वहा यथा सभव द्रव्य कर्मों के विपाक को रस हीन किया तथा भाव कर्मों के उदय को स्वभाव लीन किया। सयम मार्ग ने ही उनकी कीर्ति और प्रतिष्ठा को "वालचद्र" की धवल ज्योत्स्ना के समान आलोकित कर दिया। अन्तिम छ वर्षों से तो इन्होने अपना सारा समय सम्यक् ज्ञान दान मे न्यौछावर कर दिया। मदिरों मे जाकर जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की प्रौढ महिला कक्षाओं को ये स्वय लेते थे। उन्ही के चरणो का अनुकरण करते हुए उनके पुत्र द्वय श्री फूलचद जी पुष्पेन्दु तथा वैद्य वाबूलाल जी भी यहाँ वाल वीतराग विज्ञान पाठशालाओं मे अपना प्रारम्भिक ज्ञान-दान देते हुए उनकी स्मृति को अक्षुण्ण रखे हुये हैं। उनके द्वारा सौपी हुई लिखित रत्नत्रय निधि को ये युगल वन्धु अक्षुण्ण सुरक्षित रखते हुए कामना करते हैं कि उनका भी भावी जीवन सयम मार्ग पर नही, तो कम से कम ज्ञान मार्ग पर ही चलता रहे।

श्री वालचद जी वैद्य सम्यक्त्वी थे या नही यह या तो केवली सर्वज्ञ जानते हो अथवा स्वय चरित नायक ही, परन्तु लोक जव उन्हे व्रती श्रावक के नाम से पुकार रहा है तो मेरी श्रद्धा उन्हे सम्यक्त्वी क्यो न माने ? अस्तु .—

पूज्य जनक श्री की स्मृति मे "वजाग्रवली हनुमान" के प्रारम्भिक पृष्ठों मे श्री वालचद जी का सक्षिप्त परिचय इसलिये प्रकाशित कराया गया है कि उन्होने ही मुझे इसे लिखने की प्रेरणा दी थी। और इसलिए यह ग्रंथ उन्हे ही समर्पित है। इति शुभम्।

प० कमल कुमार जैन शास्त्री

सती अजना अशुभोदयवश, वीहडवन मे आई।
दर्शन कर मुनि अमित गती के, मन मे धीरज लाई ॥
चारण मुनि ने दिव्य ज्ञान से, भूत-भविष्य वताया।
हो बलशाली पुत्र तुम्हारे, शुभ सन्देश सुनाया ॥
मुनि विहार कर गये गगन मे, यहा सिह इक आया।
अष्टापद बन 'मणीचूल' ने [के हरि तुरत भगाया ॥
जन्म हुआ श्री हनूमान का, अजनि हर्ष मनाया।
देवों ने भी मधुर स्वरो से मगल गीत सुनाया ॥

श्री हनुमन्ताष्टक स्तोत्रम्

(१)

स स स सिद्धनाथ, प्रणमति चरण, वायु-पुत्र च रुद्र ।
त त त दिव्यरूप, मह मह हसित, गर्जित मेघनाद ॥
त त त त्रिलोकनाथ, तपति दिनकर, त त्रिनेत्र-स्वरूप ।
र र र रामदूत, रणरग रमित, रावण छेदनाथ ॥

(२)

व व व वालरूप, प्रोत्थित गिरिवर, ज्ञापित सूर्य-बिम्ब ।
म म म मन्त्रसिद्ध, शुभकुलतिलक, मर्दन शाकिनिना ॥
हूँ हूँ हूँ हूँकार वीज, हनति हनुमतिं, हन्यत शत्रु-सैन्य ।
द्र द्र द्र दीर्घरूप, दुर्धर शिखर, घातित मेघनाद ॥

(३)

ॐ ॐ ॐ उच्चाटित, त सकल भुवतल, योगिनी वृन्दरूप ।
क्ष क्ष क्ष क्षिप्ररूप, क्रमत्युधिपर, ज्वालित लङ्क-कोट ॥
छ छ छ छिन्दि तत्त्व, दनुरुह कुलक, मुञ्चित बुम्वकार ।
किं किं किं कालदृष्ट, जल-निधि तरण, राक्षस देवदैत्य ॥

(४)

वृ वृ वृ वृद्धि सृष्ट, त्रिभुवन रचित, दैत्य त सर्वभूत ।
देवाना क्षत्रि मूर्ति, त्रिपणि भुवधरो, पावक वायु रूप ॥
त्व त्व त्व वेदतत्त्व, तुहि तुहि रटित, सार्थ वाण स्वरूप ।
च च च चरम शरीर, अतुलित वलवीर, वज्राङ्ग विदित ॥

वज्रांगबली वीर हनुमन्
मन्त्र-स्तोत्रम्

ॐ ह्ली नमो भगवते वज्राङ्गबली वीर हनुमते प्रलयकाला-नलप्रभा-प्रज्ज्वलनाय, प्रताप वज्र देहाय, अञ्जनीगर्भसभूताय-प्रकट विक्रमवीर दैत्यदानवयक्ष रक्षोगण ग्रहबधनाय, भूतग्रह बधनाय, प्रेतग्रह बधनाय, पिशाचग्रहबधनाय-शाकिनी डाकिनी ग्रह बधनाय, काकिनीग्रहबधनाय, ब्रह्मग्रह बधनाय, ब्रह्मराक्षसग्रह बधनाय, चौरग्रहबधनाय, मारीग्रह बधनाय, एहि एहि आगच्छ आगच्छ आवेशय आवेशय मम हृदये प्रवेशय प्रवेशय स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर-सत्य कथय व्याघ्रमुखबधन, सर्पमुखबधन-राजमुख बधन, नारीमुख बधन, सभामुख बधन, शत्रुमुखबधन, सर्वमुख बधन-लकाप्रासाद भजन, अमुक (नाम) मे वशमानय, क्ली क्ली क्ली श्री श्री राजान वशमानय। श्री ह्ली क्ली स्त्रीन् आकर्षयश शत्रून मर्दय मर्दय मारय मारय चूर्णय चूर्णय खे खे श्री रामचन्द्राज्ञया मम कार्यसिद्धि कुरु कुरु ॐ ह्लाँ ह्ली ह्लूँ ह्लैं ह्लौ ह्ल फट् स्वाहा। विचित्र वीर हनुमन् मम सर्वशत्रून भस्मी-भूतानि कुरु कुरु हन हन हुँ फट् स्वाहा।

एकादश शतवारे जपित्वा सर्वशत्रून् वशमानयेति-नान्यथा ॥

राशि वाला है कर्क राशि पचम मे विद्यमान है। लग्न को नववी दृष्टि से गुरु से शुभता दे रहे है।

जिन मनुष्यों के जन्म-लग्न मे उच्च के शुक्र हो और उच्च के गुरु से देखे जाते हो—उनका शरीर वज्र के समान अत्यन्त पुष्ट-वलिष्ठ और मजबूत होता है। वे अपने शरीर से विविध अद्‌भुत चमत्कार दिखाने वाले, अनुपम सुन्दर शरीर को धारण करने वाले, आकर्षण युक्त कामदेव को जीतने वाले परम सौभाग्य-शाली होते हैं।

केन्द्र स्थान मे शुक्र उच्च राशि मे या स्वराशि मे अथवा मूल त्रिकोण राशि मे हो तो मालव्य योग बनता है।

चरित नायक की इस जन्म कुडली मे शुक्र तृतीय स्थान का स्वामी और अष्टम स्थान का स्वामी होकर लग्न मे उच्च का है, जो अत्यन्त उच्च कोटि के पराक्रम के कार्य करवाने के लिये तथा विदेशो की यात्रा कराने के लिये योग बनाता है तथा शरीर द्वारा उच्चतम कठिन कार्य सम्पन्न कराने से मान-प्रतिष्ठा दिलाकर बैजयन्ती माला धारण कराता है।

शुक्र भी एक ऐसे आचार्य थे जिन्हे वहुत सी गुप्त विद्याएँ सिद्ध थी। यहा भी (चरित नायक श्री हनुमान जी के जन्म लग्न के) गुप्त स्थान के स्वामी शुक्र है और लग्न मे है अत इनके शरीरको भी वहुत सी गुप्त विद्याए सिद्ध होनी चाहिये।

शुक्र तो उच्चता को प्राप्त है ही लेकिन शुक्र ग्रह मे और भी शक्तिया काम कर रही है यह ध्यान देने योग्य है।

मेष राशि मे सूर्य है, वृश्चिक राशि मे केतू है ये दोनो उच्च स्थानी है। मेष और वृश्चिक राशि का स्वामी मगल है। मगल मे सूर्य और केतू ग्रह के गुण विद्यमान है मगल वृष राशि मे राहु सहित है। वृष राशि का स्वामी शुक्र है। शुक्र मे मंगल,

राहु, सूर्य और केतू ग्रह के गुण हैं।

शुक्र उच्च का होकर सूर्य की भाँति अद्भुत पराक्रम रूपी प्रकाश को फैलाये और अकस्मात् ही विजय लाभ हो जाये—ऐसा शुभ सकेत शुक्र ग्रह दे रहा है।

बुध ग्रह नीच राशि मे लग्न मे स्थित है। यहा श्री हनुमान जी की जन्म कुण्डली मे बुध ग्रह का नीचत्व भग हो रहा है। नीचत्व ग्रह की नीच राशि का स्वामी लग्न से—चन्द्रलग्न से केन्द्र त्रिकोण मे हो, अपनी राशि मे गये नीच ग्रह को देखता हो तो नीच योग (निम्न श्रेणी का योग) भग होकर उच्च फल प्राप्त होता है।

बुध ग्रह चतुर्थेश सप्तमेश भी है। चतुर्थ से—चतुर्थ सुख से भी परम सुख को प्राप्त कराने के लिये बुध ग्रह अपने मित्र उच्च के शुक्र से योग वना रहा है और अपनी उच्च राशि ६ (कन्या) को सप्तम दृष्टि से देख रहा है।

शनि ग्यारहवे और वारहवे स्थान का स्वामी है। जो अपने मित्रो के साथ बैठकर जातक के शरीर को दु ख उठाने के लिये सकेत कर रहा है। लग्न मे बुध, शुक्र, शनि ग्रह है। इन तीनो मे बुध ग्रह की गति अति तीव्र है। उससे कम शुक्र की और शुक्र से कम गति शनि ग्रह की है। बुध ने अपने गुण शुक्र को, शुक्र और बुध ने अपने गुण शनि को दे दिये अतएव शनि ग्रह की लग्न मे प्रधानता हो गई। शनि मे सूर्य, मंगल, शुक्र बुध राहु और केतू ग्रहो के और स्वय के गुण विद्यमान हैं। मीन राशि मे होने से उसने समस्त गुणों को लग्नेश गुरु को प्रदान कर दिये। कर्क राशि गत गुरु ने अपने गुण और सूर्य मगल बुध शुक्र शनि राहु केतू के गुण चन्द्र ग्रह को दे दिये अस्तु अव चन्द्र ग्रह मकर राशि का है। मकर राशि का स्वामी शनि है।

चन्द्र ने अपने गुण और समस्त ग्रहों के गुण शनि को प्रदान कर दिये। शनिग्रह चन्द्र अधिष्ठित राशि का स्वामी है अत. इस कारण से शनिग्रह और भी अधिक बलवान हो रहा है। लग्न मे शनि ग्रह बैठकर कह रहा है कि मैं स्वय अत्यन्त दुखों का कारण हूँ इसलिये जातक के शरीर को विविध विपत्तियों और महान कष्टों से सघर्ष करना पडेगा !

वास्तव मे यही एक ऐसा ग्रह है जो मनुष्यो को अधिक कष्ट देता है और यदि उसमे शुभता आजाये तो जातक को कष्ट देकर उसकी अग्नि परीक्षा कराकर स्वर्ण को विशुद्ध कुन्दन वनाकर उसको मुक्ति प्राप्ति का सन्मार्ग दर्शन कराता हुआ परमपद अर्थात् सर्वोच्च पद पर पहुँचा देता है।

मैं शनि जातक (चरित नायक श्री हनुमान जी) के लग्न मे शुभ होकर स्थित हू और मुझ पर गुरु का सकेत है कि इस जातक को मुक्ति-पथ का राही बनाना। मेरी दास वृत्ति है इसलिये मैं गुरु की आज्ञा का पालन ही करूँगा। मेरे से तथा लग्न से विजय के स्थान में मगल राहु बैठे है। यह जातक प्रबल शत्रुओ को परास्त कर महान विजय को प्राप्त करने वाला परम वीर जातक होगा।

लग्न से छटवा स्थान शत्रु स्थान होता है। छटवे स्थान का स्वामी सूर्य है, वह सूर्य उच्च का है अत ऐसे जातक (श्री हनुमानजी) के शत्रु भी उच्च के होगे उनका प्रकाश भूमण्डल पर छाया हुआ होगा परन्तु वह शत्रु शनि शुक्र मगल राहु के मध्य मे आकर परास्त हो जायगा और अन्त मे कर्म-शत्रुओ पर भी विजय लाभ करके परम-गति को महा निर्वाण को प्राप्त होगे। जातक का लग्न, पचम, और नवम् का त्रिकोण जल तत्त्व राशियो का है, पचम मे कर्क राशि गत गुरु है। विद्या के कारक गुरु

होते है । ऐसे जातक को जल सबधी विद्याओ मे दक्ष होना चाहिये । लग्नेश भी गुरु स्वय शरीर का स्वामी जल विद्या मे दक्ष होने का सकेत दे रहा है । भाग्य स्थान मे बैठकर केतू जल सम्वन्धी यात्रा मे भाग्य मे कष्ट उठाने का सकेत देता है । केतू की लग्न और लग्नेश पर दृष्टि होने से शरीर को जल मे वडी कठिनाइयो का सामना करना पडा । गुरु की पचम दृष्टि केतू पर होने से और मगल की दृष्टि केतु पर होने से जल मे भी विजय प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाये तो इसमे कोई आश्चर्य की वात नही । उच्च के गुरु को चन्द्र पूर्ण दृष्टि से देख रहा है जो 'गज-केशरी' योग वना रहा है । इसका फलितार्थ है हाथियो के झुडो पर जैसे एक सिंहविजय प्राप्त करता है । इसी प्रकार यह जातक कर्म रूपी गज शत्रुओ पर विजय प्राप्त करके मोक्ष को प्राप्त होगा ।

जनता तथा जनता के मन का स्वामी बुध लग्न मे बैठा है । वुध वाणी का कारक है । वुध वुद्धि का कारक है—प्रेम का सूचक है ऐसे बुध ने शरीर के साथ सम्पर्क कर लिया उनकी वाणी के साथ जनता रहती थी । जनता के लिये जनता की धार्मिक भावनाये वताने के लिये—विवेकशील वनाने के लिये अपने शरीर को जनता के समीप लाकर जनता से सम्पर्क स्थापित कर सत्यता की खोज करके अपने शरीर को ही सद्गति प्राप्त नही कराई वरन प्राणिमात्र को भी मोक्ष मार्ग पर चलने को प्रेरित किया उनका पथ प्रदर्शन किया यह था वुध का वुद्धि फल तथा आश्चर्य जनक कार्य ।

•

श्री मुनिसुव्रतनाथाय नमः

वज्रांगबली-हनुमान

अभिनन्दन

(१)

स्वामी सुव्रतनाथ जिनन्द, सुमरत होय सिद्धि-आनन्द ।
नासै पाप भली मति होय, नाय शीस जोरौ कर दोय ।।

(२)

आदिनाथ जिन सेवा करौं, मन-वच-काय चित्त उर धरौ ।
अजितनाथ वन्दौ जगसार, लहों ज्ञान पाऊँ शिव-द्वार ।।

(३)

संभवनाथ जपौ मन लाय, बाढै धर्म-कर्म क्षय जाय ।
नाउँ शीश अभिनन्दन देव, सुर-नर-मुनि करते पुनि सेव ।।

(४)

स्वामी सुमति देहु मति मोहि, रात-दिवस मन राखों तोहि ।
पद्मप्रभु की सेवा करौ, भव-सागर से सत्वर तरौ ।।

(५)

पुनि नमहूं जिनदेव सुपास, नाम लेत सब पूरे आस ।
चन्द्रप्रभु जिन गुनन निधान, सुमरत होंय पाप क्षय मान ।।

(६)

उज्ज्वल पहुपदन्त जिननाथ, नमौं शीर्ष धरि मस्तक हाथ ।
जिनवर शीतल वन्दौ पाँव, देहु स्वामि शिवपुर को ठाँव ।।

(७)

जिन श्रेयांस गुण जग विख्यात, स्वामी करहु करम की घात ।
वासुपूज्य गुण कहे न जाँय, शोभै लाल-वर्ण तसु काय ।।

(८)

विमलनाथ के सेऊँ पाद, निर्मल मति को देहु प्रसाद ।
जय जय स्वामी नाथ अनत, काटे करम गये शिव-पथ ।।

(९)

धरमनाथ वदहुँ निर्भ्रान्ति, जासो पाप होय सव शान्त ।
शान्ति करण वन्दहुँ जिन शान्ति, सोहै देह कनक तसु कान्ति ।।

(१०)

जय जय स्वामी जिनवर कुथ, भूले भव्य दिखावन पथ ।
चरन अरह जिनवर के गहौं, जाते ज्ञान-रतन मैं लहौं ।।

(११)

मल्लिनाथ सेऊँ तस पाद, मार्‍यो काम कियो जयनाद ।
मुनिसुव्रत को करहुँ वखान, जाय क्रोध माया अरु मान ।।

(१२)

जपौं देव नमि कर उल्लास, अशुभ-करम की काटो फाँस ।
नेमि स्वामि वन्दौ निर्ग्रन्थ, तज तिरिया पायो शिव-पथ ॥

(१३)

पार्श्वनाथ का वन्दन करूँ, राग-द्वेष-पातक सब हरूँ ।
वीरनाथ वदौं जग सार, राख्यौ धरम श्रेष्ठ व्यौहार ॥

(१४)

जिन चौबीस नमहुँ जगदीश, वन्दौ गणधर परम मुनीश ।
द्वीप अढाई मध्य मुनिन्द, ते सब वन्दौ करि आनन्द ॥

(१५)

सरस्वती को करके ध्यान, पाऊँ निर्मल सम्यक् ज्ञान ।
मैं मूरख अति अपढ अजान, पडित जन मो विनती मान ॥

(१६)

अक्षर-पद नहिं पायो भेद, लहौ न अर्थ भयो अति खेद ।
लघु जानो नहिं दीरघ मात्र, कथा कहूँ मैं "हनू" सुपात्र ॥

(१७)

स्वामिन् मो मत करौ विचार, उपजै बुद्धि होय विस्तार ।
तुम प्रसाद कर पक्ष न गहौ, "हनू" कथा वरनन कूं कहौ ॥

(१८)

बरसै मेघ अधिक असरार, सरवर ऊपर मूसलधार ।
वारि सरोवर बूंद न रहे, मेघ दोष काहे को कहे ॥

(१९)

श्री गुरु तो हैं विधि दातार, भूले मारग लावन हार ।
उन विन फुरै न ज्ञान-विवेक, करो भले ही प्रयत्न अनेक ॥

(२०)

गृद्ध पिच्छ मुनि वन्दौं येह, जाको सुर ले गये विदेह ।
लाज छोडि कर वारम्बार, हनू कथा को कर विस्तार ॥

पवन-परिचय

(२१)

जम्बु द्वीप जानै संसार, ताकी शोभा लहे न पार ।
नामे भरत क्षेत्र अति भलो, योजन पंच छव्वीसौ कलो ॥

(२२)

मेरु सुदर्शन योजन लाख, गजदन्ती हैं चारों पाख ।
नदी द्रहन की संख्या कहैं, सुर-नर खेचर तहँ सव रहैं ॥

(२३)

मेरु सुदर्शन दक्षिण दिशै, विद्याधर नगरी बहु बसै ।
पुर-पट्टन मन्दिर गढ़ ग्राम, दीर्घ कोट शोभै बहु धाम ॥

(२४)

नदी लाल शोभैं चहुँ पास, तामैं कमल जु करैं विकास ।
कूप-बावडी पोखर झरी, ते दीसै निर्मल जल भरी ॥

(२५)

वन की शोभा अति विस्तार, घडी मुहूरत रच्यौ विचार ।
कैथ, करोंदा, केर, करीर, नीबू, आम, छुहार गभीर ॥

(२६)

साखू-खेर-वाँस के भिडे, साल-सगोना-तेदू खड़े ।
कांकर-धामन-बेर सुचग, खिरनी-खदिर-आम्र-मातग ॥

(२७)

चोच, मोच, नारग, सुरग, एला-श्रीफल और लवग ।
सुन्दर कटहल श्वेत कनेर, मडप चढी दाख की बेल ॥

(२८)

चोल-सुपारी है अति घनी, कृष्ण मिर्च पीपर युत तनी ।
बहु बादाम-आम्र अखरोट, बहुरि जायफल फरै समोट ॥

(२९)

फूलो मरुवो बहुत बसाय, बेल सिहारी चम्पो राय ।
जुही पाडरी अरु सिरफद, चारु-चमेली औ मचकुद ॥

(३०)

मोरछलो कचनार सु-बेल, चन्दन अगर सुवास सु-केर ।
केत केवडो बास सुगध, भ्रमर भ्रमण करते स्वछंद ॥

(३१)

वरनन करत होय विस्तार, दस लख जाति कही कवि भार ।
शोभै विद्याधर को देश, गिरि पर वह पुर बसे अशेष ॥

(३२)

नगर अदितपुर सुन्दर नाम, जैसे शोभित है सुर-धाम ।
राजा राज करै प्रहलाद, धरम ध्यान तहाँ चलें अनाद ॥

(३३)

पालै परजा चालै न्याय, पुण्यवंत पुटभेदन राय ।
केतुमती घर त्रिया सुजान, गुण गभीर रूप की खान ॥

(३४)

पुत्र एक तसु पवनकुमार, धर्मवंत बहु बुद्धि विचार ।
रूपवत कुलवत सुजान, राखै षट् दर्शन को ज्ञान ॥

(३५)

बसै नगर अति अधिक सु-बास, सात कोट घेर्‌यो चहुँ पास ।
खाई निर्मल जल से भरी, ज्यो कैलाश फिरी सुरसरी ॥

(३६)

ऊँचे मन्दिर पौर-पगार, सात खननि ऊपर विस्तार ।
चतुर चितेरे चित्रित थान, जैसे सोहै सुरग-विमान ॥

(३७)

चौपर के कई बनें बजार, बेचे पटुवो मोतिन हार ।
बने अवास उतंग अभग, ऊपर दीखें ध्वजा उतंग ॥

(३८)

मंडप-वेदी सोहै भली, पच वरन रतननि झलमली ।
बहुत चतेरे कियो चतेर, सोहै जेम सुदर्शन मेर ॥

ज्ञानी मुनिवर बैठे घने, शुभ उपयोगी पातक हने ।
करहिं व्रती दशलक्षण धर्म, पालैं श्रावक जन षट् कर्म ।।

(४०)

श्रावक लोग बसैं धनवत, पूजा करैं जाप अरिहंत ।
उत्तरोत्तर पुण्य विकास, ज्यों अहमिन्द्र स्वर्ग-सुखवास ।।

(४१)

विद्वत् मडल पढ़ै पुरान, श्रावक जिनवर पूजैं आन ।
श्री जिनवर की करैं सुभक्ति, देव-शास्त्र-गुरु प्रति अनुरक्ति ।।

(४२)

ठाँव-ठाँव वादित्र बजत, ठाँव-ठाँव माला झूलत ।
ठौर ठौर सिद्धान्तऽरु वेद, पढ़ै पास बूझैं सब भेद ।।

(४३)

घर घर अभ्यागत सत्कार, घर घर पशु पक्षिन सो प्यार ।
घर घर मगल होहि विवाह, घर घर कामिनि करहिं उछाह ।।

(४४)

घर घर बिम्ब प्रतिष्ठा होय, घर घर दान देय सब लोय ।
घर घर श्रावक देय अहार, घर घर सधि-विनय व्यौहार ।।

(४५)

सुख सपति पालै आचार, पुण्य-पाप को करै विचार ।
राजा करै इन्द्र सम भोग, अति सुख पावै परजा लोग ।।

वरण-विमर्श

(४६)

भरत क्षेत्र उत्तम जग जान, मेरु दिशा पर वश बखान ।
ख्वारसेन अति देश महत, नगर 'महेन्द्र' तुल्य विलसत ।।

(४७)

करै राज भूपाल महेन्द्र, जैसे स्वर्ग भोगवै इन्द्र ।
हृदवेगा तसु गृहणी नाम, रूप-कला सुर-सुन्दरि धाम ।।

(४८)

ईकोत्तर शत् पुत्र विशाल, पुत्री एक महा सुकुमाल ।
नाम अजनी सुन्दर तासु, ताकी उपमा दीजै कासु ।।

(४६)

ज्यों सामुद्रिक लक्षण खान, त्यो राजा-गृह अजनि जान ।
हेमाचल उपजी सुरसरी, त्यों नृप-गृह सोहै सुन्दरी ।।

(५०)

रूप-कला-लावण्य-विवेक, अर्थ पुराण अनेकानेक ।
सो व्रत पालहि बहुत विचार, पाप पुण्य जानै व्यौहार ।।

(५१)

चन्द्र-वदन अति नयन विशाल, देखी राजा यौवन बाल ।
मन में अति चिन्तातुर होय, अजनि योग्य मिलै वर कोय ।।

(५२)

मन्त्री वेग बुलाये चार, वर सुन्दरि को करहु विचार ।
वरण योग्य पुत्री अवलोक, उपज्यो मन में चिन्ता शोक ॥

(५३)

देहु ताहि जो होय सुजान, बुद्धिवत सुरगुरू समान ।
पहिलो मन्त्री बोलै येहु, यहु सुन्दरि रावण को देहु ॥

(५४)

विद्या साहस चौदह सिद्धि, भोगत अर्द्ध चक्र की रिद्धि ।
तीन खड धरती को ईश, नर-विद्याधर अवनत शीश ॥

(५५)

विद्याधर भी सग संग फिरै, निशि-वासर ते सेवा करै ।
औरहि थान दीजै अजनी, करै कोप लका को धनी ॥

(५६)

इतनी कह वह चुप ह्वै गयो, सुमति मन्त्रि तब मुखरित भयो ।
रावण योग न येहु कुमारि, सहस अष्ट दश राजा नारि ॥

(५७)

रूप-कला तें सोहै खरी, सब की जेठी मन्दोदरी ।
कन्या हो द्वादश वर्षीय, षोडस वय को है वरणीय ॥

(५८)

रावण वृद्ध अवस्था होय, निंदै लोग हँसै सब कोय ।
रावण बूढो के सग गने, ताकौ देतौ कैसे बने ? ॥

(५९)

मेघनाद दूजे बलवड, व्याहो शत्रु करै शत-खड ।
इन्द्रजीत है लुहरौ वीर, कुभकरन की सहै न भीर ॥

(६०)

दशमुख-पुत्र भले हैं येहु, दो में जानें ताको देहु ।
सीख हमारी जो हिय धरौ, जो मन भावै सोई करौ ॥

(६१)

मत्री 'सुमति' वात यह क़ह्यो, तब 'तारावन' मत्री बोल्यो ।
इन्द्रजीत दीजे सुन्दरी, मेघनाद चित मानें बुरी ॥

(६२)

दोऊ भाई होय विरुद्ध, दोऊ भिडिहै करिहै युद्ध ।
तब कलक अजनि को होई, बात विचारो सब मिलि कोई ॥

(६३)

मेरी सीख करहु परमान, कनक नगर है सुन्दर थान ।
राय हिरण्य प्रभ को तहँ वास, विद्याधर बहु सेवै तास ॥

(६४)

सुमन नाम ताके सुदरी, जैसे इन्द्र तनी अप्सरी ।
पुत्र एक ताके घर भलो, नाम सुदामिनि सुदर मिलो ॥

(६५)

रूप गुणन में इन्द्र समान, कामदेव को गलियो मान ।
कह्यो हमारौ कीजे येहु, कुँवर सुदामिनि पुत्री देहु ॥

(६६)

तारावन के सुनियो वैन, धुन्यो शीस मीचे द्वय नैन ।
सत्य-वचन बोले तत् छिना, राजा बात सुनो मो मना ॥

(६७)

बरस अठारह गये कुमार, सयम पाले विविध प्रकार ।
अवधिज्ञान धारी मुनि कही, यही बात तुम जानो सही ॥

(६८)

पुरुष बिना जो स्त्री होय, ताको आदर करहि न कोय ।
चक्रवर्ति की पुत्री होय, प्रियतम बिन दुख पावे सोय ॥

(६९)

सत्यजय मन्त्री इम कही, बाकों पुत्री दीजे नही ।
राजा बात सुनो हम तनी, उत्तम कुँवर योग्य अजनी ॥

(७०)

आदितपुर सुन्दर सु-विशाल, करै राज्य प्रहलाद नृपाल ।
रानी केतुमती गृह भली, इन्द्र शची ज्यों जोडी मिली ॥

(७१)

पवनञ्जय तसु बड़ो कुमार, धर्मवत-गुणवंत अपार ।
दिनकर सम सोहै तसु देह, सोलह कला चन्द्रमुख येह ॥

(७२)

पडित अधिक विवेक सुजान, राखै जैन धर्म को मान ।
बहुत बात अब कहिये नही, पवन जोग यह पुत्री सही ॥

(७३)

यह उत्तर सत्यञ्जय दियो, राजा सुन अति हर्षित हियो ।
भली बात मंत्री तुम कही, पुत्री पवनहु दीजे सही ॥

(७४)

बोले तबहिं साथ के लोग, भलो सु-वर यह जोगाजोग ।
पुण्य प्रबल होवे जब घनो, होय सु कारज सज्जन तनो ॥

कैलाश-वंदना

(७५)

राजा बात विचारत सत, तब लों आई ऋतू वसत ।
फूलत फरत भई वनराई, भँवरी सन्मुख सुरभी ल्याई ॥

(७६)

करे शब्द पंक्षी कोकिला, गावै त्रिया गीत शुभ भला ।
रमै पुरुष बहु मास वसत, करै भोग दीसै विहसत ॥

(७७)

बैठे सभा सहित माहेन्द्र, गगन पंथ तहँ देखो इन्द्र ।
सोहे रतन विमान प्रदीप, चले देव नन्दीश्वर द्वीप ॥

(७८)

राजा चित्त विचारे बात, हम पुनि जैं जैं जिनवर जात ।
करै अर्चना श्री जिनराय, बाढै धर्म अशुभ क्षय जाय ॥

(७९)

मानुषोत्र पर्वत बिच ताहि, नर विद्याधर गमन जु नाँहि
राय महेन्द्र सबन सो कहै, नदीश्वर को जानन चहै ॥

(८०)

गढ कैलाश वृहत् स्थान, आदि नाथ पहुँचे निरवान ।
कनक-रतन-हीरन ते खचे, जिन चौवीस जिनालय रचे ॥

(८१)

रत्न बिम्ब सोहैं अति भले, कोटि दिवाकर लोपे थले ।
धनुष पाँच सै ऊँची काय, जिनवर शोभा कही न जाय ॥

(८२)

विद्याधर नर मेले घनें, करें महोत्सव जिनवर तने ।
सबै कहैं शुभ बात विलास, चलो जात मिलि गढ कैलाश ॥

(८३)

रच्यौ विमान रत्न-मणि जडौ, नगर लोग सब बारौ बडौ ।
गगन पथ उड़ि चले विमान, गमन करत नहिं दीखै भान ॥

(८४)

जै जै करत तहाँ सब भये, विद्याधर कैलाशहिं गये ।
मन शुद्ध धरि मस्तक हाथ, भाव भगति वदे जिन नाथ ॥

(८५)

सपरि पहिन पीताम्बर चीर, झारी हाथ लई भर नीर ।
श्री जिनवर पर दीनी धार, जन्म-पाप प्रक्षाले क्षार ॥

(८६)

कुकुम-केशर-चदन गार, वर कपूर मेल्यो सब सार ।
श्री जिन चरनन पूजा करी, अगले भव को थाती धरी ॥

(८७)

राज-भोग शुभ सुरभित वास, शोभा जैसी चन्द्र-प्रकाश ।
जिन-पद आगे धरे पखार, मानो सरवर बाँधी पार ॥

(८८)

सुरभित सुन्दर सुमन मगाय, कमल केतकी वहु महकाय ।
जिनवर चरननि आगे धरैं, पूजा मनो इन्द्र जिमि करैं ॥

(८९)

घेवर फैनी सेव छुहार, लाडू गूजा सुवरण थार ।
जिनवर-पग आगे विस्तरैं, मुकति-पथ हित सवर करैं ॥

(९०)

प्रजुलित घृत के दीपक जये, सुवरण थार हाथ धरि लये ।
जिनवर आगे धरे उतार, मानो करम दिये सब जार ॥

(९१)

अगर-तगर कृष्णागरु धूप, चंदन मलयागिरी अनूप ।
जिनवर चरणन आगे खेय, एक ध्यान ध्याता अरु ध्येय ॥

(९२)

शीस हाथ धर वदौ देव, गुणानुवाद पढियो बहु भेव ।
जय स्वामी तुम जग उजयार, तुम संसार उतारन हार ॥

(९३)

भगति वंदना तेरी करौं, मुक्ति रमणि को सत्वर वरौं ।
नित उठि करहुँ तुम्हारी सेव, तुमको पूजें सुरपति देव ।।

(९४)

जिनवर मोपरि करहु सनेह, कुगति कुशास्त्र निवारो येह ।
और न कछु मागहुँ तुम पास, देहु स्वामि मुझ मोक्ष निवास ।।

(९५)

कर वदन चाले खग जान, कनक-शिला देखी शुभ थान ।
देखे विद्याधर शुभ नाम, राय महेन्द्र लियो विश्राम ।।

(९६)

धर्म तत्त्व की चर्चा करै, धर्म-पुराण अर्थ उच्चरै ।
वन्दे देव भयो आल्हाद, आये तहाँ राय प्रहलाद ।।

अंजनी-वाग्दान

(९७)

राय महेन्द्र अक भरि लयो, भेंटत युगल वहुत सुख भयो ।
सबै कुशल की बूझी सार, कुशल सबै परजा व्योहार ।।

(९८)

अति आनन्द दुहू मन भयो, ताको वरन जाई न कह्यो ।
कनक-शिला सोहै सु-विशाल, बैठे तहाँ दोऊ भू-पाल ।।

(९९)

घडी एक जब अवसर भयो, राय महेन्द्र बूझ तव लयो ।
सुनौ बात प्रहलाद नरेश, व्यापै चिन्ता बहुत कलेश ॥

(१००)

मो पुत्री अजनि सुन्दरी, रूप-विवेक कला-चातुरी ।
वरण जोग जब कन्या भई, निशि वासर मो निद्रा गई ॥

(१०१)

चिन्ता व्यापी अधिक शरीर, भावे नही अन्न अरु नीर ।
राज कुँवर देखे सब टोह, कोई मनहि न आयो मोह ॥

(१०२)

रावण को जो दीजे धिया, सहस अठारह उसके त्रिया ।
गत यौवन सब कोऊ भनै, तातें सुन्दरि देत न बनै ॥

(१०३)

इन्द्रजीत दीजे सुन्दरी, मेघनाद चित मानै बुरी ।
होय विरुद्ध दोई वर जुरे, तातें बात विचार न परे ॥

(१०४)

कनक नगर राजा हिरनाभ, सोलह कला चन्द्र जिमि आभ ।
ताको पुत्र बडो सुकुमार, रूप-कला, रु काम-अवतार ॥

(१०५)

बरस अठारह को जब होय, ले तप सयम धारे सोय ।
अवधि ज्ञान भासियो मुनी, ताको क्यों दीजे अजनी ? ॥

(१०६)

पुटभेदन राजा प्रहलाद, केतुमती त्रिय के प्रासाद ।
एक पुत्र है पवन कुमार, रूपवत गुणवत अपार ॥

(१०७)

मन्त्री लोग कहे सब कोय, पवन जोग यह पुत्री होय ।
मन वाँछित हम पूरो काज, दर्शन भये आपके आज ॥

(१०८)

हम ऊपर तुम होऊ कृपाल, हमरो बोल रखो भूपाल ।
बात तुम्हारे यदि मन भाय, तो पवनञ्जय दीजे व्याह ॥

(१०९)

सुनी बात बोले प्रहलाद, मन में मानौ अति आल्हाद ।
राय महिन्द्र वचन तुम कहे, सुनी बात हम अति सुख लहे ॥

(११०)

बहुलक वर हम देखे टोहि, पवन जोग कन्या नहिं होहि ।
अव हम ऊपर कीजे दया, करौ विवाह पवन तुम धिया ॥

(१११)

कनक-मुद्रिका हीरा जरी, सोहै अतिशय आभा भरी
दाख बेल अरु आमे चढी, प्रातिहार्य कर सुवरण छड़ी ॥

(११२)

राजा दोय महेन्द्र समान, दल-वल समधी दुहूँ समान ।
दोय वरावर कुल-आचार, धर्मवत दोई गुण सार ॥

(११३)

दोई राय सुजान विवेक, जानै ज्योतिष अर्थ अनेक ।
दोई नृप को निर्मल हियो, राजा दुहूँ विनय अति कियो ॥

(११४)

देखी लगुन पवन-अजनी, दोइ विवाह प्रीति अति घनी ।
डारे सबै अशुभ सजोग, पीड़ा दु.ख न व्यापै रोग ॥

(११५)

वोले विप्र सुनौ हे शाह ! दिन तीजे यहु कीजे व्याह ।
होय सिद्धि वर-कन्या सही, आगे बरस एक दिन नही ॥

(११६)

विप्र वचन कीने परमान, मन वाँछित तिन दीनें दान ।
पुगीफल ते कर सत्कार, सुन्दरि कों परणाई कुमार ॥

प्रच्छन्न-दर्शी

(११७)

बाजे नाद निशानें धाय, भयो हर्ष पहुँचे घर राय ।
व्याह समय है मगल चार, सज्जन मित्र मिले परिवार ॥

(११८)

पवनञ्जय सुनि सुन्दरि रूप, सुर-कन्या तें अधिक अनूप ।
काम-वाण बेध्यो सु-शरीर, तब ही तज्यो अन्न अरु नीर ॥

(११९)

जब कामी को व्यापै काम, युक्तायुक्त न सूझै काम ।
चिन्ता उपजी बहुत शरीर, कायर होय सुभट वरवीर ।।

(१२०)

स्त्री रूप सुनौ जब नाम, कामातुर नहिं क्षण विश्राम ।
काम-वाण बेध्यो जिस काल, लेबे श्वासोच्छास त्रिकाल ।।

(१२१)

काम ज्वर व्यापै तसु देह, वैश्वानर ज्यों दाहे गेह ।
घडी एक नहिं थिरता लेय, मेटे धरम पाप-फल सेय ।।

(१२२)

जबै काम की होय अवाज, तब विष सम लागै जल नाज ।
जे नर होंय काम के वास, नारी कथा सुहावै तास ।।

(१२३)

मदन कुचेष्टा जाके अग, गीत नृत्य भावै नव रग ।
काम-वाण तसु हनै शरीर, मूर्च्छा गति पावै तसु वीर ।।

(१२४)

व्यापै काम भरै नर पाप, उपजै देह शोक संताप ।
दुख भुजै नर आठों याम, जब ही आय उदीपै काम ।।

(१२५)

सुनकर अंजनि रूप प्रशस्त, लियौ बुलाय सुमित्र प्रहस्त ।
बोले पवन सुनो हे मित्त, बात हमारी देकर चित्त ।।

(१२६)

राय महेन्द्र अंजनी धिया, सुनो रूप चिन्तातुर हिया ।
सुन्दरि वेग दिखावहु मोय, मित्र! काम यह तुम ते होय ।।

(१२७)

काम-अगनि तन कीनो क्षार, करहु कछू शीतल उपचार ।
जब ये प्राण निकरिहैं मोय, अति दुख तब ही सालहि तोय ।।

(१२८)

जबै अनिष्ट मित्र को होय, करै सहाय सु-मित्र जु होय ।
मन की बात कही मैं मूढ, राखो मन मे अपनें गूढ ।।

(१२९)

पवनञ्जय की वार्ता सुनी, बोलो मित्र बुद्धि को धनी ।
छोडो पवन चिन्ता अनमनी, तुम्हे दिखाऊँ वेगि अजनी ।।

(१३०)

जानो पवन मित्र को बोल, भयो सुखी मन कियो अडोल ।।
कहै वचन बैठ इक थान, दिन बीत्यो अस्तंगत भान ।।

(१३१)

दशौं दिशा कृष्ण-मुख किया, जैसे दीप्ति बिना है दिया ।
कामी जन सेवै नित काम, धर्मवत ले जिन को नाम ।।

(१३२)

भयो प्रभात रैन सब गई, पूरब दिशि सब पीली भई ।
तेजवंत रवि ऊँगो जबै, पंथी पथ चले सब तबै ।।

(१३३)

बोल्यो मित्र प्रहस्त उदार, चलो मित्र सुन्दरि के द्वार ।
सुने वचन पवनञ्जय तनौं, रच्यो विमान मनोहर बनौं ॥

(१३४)

दोई गगन पथ चढि गये, सुन्दरि मन्दिर ठाडे भये ।
देख गवाक्ष भलो तहँ थान, उतरे दोऊ मोड विमान ॥

(१३५)

प्रत्यक्षम् देखो तसु रूप, सुर कन्या ते अधिक अनूप ।
मन मे भयो बहुत सतोप, मुक्ति लहै ज्यो मुनि निर्दोष ॥

पवन-भर्त्सना

(१३६)

सुन्दरि रूप रह्यो मन भाय, तिहिं अवसर आई तसु धाय ।
अजनि सुनो बात इक भली, पवन कुँवर तुम जोडी मिली ॥

(१३७)

पुत्री पुण्य उदय ह्वै आय, पायो कत मनोहर राय ।
रूपकला गुन-धन सम्पन्न, कत तुम्हारो मति व्युत्पन्न ॥

(१३८)

पूर्व जन्म सुकृत सग्रह्यो, कै तुम दान सुपात्रहिं दयो ।
पूजे देव बहुत मन लाय, तासु पुण्य वर ऐसो पाय ॥

(१३९)

दूजी सखी सुकेशी नाम, गलबहियाँ दे बोली ताम ।
मधुमाला तब बोली रूढ, पापी 'पवन' निपट मति मूढ ॥

(१४०)

राय महिन्द्र तनी मति चली, बात विचारि न कीन्ही भली ।
पवनञ्जय मन चपल शरीर, अविवेकी गुणहीन अधीर ॥

(१४१)

सुन्दरि योग्य नही व्यवहार, काक-कण्ठ किमि शोभै हार? ।
रूप नरेश कला नव धरे, वायु बगूलो घर घर फिरै ॥

(१४२)

राय महिन्द्र दोष पुनि नही, लिखो ललाट होय ही सही ।
अधिक चतुर नर होय सुजान, कर्मोदय से होय अजान ॥

(१४३)

सुनी पवन तब केशी बात, कोप्यो पवन पसीज्यो गात ।
अधिक रोष काया प्रज्ज्वली, मानो घृत वैश्वानर मिली ॥

(१४४)

कहे पवन केशी को हनौ, मुझ अयुक्त यह बोली घनौ ।
निरपराध निंदै जो कोय, ताकौ मारत पाप न होय ॥

(१४५)

बैठी पास सुनै सुन्दरी, कहलवाय मम निन्दा खरी ।
धिक् अंजनि धिक् केशी दासि, दोउ दुष्टनी करौ विनाशि ॥

(१४६)

धनुष-वाण कर लियो उठाय, खेंच्यो अधिक कान लों लाय ।
देख्यो मित्र गह्यो तसु हाथ, है अयुक्त यह कारज नाथ ! ॥

(१४७)

बोलो मित्र सुनो सुकुमार, मारे त्रिया होय कुल क्षार ।
वढै कलंक अकीरति होय, ताते त्रिया न मारै कोय ॥

(१४८)

यह अपराध अजनी नाँहि, अपयश यहै सुकेशी आहि ।
वही बडो जु क्षमा को गहै, नीच जाति के अवगुन सहै ॥

(१४९)

सुख को पर घर गये कुमार, ताते फिर दुख भयो अपार ।
उपजै पाप दुःख अति होय, ताते पर घर जाय न कोय ॥

(१५०)

बैठे दोऊ मित्र विमान, गये नगर पुटभेदन थान ।
पवनकुमार क्रोध मन भयो, सैन्य सुसज्जित करतो भयो ॥

आक्रमण, परिणय और परित्याग

(१५१)

नगर महेन्द्र घेर्यो आय, विविध भाँति उत्पात मचाय ।
सिंहनाद कर ध्वजा घुमाय, भेरि नाद वादित्र वजाय ॥

(१५२)

पहिरै सुभट कवच सजोग, नगर गाँव के देखे लोग ।
उत्तरोत्तर करहिं विचार, आयो नगरी कौन जुझार ? ॥

(१५३)

एक कहै यहु लका धनी, शहँशाह सो दीसै घनी ।
पवनञ्जय कहुँ सुन्दरि दई, सुनी बात याको रिप भई ॥

(१५४)

एक कहै झूठौ आलाप, लंकाधीश न आवै आप ।
इन्द्रजीत तसु बडौ कुमार, बैठो आय नगर के द्वार ॥

(१५५)

एकै साँचो बोल्यो आय, यहु तो सुत प्रहलाद कहाय ।
झूठ बात मति मानो येह, मै पहिचानो सुन्दर देह ॥

(१५६)

राय महिन्द्र सुनी यह बात, धूनियो शीस पसीज्यो गात ।
आयो पवनञ्जय इस घरी, क्या हमसे कछु गलती परी ॥

(१५७)

स्वजन सनेही सग महेन्द्र, गये जहाँ प्रहलाद नरेन्द्र ।
दोऊ समधी भेटे राय, वैठे सिहासन इक ठाँय ॥

(१५८)

अवसर पाय कहै प्रहलाद, हससे कहा भयो उन्माद ।
शका उपजी मन मे आन, अगम बात कहिये श्रीमान् ॥

(१५९)

कहैं महेन्द्र सुनो भू-पती, सावधान एकाग्र हि चिती ।
पुत्र आप को पवनकुमार, बैठो जाय नगर के द्वार ॥

(१६०)

साहन-बाहन बहु विस्तार, मार्‍यो गाँव कर्‍यो गढ क्षार ।
कहो राय हमरो क्या दोष, पवनकुमार कियो अति रोष ॥

(१६१)

सुनी बात पुटभेदन राय, मन में अति लज्जा उपजाय ।
पहुँचो कुँवर तुम्हारे थान, भेद न जानो तुम्हरी आन ॥

(१६२)

दोई राय भये असवार, गये जहाँ हैं वायुकुमार ।
राय महेन्द्र जोड कर हाथ, पवनञ्जय को नमियो माथ ॥

(१६३)

छाड्यो रोष पवन तिहिं थान, राखी बहुत श्वसुर की आन ।
उपवन उत्तम नगर सुपास, दियो राय प्रहलाद निवास ॥

(१६४)

लग्न-दिवस को आयो काल, तोरण-मंडप रचे विशाल ॥
चित्रित पच वर्ण के रग, सोहै ध्वजा बहुत उत्तुग ॥

(१६५)

छियानव अगुल वेदी रची, पच वर्ण रतननि कर खची ।
मगल-कलश धरे चहुँ पास, हरित वर्ण के रोपे बाँस ॥

(१६६)

आम्र-पत्र की बाँधी माल, छाये उज्ज्वल वस्त्र विशाल ।
मण्डप मध्य सु-पडित आय, मन्त्रोच्चारण तहाँ कराय ॥

(१६७)

पाँव पखारन बैठे शाह, अग्नि साक्षि सों भयो विवाह ।
राय महिन्द्र उठे तिहिं बार, हाथ जोडबे के आचार ॥

(१६८)

पवन हस्त पानी जब लियो, घोड़े हाथी कचन दियो ।
हीरा-मोती दिये दहेज, रत्न जटित सुख शय्या सेज ॥

(१६९)

साजन दोउ मिले तिहिं थान, यथायोग्य तहँ दीनो दान ।
मास एक तहाँ रही बरात, दल समेत पहुँचे कुशलात ॥

(१७०)

पवनञ्जय मन भर्‍यो गुमान, दियो अजनी निर्जन थान ।
बहुतक निंदा दासी करी, तातै पवन तजी सुदरी ॥

(१७१)

साथ रहे मधुमाला सखी, सूने मंदिर निवसै दुखी ।
भई अभागिनि करै विलाप, पूर्वोदय का आयो पाप ॥

(१७२)

मस्तक धुन-धुन लेहि उसास, नयन झिरे ज्यों भादों मास ।
कंत वियोग बहुत दुखी भरी, इह विधि काल गमै सुंदरी ॥

रावण-वरुण संग्राम

(१७३)

इतनी कथा यहाँ ही रही, अब यह कथा लक-गढ गई ।
लका-गढ है बसत विशाल, करै राज दशमुख भू-पाल ॥

(१७४)

तीन खंड धरती समृद्ध, चौदह सहस सु-विद्या सिद्ध ।
(वि) भीषण कुभकर्ण द्वय भ्रात, दुर्जन नृप को करै निपात ॥

(१७५)

वीर न कोई धीर जु धरै, भूचर खेचर सेवा करै ।
दलबल सैनिक अति अभिमान, राज करै धर्णेन्द्र समान ॥

(१७६)

नगरि एक अति सुन्दर बनी, राजा वरुण तासु को धनी ।
रावण की नहिं माने आन, सेना अधिक धरे अभिमान ॥

(१७७)

तेज प्रतापवंत ज्यों सूर, दुर्जन राय करै चकचूर ।
बात विचार गर्व अति भनी, सुभट न कोई ता सम गिनी ॥

(१७८)

रावण मन में रच्यो उपाय, पठियो दूत वरुण प्रति जाय ।
कहियो सेवक बन के आव, नातरि देश छोड़ करि जाव ॥

(१७९)

नाम सुनत ही चाल्यो दूत, पहुँचो वरुण राय पै कूद ।
दशमुख सुन सन्देश नरेश, सेवा करहु भोग बहु देश ॥

(१८०)

रावण तीन खड को धनो, अर्द्ध चक्र तसु सपति घनो ।
भूचर-खेचर मानै आन, स्वर्गलोक सम लका थान ॥

(१८१)

सत्वर चलि रावण करि सेव, कै 'तुम देश छोडियो एव ।
यदि न पास चल सेवा करौ, तो तुम जम के मुख मे परौ ॥

(१८२)

सुन वच दूत वरुण उफन्यो, मानो वैश्वानर घृत पर्‌यो ।
को रावण ? कहँ लका ग्राम, ? अर्द्ध चक्र मैं सुन्यो न नाम ॥

(१८३)

चक्रवर्ति इत बसै कुम्हार, बर्तन बेचे बीच बजार ।
नगरि माँहि भील जे फिरै, दाने घूरे ,बीनत फिरै ॥

(१८४)

घर ही गर्व करै नर कोय, वह क्षत्रीधर कैसे होय ? ।
यदि ,रावण दल पौरुष धाम, आवहु वेग करै सग्राम ॥

(१८५)

मैं धरती-धन लालच हीन, अतः रहूँगा मैं स्वाधीन ।
करहु युद्ध चढि क्षत्री रीति, भाव बिना क्यो होवै प्रीति ? ॥

(१८६)

सुन कर बात चल्यो द्रुत दूत, रावण ढिग हो क्रुद्ध प्रभूत ।
वरुण राय जो उत्तर दियो, सो सब दशमुख सों जा कह्यो ॥

(१८७)

फिरै छत्र अति महा अडोल, राखो नाहिं आपको बोल ।
गर्ववत अति उत्तर भनै, तुम को तो वो तृण सम गिनै ॥

(१८८)

सुनी बात रावण कोपियो, मानो अगनि माँहि घृत दियो ॥
दलबल सारी सैन्य सजाय, वरुण नगर पै चढ्यो आय ॥

(१८९)

पायो भेद वरुण भूपती, शका कछू न मानो रती ॥
सेवक छोटे बडे बुलाय, दीनो मान-दान तब राय ॥

(१९०)

दलवल साहन सब ले चढ्यो, वेगि जाय दशमुख सो भिड्यो ।
ले ताम्वूल मन हि किलकत, जैसो मदमातो गजदत ॥

(१९१)

दशमुख सेना देख अपार, किये उन्हो-पै तीव्र-प्रहार ।
जाने युद्ध-कला सब मित्त, मिलकर घाव करै सौ पुत्र ॥

(१९२)

रावण की वहु सेना हनी, कायर सुभट न कोई गुनी ।
वांधि लयो खरदूषण राय, पहुँचे सुभट वरुण प्रति आय ॥

(१९३)

दशमुख को तब काप्यो वक्ष, मनहुँ अगनि में झोंको वृक्ष ।
तज्यो तंबोल अन्न अरु नीर, चिन्ता व्यापी अधिक शरीर ॥

(१९४)

मंत्री बोले दशमुख सुनो, जिससे काम बने आपनो ।
लका जाय सैन्य सब लौट, आय करो पुन युद्ध बहोट ॥

(१९५)

सुनी सीख जब मन्त्री तनी, बहुरि गयो लक को धनी ।
जितने थे सेवक आधीन, उन सबको पत्री लिख दीन ॥

पवन-प्रस्थान

(१९६)

दूत एक पुटभेदन गयो, लिखित पत्र प्रहलादहिं दियो ।
वाँचो लिखो भयो आल्हाद, सम्प्रति गमन करे प्रहलाद ॥

(१९७)

बजी भेरि अरु नाद-निशान, हाथी घोड़े धरे पलान ।
पवनञ्जय जब सुनियो हाल, जनक समीप गयो तत्काल ॥

(१९८)

हाथ जोड़ यह कीनी बात, विनती सुनहु हमारे तात ।
स्वामी हमको आज्ञा देहु, जाकर करहुँ दशानन सेहु ॥

(१९९)

देखो लका सम गढ़ थानैं, तापैंर वरुण करै अभिमान ।
नृप नें सुने पुत्र के वैन, मन में पायो अति सुख चैन ॥

(२००)

सुनो कुमार हमारी बात, तुम सग्राम न जानो घात ।
बाजे भेरी नाद-निशान, सुनत कान तुम तज हो प्रान ॥

(२०१)

नीद-भूख तो जाय न सही, बाल योग्य यह कारज नही ।
वचन पिता के मन मे धार, बोल्यो तब यों पवनकुमार ॥

(२०२)

बाल-सर्प जो डसै तुरन्त, तापै चलै न तंत्र न मत्र ।
बालक सिंह होय अति शूर, गज समुदाय करै चकचूर ॥

(२०३)

अष्टापद को होय जु बाल, हस्ती सहित सिंह को काल ।
जो बालक चिन्तातुर होय, हारे युद्ध न जीते कोय ॥

(२०४)

क्षत्री पुत्र न बालक होय, अतः तात दो आशिष मोय ।
राजा सुनत अधिक सुख भयो, पुत्र हाथ ले बीड़ा दयो ॥

(२०५)

पुत्र जनक वच करि परमान, चलो सैन्य ले लंका थान ।
पिता तमोल पाय उपदेश, चलियो दलबल सुभट अशेष ॥

करि स्नान पूजे जिनदेव, नमस्कार करि गुरु की सेव ।
बाल-वृद्ध मिल सब परिवार, एक साथ कीनो आहार ॥

(२०७)

ले ताम्बूल वस्त्र आभर्न, शस्त्र सुसज्जित नाना वर्न ।
भेटि कुटुम्ब सबै परिवार, चाल्यो लका पवन कुमार ॥

(२०८)

निकसि पौर पहुँचो जब द्वार, देखी खडी तहाँ निज नार ।
बिन आभरण कुचैले-चोर, झिरै नैन ज्यों भादो नीर ॥

(२०९)

पौर दिवाल खड़ी सुन्दरी, मानो चित्र चतेरे करी ।
भयो कुपित अति पवनकुमार, देख्यो ढीठ पनो व्यवहार ॥

(२१०)

मन मर्याद नही मुझ तनी, लाज बेचि खाई पापिनी ।
गमन-काल ठाडी हो रही, मुख देखन के योग्यहि नही ॥

(२११)

हिये कुटिल अति रोवे खरी, इस पापिनि पै मैं दिठि परी ।
सुन्दरि सुनी कत की बात, हरषी चित्त हुलासी गात ॥

(२१२)

हाथ जोड़ सन्मुख विहसत, वेग गमन करि आबहु कत ।
सुनी बात चल दियो कुमार, अति शुभ शकुन भये तिहि बार ॥

नारि गावती मिली अनेक, दही दूब धरि थाली नैक ।
बाये सिंह दहाडे घनो, पावे सुख-पति लका तनो ।।

(२१४)

बाये देवी करहिं पुकार, आवै कुशल मिलै परिवार ।
देखि शकुन शुभ पुण्य-प्रभाव, दो योजन पर कियो पडाव ।।

(२१५)

निर्मल नीर गहिर गभीर, तम्बू तने सरोवर-तीर ।
दिन गत भयो अस्तगत भान, पक्षी शब्द करै असमान ।।

अन्तर्द्वन्द

(२१६)

मित्र सहित पवनञ्जय राय, मदिर ऊपर बैठे जाय ।
देखे पक्षी सरवर तीर, करे शब्द अति गहन गंभीर ।।

(२१७)

दसो दिशा मुख कालो भयो, चकवी-चकवा अतर भयो ।
पिय वियोग चकवी दुख करे, ऊँची उठ भू पै गिर परे ।।

(२१८)

क्षण इक उठै क्षणिक विललाह, क्षण-क्षण पंख पसारे आह ।
देखि पवन चकवी व्यवहार, कहो, मित्र यह कौन विचार ? ।।

धीर न धरै पुकारै घनी, कहो बात तुम चकवी तनी ।
कहे मित्र पवनञ्जय सुनो, कत वियोग करे दुख घनो ॥

(२२०)

दिवस मिलन का है सयोग, रात होत इन परै वियोग ।
पवनञ्जय सुनि इनकी बात, काम-बाण तसु बेध्यो गात ॥

(२२१)

चिन्ता उपजी बहुत शरीर, रहे न चित्त एक क्षण धीर ।
पवनञ्जय बोलो तत्काल, सुनो मित्र ! मम वचन रसाल ॥

(२२२)

चकवी एकहि रात वियोग, करै विलाप अधिक दुख सोग ।
कहो, अजनी किम जी-बीस, छोडे भये बरस बाईस ॥

(२२३)

अति अपराध भयो है मोय, हम समान नहिं मूरख कोय ।
मैं पापी मति ठानी बुरी, निर अपराध तजी सुन्दरी ॥

(२२४)

बिन विचार जे कारज करै, ताको काम न एकहु सरै ।
तजी त्रिया मेरी मति गई, बुद्धि सबै हर लीनी दई ॥

(२२५)

ताको भयो बडो बडो सदेह, अगनि काष्ठ सम दाहै देह ।
मित्र काम यहु तुम ते होय, सुन्दरि वेग मिलावहु मोय ॥

(२२६)

मित्र मित्र को करै विश्वास, मित्र बिना नहिं पूरै आस ।
बहुत आपदा आवै जबै, मित्र परीक्षा पावै तबै ॥

(२२७)

काया दुखी करै जब कोय, तबै मित्र तें रक्षा होय ।
सुख दुख में जो आवै काम, साँचो मित्र ताहि को नाम ॥

(२२८)

मैं तुम आगे छोडी लाज, अजनि वेग मिलावहु आज ।
जै हैं प्राण निकसि हम तनै, तब तुम को दुख साले घनै ॥

(२२९)

रावण-वरुण दोऊ दल जुरे, कहा विचार दई घर परे ।
क्षत्री जुरिहैं दोनों ओर, ऊँट बैठिहै फिर किस ओर ॥

(२३०)

सुनी बात हँसि बोले मित्त, राखो पवन धीर धरि चित्त ।
धीर न धरै अधिक अकुलाय, ताको कारज एक न थाय ॥

(२३१)

धीरे क्षत्री पावे राज, धीरे खेती निपजे नाज ।
लगा वृक्ष धीरे फल खाय, धीरे मुनिवर मुक्तहिं जाय ॥

(२३२)

धीरे मन मे उपजे बुद्धि, धीरे होय कार्य की सिद्धि ।
धीरे वस्तु मिले सब सार, धीर चित्त धरि रहो कुमार ॥

(२३३)

पहिलो पहर निशा जब गई, निद्रा वश सब सेना भई ।
जो सेवक था अति विश्वस्त, ताहि बुलायो पवन-प्रहस्त ॥

(२३४)

कहे पवन सेवक सुन बात, यात्रा हेतु युगल हम जात ।
नीके सेना रखियो रात, वदि देव आऊँ परभात ॥

(२३५)

सेवक कहे सुनो हे राय, वचन लियो सिर माथ चढ़ाय ।
जब लों तुम करि आवहुँ जात, तब तक दल राखहुँ कुशलात ॥

पिया-मिलन

(२३६)

दोऊ बैठि उड़ चले विमान, तत्क्षण गये अजनी थान ।
उतर यान द्वारे रख दियो, तब सुन्दरि को चमक्यो हियो ॥

(२३७)

इतनी रात आयो इहि ठाम, कौन पुरुष कहि अपनो नाम ।
पूर्वहि अशुभ करम की मार, कौन आपदा आई अपार ॥

(२३८)

थर थर थर थर कप्यो शरीर, सुन्दरि चित्त धरै नहिं धीर ।
उठि देखो मधुमाला तबै, कौन पुरुष आयो इत अबै ॥

(२३९)

ठाडो बाहर बोलो मित्त, ना करि स्वामिनि शंका चित्त ।
अशुभ कर्म अब हुये विनाश, कंत अंजनी आये पास ॥

(२४०)

शका भई सुन्दरी वक्ष, सपनो है अथवा प्रत्यक्ष ।
जहाँ प्रिया को शयनागार, तहँ जा पहुँचे पवनकुमार ॥

(२४१)

देख कुँवर चिन्ता सब गई, छोड्यो आसन ठाडी भई ।
कर गहि त्रिया पवन नि शक, बैठे दम्पति इक पर्यंक ॥

(२४२)

बोले पवन सुन्दरी सुनो, हम अपराध भयो है घनो ।
मैं पापी निर्दय मतिहीन, बिन अपराध तुम्हे दुख दीन ॥

(२४३)

शीलवंत कुलवन्ती नार, तुम सी त्रिया नही संसार ।
हम से चूक बडी है बनी, क्षमा करो हमको अंजनी ॥

(२४४)

स्वामी के सुन सुखप्रद बैन, हाथ जोड बोली भरि नैन ।
तुम कछु दोष नही हे देव ! पूर्व कर्म भुगते नर-देव ॥

(२४५)

दोष न कोऊ काहू देय, जस बोबे तसहू फल लेय ।
जब लगि अशुभ करम था कोय, तब लगि दु:ख दिखायो मोय ॥

(२४६)

अब तुम घर आये हो नाथ ! मुझ सुहागिनी करो सनाथ ।
अब लों हती अंजनी सही, अब तुम दरश निरजनि भई ॥

(२४७)

हाव-भाव अति कीनो सती, कीनो भोग तहाँ दम्पती ।
जैसो पुरुष त्रिया व्यवहार, तैसो भयो सबै आचार ॥

(२४८)

पिछलो पहर जब निशि को भयो, तबै गमन पवनञ्जय कर्‌यो ।
मित्र प्रहस्त को लियो बुलाय, बैठि विमान चल्यो दल ठॉय ॥

(२४९)

सुन्दरि कहै कत सुन एव, तुम तो चले लकपति सेव ।
आये गुप्त कियो सभोग, हम को है ऋतुवेला जोग ॥

(२५०)

क्वचित् कदाचित् गर्भ जु रहा ? तो आगे मैं करहूँ कहा ?
दुर्जन नर नहिं जाने भेद, अपयश करि ढूंढै बहु छेद ॥

(२५१)

सासु श्वसुर सब ही परिवार, हम शिर मढै कलक कुमार ।
निन्दा करिहै सब मिलि कोई, कहा सीख पिय हमको होई ॥

(२५२)

सुनें वचन सुन्दरि के जबै, दियो पवन नें उत्तर तबै ।
अजनि वचन तुम्हारे सही, बात कहन के योग्यहि नही ॥

जाने लोग पिता अरु माय, हाँसी होय लंकपति जाय ।
जग में अपयश मेरो होय, जातें प्रकट न करियो मोय ।।

(२५४)

स्वर्ण मुद्रिका शुभ मणि मयी, पवन उतार हस्त की दयी ।
सासु श्वसुर करिहै जब रार, तबहिं मुद्रिका दियो निकार ।।

निष्कासिता

(२५५)

पवनञ्जय लंका प्रति गयो, गर्माधान अंजनी भयो ।
वढ्यो गरभ मास दो चार, भई प्रफुल्लित अंजनि नार ।।

(२५६)

हाथ-पाँव-मुख चले पसेव, काया पीत वरन स्वयमेव ।
मास गर्भ जब भयो व्यतीत, केतुमती तब हुई विपरीत ।।

(२५७)

धुन्यो माथ मीचे दोउ नैन, अजनि सन्मुख भाषे बैन ।
कहा पापिनी कियो उपाय, राख्यो गर्भ कौन कह ठाँव ।।

(२५८)

सह कुटुम्ब वोलो तत्काल, कुल कलकिनी चली कुचाल ।
कियो कुकर्म गर्भ व्यवहार, जान्यो नही कियो को आर ?

(२५९)

मेरो कुल उज्ज्वल उत्तुंग, लगा कालिमा कियो कुरंग ।
कीरति अधिक कत मुझ तनी, ताकी हान करी पापिनी ।।

(२६०)

अश्रु पूर्ण कर दोऊ नैन, सविनय बोली सुन्दरि बैन ।
गुप्त रूप आये भरतार, तिन सग भोगे भोग अपार ।।

(२६१)

ताहि समय मैं ऋतुमति ठई, यातें गर्भ धारती भई ।
पश्चिम में सूर्योदय होय, पर मो वचन न मिथ्या होय ।।

(२६२)

वचन हमारे नहिं विश्वास, तो मधुमाला पूंछो सास ।
मो प्रियतम की पन्ना जरी, देख निशानी यहु मुद्दंरी ।।

(२६३)

बोली सास अरी अजनी, दीखत है तू अति प्रपचिनी ।
मायामयी मुद्रिका लाय, मोकों मूरख रही बनाय ।।

(२६४)

पुरुष पराई सेवन हार, करै कुतर्क कुलटा-नार ।
पातिव्रत्य भूल कर यहाँ, यह कुटिलाई सीखी कहाँ ? ।।

(२६५)

घर से निकल वेग तू जाय, मत बन इस कुल को दुखदाय ।
नगर लोग जो जानै भेद, बढ़िहै अपयश निंदा खेद ।।

(२६६)

दासी एक दई तिहिं साथ, काढी अजनि पकरहिं हाथ ।
ढील न करो वेग ले जाहु, नगर महिन्द्र दिखावहु याहु ।।

—दोहा—

(२६७)

लिखे विधाता लेखना, कोऊ न मेटन हार ।
बाँधे पूरव कर्म जो, फल भुगते ससार ।।

(२६८)

दुख-सुख अरु जामन मरण, जिहिं वेराँ जिहिं होय ।
घडी मुहूरत एक क्षण, राखि सकै नहिं कोय ।।

अंतर्दाह

(२६९)

निकसि अजनी करै विलाप, उदय भयो को बांधो पाप ।
कै मैं दियो कु-पात्रहिं दान, कै मुनिजन कीनो अपमान ।।

(२७०)

कै जिनवर को धर्म न कियो, कै पूरव मिथ्या मत सेइयो ।
कै कु-दान दीनेहु मैं दात, कै मैं भोजन कीनो रात ।।

(२७१)

कै मैं जीव हने बहु भीर, कै अनछान्यो लीन्यो नीर ।
कै अखाद्य वस्तु आचरी, कै मैं पर की निंदा करी ।।

(२७२)

कै पर-पुरुष करी मैं सेव, कदमूल फल भखियो एव ।
कै मैं नगर वारियो दाह, पूरव-पाप भये अब आह !

(२७३)

विधि को कैसो विकट विधान, कियो वियोगिनि गर्भाधान ।
करते समय नाथ सहवास, क्यों न भये मम प्राण विनाश ॥

(२७४)

हे मधुमाला ! करहु उपाय, मै पुत्री तुम मेरी माय ।
पूरो गर्भ भयो व्यवहार, जीवे कहाँ कौन आधार ? ॥

(२७५)

सुन सु-वचन बोली मधुमाल, मन तें दुख को देहु निकाल ।
श्वसुर सासु पिय दुख दे घनो, शरणाई घर माता तनो ॥

(२७६)

कष्ट झेलती पहुँची तहाँ, राय महिन्द्र थान है जहाँ ।
विलखत वदन सुदरी गई, सिह द्वार ठाड़ी तब भई ॥

पददलिता

(२७७)

द्वारपाल दई सुवरण-साट, नाम तासु को शिला कपाट ।
जहाँ पिता-माता को थान, सुन्दरि को नहिं दे तहँ जान ॥

मधुमाला बोली सुन तात ! तो सों कहौ पाछिली बात ।
पवनञ्जय लका को गयो, गुप्त पनें मन्दिर आ गयो ।।

(२७६)

योग्य समय दीनो रति-दान, उपज्यो तहाँ गरभ-आधान ।
जानो हाल श्वसुर अरु सास, तब अजनि को दियो निकास ।।

(२८०)

तदनन्तर जो जो दुख सहे, ते सब द्वारपाल सो कहे ।
सुनकर व्यथित सुन्दरी हाल, शिला कपाट भयो बेहाल ।।

(२८१)

मधुबाला से सब सुन हाल, शिला कपाट गयो तत्काल ।
करि जुहारु राजा सो कह्यो, अजनि गमन पिता गृह भयो ।।

(२८२)

कीनी हमने आडी छडी, सिंह द्वार राखी कर खडी ।
जैसी आज्ञा प्रभु की होय, तैसो उत्तर दीजो मोय ।।

(२८३)

सुनी बात राजहि सुख भयो, मन मे अति आनन्दित ठयो ।
नगर उछाह करो सु विशाल, बाँधो तोरण बधन माल ।।

(२८४)

द्वारपाल बोलो सुन राय, काहे नगरी रहे सजाय ?
जैसी जुगति गर्भ थिति रही, तैसी विधि राजा सों कही ।।

(२८५)

सुनत बात भूपति मन जल्यो, मानो अगनि माँहि घृत पर्यो।
खोटो काम कियो अजनी, वेग जाय काढो पापिनी ॥

(२८६)

चन्द्र ज्योति सम गोत्र हमार, राहु आनि त्यों कियो पसार।
भयो कुकर्म बुरो आचार, काढहु वेगि न लावहु वार ॥

(२८७)

नगर लोग जो सुनिहैं कोय, तो अपयश बढिहै सिर मोय।
कियो कुकर्म सग्रह्यो पाप, ना यह बेटी ना मैं बाप ॥

(२८८)

सुनी बात मस्तक अति धुन्यो, मीचे नैन कान कर दयो।
मंत्री 'सुमति' कहे सुनि राय, ऐसो क्यों तुम करो उपाय ॥

(२८९)

सरला शील सती अंजनी, दोऊ कुल की चूडामनी।
फिर से मन में करो विचार, उचित नही यह दुर्व्यवहार ॥

(२९०)

मन्त्री वचन लियो विश्राम, बहुरि कोप करि बोले ताम।
देश-नगर से करो निकास, वेग जाय देओ वनवास ॥

(२९१)

विलख वदन बोली अजनी, पाली हुती जैसी पदमिनी।
ऊँची नीची लेय उसाँस, नैन झिरैं ज्यों भादों मास ॥

—दोहा—

(२९२)

जा दिन आव आपदा, ता दिन मित्र न कोय।
मात-पिता परिवार सब, ते पुनि बैरी होय ॥

(२९३)

कत सासु सुसुरो पिता, रथ दल अधिक अनूप।
सो सुन्दरि निष्कासियो, यों संसार स्वरूप ॥

वीहड वन में मुनि दर्शन

(२९४)

निकसि सुन्दरी यो विलखात, युक्त नही तुम को यह तात।
आयो शरण न काढै कोय, यह तो क्षत्री धरम न होय ॥

(२९५)

मुझ पर कियो नही विश्वास, निर्दय केतुमति भई सास।
मैं अपराध कियो नहिं कोय, नाहक ही दुख दीनो मोय ॥

(२९६)

अहो श्वसुर राजा प्रहलाद, काहे मोपर कियो विषाद।
झूठ-साच को न्याय न कियो, बिन अपराध निकारो दियो ॥

(२९७)

अहो कत ! तुम्हरी मति चली, एकई बात न कर गये भली।
मात-पिता को भेद न दियो, आये गुप्त मोय दुख दियो ॥

(२९८)

रुदन करै झूरै सुन्दरी, पथ एक डग जाय न धरी।
गरभ भार अति पीड़ा भई, युगपद घुमें अधिक दुख लई ॥

(२९९)

छिन इक चलै छिनक भू परै, करै विलाप बहुत दुख भरै।
अधिक आपदा उपजी ताम, पग-पग बैठ लेहि विश्राम ॥

(३००)

मधुमाला आलम्बन देय, कर गहि काँधे हाथ सु देय।
एक पथ अरु दूजे दु.ख, क्षण भर सुन्दरि लहै न सुख ॥

(३०१)

देखै कुँवरि आपदा थान, दिन सब गयो अस्तगत भान।
अन्धकार वश अति दुख लह्यो, पीडा पर की देखि न सह्यो ॥

(३०२)

दसौ दिशा काली अति भई, नयन पथ दीखत कछु नही।
एक एक डग दूभर भई, वृक्ष तले ठहरन को गई ॥

(३०३)

मधुमाला तरु देख अशोग, तोडे पत्र बिछावन जोग।
झाडी भूमि बिछाये पान, कियो कुँवरि को सुथरो थान ॥

(३०४)

सुन्दरि शोक तज्यों तिहिं वार, जपियो मन्त्र सिद्ध नवकार।
मन में राखि जिनेश्वर नाम, पौडी कुँवरि लियो विश्राम ॥

(३०५)

ऊगो भानु निशा जब गई, पूरव दिशा जु पियरी भई।
दिनकर तेज जाय नहिं सह्यो, अंधकार को परलय भयो ॥

(३०६)

उठ करि कीनो जय जयकार, महामंत्र जपियो नवकार।
कर गहि लियो सखी मधुमाल, वन मे चली अंजनी बाल ॥

(३०७)

वन अति विषम महा भयभीत, नाहर सिंह बसे विपरीत।
चीता शूकर रीछ सियार, ता वन पहुँची जनि अजनि नार ॥

(३०८)

चलत पथ वन आधे गई, नग्न दिगम्बर देखत भई।
मन में पायो बहुत हुलास, वेग गई मुनिवर के पास ॥

(३०९)

देखे मुनिवर अति गभीर, महा अडोल मेरु सम धीर।
फटिक शिला बैठे मुनिराय, दिये ध्यान चेतन चित लाय ॥

(३१०)

मस्तक जोर दियो दोऊ हाथ, भाव सहित वदे मुनि नाथ।
जोग जुगति जव पूरी भई, मुनिवर धर्म वृद्धि तसु दई ॥

(३११)

समाधान बूझे बहुवार, जैसो श्रावक यति व्यवहार।
अजनि भई खुशी भरपूर, मेघ देख ज्यों नचे मयूर ॥

(३१२)

शीस भूमि धर जोड़े हाथ, दश विध धर्म कह्यो मुनिनाथ ।

धर्म कह्‌यो निश्चय व्यवहार, सुन सुदरि सुख लह्‌यौ अपार ।।

(३१३)

मुनिवर को कर अति सन्मान, पूजा करी सु-भाव प्रधान ।

मधुमाला ने अवसर पाय, जोड हाथ बूझे मुनिराय ।।

(३१४)

अंजनि क्यों पायो अति त्रास, जब से भयो गर्भ अधिवास ।

कै यहु पापी कै यहु मित्र, कै यहु पुन्नी कै यहु शत्रु ?

(३१५)

कौन जीव यह उपज्यो आय, जिहि कारण यहु दु.ख उठाय ।

किस कारण इह लग्यौ कलक, सती अजनी मुखी मयंक ।।

(३१६)

सुनें वचन मधुमाला तनों, मुनिवर नाथ भने तत्छिनों ।

चित्त शुद्ध कर त्यागहु खेद, पुत्री सुनो गरभ को भेद ।।

गर्भ-रहस्य

(३१७)

जम्बूद्वीप प्रकट है लोक, भरत क्षेत्र तिसमे अवलोक ।

मदिरपुर अति उत्तम धाम, बसै वैश्य 'प्रियनन्दी' नाम ।।

प्रियपत्नी 'जाया' ने जयो, नाम 'दयन्त' तासु को धर्‌यो ।
रूपकला गुण अधिक अपार, पायो पुण्य अधिक भंडार ॥

(३१९)

एक दिवस वन-क्रीडा गयो, चारण युगल देखतो भयो ।
पहुंचो साधु समीप कुमार, वदे मुनिवर जग—आधार ॥

(३२०)

सुन्यो धरम उपज्यो संतोष, श्रावक व्रत लीने निर्दोष ।
नमस्कार करि बारम्बार, थान आपने गयो कुमार ॥

(३२१)

नितप्रति देय सुपात्रहिं दान, जिनवर धर्म करे गुरु मान ।
तजे प्राण कर आयू पूर्ण, स्वर्गों के सुख पाये पूर्ण ॥

(३२२)

देव आयु जब पूरी भई, नर—पर्याय श्रेष्ठ धर लई ।
नगर मृगाङ्क तुङ्ग अभिराम, हरिश्चन्द्र राजा को नाम ॥

(३२३)

दान-पुण्य तिस कीनो घनो, शुद्ध चित्त राखे आपनो ।
आयु-कर्म को आयो अंत, भयो स्वर्ग में देव महंत ॥

(३२४)

बहु सुख भोगे आयु प्रमाण, उपज्यो नगर 'अरुण' शुभ ठान ।
नाम सुकंठ बसै भूपाल, गृहिणी 'कनकोदरी' विशाल ॥

सिंहवाहन तसु उपज्यो नंद, रूप-कला ज्यों पूरण चन्द ।
देव-शास्त्र गुरु सेवा करै, जैन धरम को निश्चय धरै ॥

(३२६)

एक दिवस सो वन मे गयो, विमलनाथ जिन दर्शन भयो ।
दियो राज निज कुंवर बुलाय, दीक्षा लीनी मन-वच-काय ॥

(३२७)

मुनि व्रत धार शरीर विहाय, उपज्यो स्वर्ग सातवे जाय ।
भोग स्वर्ग के सुखद विलास, कियो अजनी गर्भावास ॥

(३२८)

उत्तम जीव पुण्य की खान, पावै इसी देह निर्वान ।
गर्भ दोष कछु नहिं हे सुता, दोष न श्वसुर-सास अरु पिता ॥

(३२९)

पूर्व पाप जे सचित किये, तिनको भोगे पवन.-प्रिये ।
कहे जती मधुमाला सुनो, जैसो बोयो तैसो लुनो ॥

(३३०)

सुने वचन मुनि के चित लाय, भयो हर्ष नहिं अग समाय ।
हाथ जोड मधुमाला कही, विरह-कथा मुनि कहिये सही ॥

(३३१)

मुनिवर बोले सुनहु कुमारि, कहौ कथा सुन मन अब धारि ।
जिहिं कारण पापोदय भयो, सो सब सुनहु यथा विधि भयो ॥

---

(३३२)

पूरव जनम राज-गृह त्रिया, 'कनकोदरी' नाम तसु दिया।
ताकी सौत सु लक्ष्मी मती, जिनवर भक्ति करै नित प्रती॥

(३३३)

भवन माँहि अति उच्च स्थान, जिनवर बिम्ब धरे तिहिं थान।
पूजा अष्ट प्रकारी करै, दान-पुण्य-सयम आचरै॥

(३३४)

देखी प्रतिमा कनकोदरी, कियो कुकर्म ताहि प्रति हरी।
गहर बावडी पानी घनो, पटक्यो तहाँ बिम्ब जिन तनो॥

(३३५)

आहारार्थ आर्यिका एक, निकसी रुकी लक्ष्मी देख।
बिम्ब वियोगिनी लक्ष्मीमती, करै पुकार शोक अति सती।

(३३६)

कहै आर्यिका मत करि खेद, प्रतिमा को मैं पायो भेद।
साँच वचन सब मेरे जान, तुझ को बिम्ब दिखाऊँ आन॥

(३३७)

"सयमश्री" अति आतुर भई, कनकोदरि के मदिर गई।
रानी नमस्कार उठि कियो, उच्चासन बैठन को दियो॥

(३३८)

कहै आर्यिका रानी सुनो, अशुभ बंध तुम कीनो घनो।
तीन लोक पूजे जिनराज, तिनको हरण उचित नहिं काज ।।

(३३९)

जब तीर्थङ्कर जनम सु होय, इन्द्र शची सुर नाचे सोय।
मेरु शिखर शोभित चिद्रूप, ते जिनवर क्यों डारे कूप ? ।।

(३४०)

रानी उत्तम कुल उत्पन्न, तू पटरानी सुख सम्पन्न।
ऐसो मन में धर्यो कुभाव, श्री जिन बिम्ब वेग ले आव ।।

(३४१)

दुष्ट भाव जिनवर पर रहै, नरक दु.ख सो निश्चय सहै।
पावे नही सौख्य सुखधाम, क्षण भर नही मिले विश्राम ।।

(३४२)

सयम श्री की सुन सच बात, कनकोदरि को कम्प्यो गात।
पहुँची वेग बावड़ी थान, लाई बिम्ब कियो बहुमान ।।

(३४३)

प्रमुदित मन जिन-पूजा करी, उत्तम क्षमा-भाव मन धरी।
छोड़े सारे मलिन विकार, शुद्ध भाव कीने निरधार ।।

(३४४)

संयम सहित बहुत दिन गये, आयु निषेक सु खिरते भये।
मरण काल लीनो संन्यास, उपजी जाय सुरग आवास ।।

(३४५)

उत्तम भई देव अंगना, मन वांछित सुख भोगे घना ।
देवी आयु पूर्ण जब करी, राय महिन्द्र सुता अवतरी ॥

(३४६)

जिनवर बिम्ब घडी बाईस, जल सभाधि गत कीनें ईश ।
ताते तू उतने ही वर्ष, रही वियोगिनि पति अपकर्ष ॥

(३४७)

पूरव पाप किये अति बुरी, आयो पाप उदय सुदरी ।
ऐसो करम न कीजो कोय, बाढै पाप अधिक दुख होय ॥

(३४८)

जैन धरम की निंदा करै, सो भव-वन में भटकत फिरै ।
अब पुत्री ! मन को तज शोग, शीघ्र होय स्वामी सयोग ॥

(३४९)

भुगतो पुत्र तनो सुख घनो, मिलिहै सकल कुटुम तुम तनो ।
साधु वचन सुन पाई धीर, तृषा जाय ज्यो पीवत नीर ॥

(३५०)

शोक सबै छाँडो तिहिं बार, अमृत मुनि वाणी निरधार ।
नमस्कार करि आगे चली, गुफा एक तहँ देखी भली ॥

(३५१)

दीर्घ बहुत चौडाई घनी, सखी सहित ठहरी अंजनी ।
विविध फूल-फल दासी लेय, भोजन योग्य कुँवरि को देय ॥

सिंह-आक्रमण

(३५२)

धर्म-कथा को करै बखान, निवसैं गुफा निरजन थान।
ठहरत भये दिवस दो चार, आयो सिंह गुफा के द्वार ॥

(३५३)

महा दुष्ट देख्यो विपरीत, शका चित्त भई भयभीत।
गुफा माँहि सुन्दरि ले दई, दासी उडी अकाशे गई ॥

(३५४)

गगन-पंथ रोवे दुख भरी, हे विधि ऐसी काहे करी।
सुन्दरि लाड-प्यार करि बड़ी, दैव वशात् सिंह मुख पड़ी ॥

(३५५)

अधिक विलाप करै अकुलाय, फिरे गगन मे नहि ठहराय।
मणीचूल नामक वन देव, रत्नचूलिका पूछे भेव ॥

(३५६)

हे स्वामिन् को रही पुकार, ताको मो सों कहो विचार।
मणीचूल पत्नी से कहे, महिला युगल गुफा मे रहे ॥

(३५७)

सुदरि एक गुफा मे धरी, दूजी गगन-पंथ सचरी।
रोक्यो सिंह गुफा को द्वार, ता कारण यह करै पुकार ॥

(३५८)

गुफा माँहि याकी सखि रहै, तासु वियोग-अग्नि मैं दहै।
सुनी देव की देवी बात, करुणा पूर्ण भयो तसु गात ॥

(३५९)

स्वामि जाय सिंह वध करो, अबला द्वय का संकट हरो।
देवी के कर वचन प्रमान, मणीचूल पहुँचो तिहिं थान ॥

(३६०)

अष्टापद को रूप बनाय, चौपद सिंह को देय डराय।
जाय गुफा मुख ठाडो भयो, करि आडम्बर आगे गयो ॥

(३६१)

मार्‌यो सिंह उडाई क्षार, मुक्त भयो गह्वर को द्वार।
सिंह पछाड़ देव गृह गयो, मधुमाला मन हर्षित भयो ॥

(३६२)

उतरी गगन गुफा मे गई, निज स्वामिनि को बाहुन लई।
दासी कहे अजनी सुनो, पुण्य उदय आयो तुम तनो ॥

(३६३)

भक्षणार्थ आयो सिंह क्रूर, कियो देव ने सब भय दूर।
भली बात धर्महिं ते होय, भूत-पिशाच न पीडै कोय ॥

(३६४)

धर्म एक जग मे आधार, धर्मी जन पावै शिव-द्वार।
धर्म सहाय सर्प हो हार, धर्म सहाय सिंह हो स्यार ॥

(३६५)

धर्म-कल्पतरु जो नर सेय, मन वाँछित फल तुरतहिं लेय।
दुख न सहे धर्म की साख, पुत्री धर्म एक मन राख ॥

(३६६)

धर्म-कथा दोऊ मिल कहें, सुख सों गुफा निरजन रहें।
मुनिवर के गुण-गायन करे, वचन सुने ते निश्चय धरे ॥

हनुमान-जन्म

(३६७)

अशुभ बीत शुभ आयो पर्व, सपत्नीक आयो गन्धर्व।
नृत्य-गान सगीत सुनाय, अजनि मधु को मन बहलाय ॥

(३६८)

तन घुमाय ज्यो चक्र कुम्हार, नृत्य दिखाये विविध प्रकार।
यक्ष-यक्षिणी पूजा करी, अपनी राह चले तिस घरी ॥

(३६९)

सखी कहे जानों अंजनी, या विभूति सब पुण्यहि तनी।
आगें नाचे सुर-किन्नरी, नाचत गावत पाँयन परी ॥

(३७०)

अजनि मन में उपज्यो भाव, जिनवर बिम्ब रच्यो तिहिं ठाँव।
अष्ट द्रव्य ले पूजा करी, मन में अति प्रसन्नता भरी ॥

(३७१)

इह विधि अवधि धरम में गई, प्रसव-वेदना उठती भई।
शुभ दिन योग लगन नक्षत्र, कुँवरि गर्भ तें निकस्यो पुत्र ॥

(३७२)

गुफा माँहि अति भयो उजास, मानो रवि कीनो परकाश।
रूप-कला गुण लह्यो न पार, कामदेव सुन्दर अवतार ॥

(३७३)

दिनकर कोटि दिपैं तसु देह, सोलह कला चन्द्र-मुख येह।
तेज पुज दीसे वरवीर, महा वज्रमय चर्म-शरीर ॥

(३७४)

अजनि देख बाल की देह, मन में भयो विपाद सनेह।
भवनोत्सव मैं करती घनें, दैव सयोग गुफा मे जने ॥

(३७५)

निर्जन वन मे रहियो आन, आवत देख्यो एक विमान।
कै यहु मित्र, शत्रु है कोय, दिव्य पुत्र किमि रक्षा होय ॥

(३७६)

घनें कष्ट पूर्यो आधान, महा अरण्य जन्म को थान।
विधिना सकट पर्यो कुमार, किस विधि हो शिशु को उद्धार ॥

(३७७)

गगन माँहि उड रह्यो विमान, गुफा द्वार पै अटक्यो आन।
मन मे चिते खेचर ताम, कौन यती ठहरो इह ठाम ? ॥

(३७८)

गुफा माँहि अवलोक उजास, मानो दिनकर किरण-प्रकाश।
मन में अतिशय अचरज भयो, उतरि विमान भूमि पर गयो ॥

(३७९)

देख्यो कुँवरि गुफा मे वास, बल-गुण लक्षण जान्यो तास।
विद्याधर मन मे यो कहै, वन देवी इस वन में रहै ॥

(३८०)

उतरि गगन तै ठाडो भयो, भार्या सह गह्वर में गयो।
मधुमाला आवत देखियो, उच्चासन बैठन को दियो ॥

मातुल-मिलाप

(३८१)

विद्याधर बोल्यो हे मात ! कहो आपनी हमसों बात।
तुम हो कौन ? तुम्हारो धाम, माता-पिता कौन तुम नाम ? ॥

(३८२)

बीहड वन जो अति भयभीत, बाधक विकट बसै विपरीत।
एकाकी तुम विन आधार, रहो गुफा में कौन प्रकार ? ॥

(३८३)

विद्याधर की सुनि कै बात, दासी बोली सुनियो तात।
पूछो भेद सबै तुम भलो, सो सब सुनो कहो पाछिलो ॥

(३८४)

नगर महेन्द्र बसै सु विशाल, तहँ महेन्द्र खेचर भूपाल।
हृदवेगा सोहै तिन प्रिया, नाम अजनी ताकी धिया ॥

(३८५)

पुटभेदन प्रहलाद नरेश, त्रिया केतुमति नाम विशेष।
ताके आत्मज पवन कुमार, रूपवत गुणवत अपार ॥

(३८६)

लका चले पवन बलवीर, ठहरे मान सरोवर तीर।
देख्यो चकवा चकई विछोह, काम-वाण से व्याकुल होह ॥

(३८७)

तजि के सकल सैन्य परिवार, गयो गुप्त निज रमणी द्वार।
कर सयोग दियो रति-दान, गये पवन पुन लका थान ॥

(३८८)

सुन्दरि योग गर्भ तहँ रह्यो, भेद सासु केतुमति लह्यो।
दियो कलक पाप मति बुरी, हाथ पकड काढ़ी सुन्दरी ॥

(३८९)

अजनि गई पिता के थान, तिहिं पुनि काढी कर अपमान।
सव व्यवहार पाछिलो जान, यातै अजनि है यह थान ॥

(३९०)

दासी तै यह सुनि सब बात, भयो कलेश पसीज्यो गात।
खेचर कहे सुता तुम सुनो, निज परिचय मै तुम सों भनो ॥

(३९१)

द्वीप हनूवर उत्तम थान, भूपति तासु विचित्र सुजान।
तासु त्रिया घर सुन्दर माल, प्रतिसूरज है ताके बाल ॥

(३९२)

अंजनि सुनत भयो सुख घनो, जब जान्यो मामा आपनो।
उठि के वेगि पसारे हाथ, कियो रुदन भेंटी भरि हाथ।

(३९३)

सत्य-वचन प्रति सूरज कह्यो, सुन्दरि हिये बहुत सुख लह्यो।
पूँछी मातुल कर उपचार, मगल-कुशल बात व्यवहार ॥

(३९४)

शीघ्र ज्योतिषी लियो बुलाय, जन्म कुंडली ली बनवाय।
बरस-मास-तिथि-दिन नक्षत्र, लिखो जन्म बालक को पत्र ॥

(३९५)

कहे ज्योतिषी सुनुहु सुजान, बैठे रवि अति ऊँचे थान।
चैत्र मास अष्टमि सित पक्ष, श्रवण नखत शिशु जयो सुलक्ष ॥

(३९६)

ग्रह नक्षत्र बैठि शुभ राश, काल कुजोग न दीखे पास।
पुत्र अधिक बलंवंत सुजान, इसी देह पावै निर्वान ॥

(३९७)

जान्यो वचन ज्योतिषी तनो, मन आह्लाद सु उपज्यो घनो।
मन वाँछित धन दीनो दान, गयो ज्योतिषी अपने थान ॥

हनुवर द्वीप गमन

(३९८)

प्रतिसूरज तब कहै विचार, हनूद्वीप अब चलहु कुंवारि ।
भेटो सब मातुल परिवार, जन्म महोत्सव करो अपार ।।

(३९९)

सुनी बात बोली अजनी, मातुल बात कही मम तनी ।
करो न देर ले चलो विमान, चलौ वेग हनूद्वीप महान ।।

(४००)

रच विमान सुदन्र सुविशाल, घटा घुघरू मोतिन माल ।
हीरा मानक कचन चुनी, आन्यो तहाँ जहाँ अंजनी ।।

(४०१)

तिहिं थानक आये वनदेव, अजनि भक्ति करी स्वयमेव ।
णमोकार मत्र मन ध्याय, पुत्र सहित तहँ बैठी जाय ।।

जाको राखे साईयां……

(४०२)

उड्यो विमान उच्च आकाश, पाँचो जन-मन भये विकाश ।
बालक खेलत उछल्यो हात, पर्वत ऊपर भयो निपात ।।

(४०३)

फूटो पर्वत भई आवाज, मानहु चकिया पीस्यो नाज।
खेले भूमि अंजिनी नद, मानहु धरती ऊग्यो चद ॥

(४०४)

भू पै पर्‍यो देखि सुकुमार, विलख अजनी करी पुकार ।
अहो पुत्र ! दीनो दुख मोहि, जीवित कब देखूंगी तोहि ॥

(४०५)

रुदन सुनत मातुल दुख भर्‍यो, पर्‍यो कुमार उतरि तहाँ गयो ।
देखी शिशु की क्रीड़ा भली, हाथ-पाँव चूसे अङ्गुली ॥

(४०६)

देख्यो थान जहँ पड्यो कुमार, पर्वत चूर भयो सब क्षार ।
जान्यो कुँवर महा बलवीर, पुण्यवत यह चरम शरीर ॥

(४०७)

लियो उठाय हर्ष अति भयो, धर्‍यो विमान शीघ्र तँह गयो ।
पुत्र अजनी दीनो जाय, शीश चूम रहि कठ लगाय ॥

(४०८)

उपज्यो प्रेम प्रफुल्लित देह, अग्नि लगे ज्यौं बरसै मेह ।
चुम्बन करती बारम्बार, उपज्यो पुत्र जगत आधार ॥

जन्म-महोत्सव

(४०९)

गयो विमान हनूवर द्वीप, मेल्यो उपवन-भवन समीप।
प्रतिसूरज जब यह मत कियो, भेद नगर लोगनि को दियो ॥

(४१०)

रोपहु ध्वजा महल बाजार, घर घर बाधो बन्दनवार।
आयो सभी कुटुम परिवार, मातुल गृह ले चलो कुमार ॥

(४११)

बाजे नौबत नाद निशान, चारण गावें विरद बखान।
करि उछाह आगे हो लई, पुत्र सहित जिन मन्दिर गई ॥

(४१२)

बालक जनम महोत्सव भयो, बहुत दान बन्दीजन दयो।
तीर्थङ्कर पूजे धरि भाव, मन वाँछित अति कियो उछाव ॥

(४१३)

मिल कर सब नें कियो विचार, नाम दियो तसु 'हनू' कुमार
अजनि बालक सखो समेत, निवसै त्रय ननिहाल निकेत ॥

पवन-प्रत्यावर्तन

(४१४)

अंजनि मातुल के घर रई, सुनहु कथा जो आगे भई।
गयो पवन दशमुख की सेव, रह्यो बहुत दिन लंका एव ॥

(४१५)

रावण से तब आज्ञा पाय, चले पवन निज गृह हरषाय।
पुटभेदन जब गये कुमार, आयो राज बधावो द्वार ॥

(४१६)

खबर दूत राजा को दई, पुत्र आपको आयो सही।
सुनी बात नृप को सुख भयो, दान-मान ताको बहु दयो ॥

(४१७)

सज गई नगरी सज गये द्वार, घर घर बाँधे बन्दनवार।
भेरी और निशान समेत, चले राय सुत स्वागत हेत।

(४१८)

थाली हाथ दही अरु दूब, गावत चली नारियाँ खूब।
माथ चूम पुटभेदन राय, रहे पवन को गले लगाय।

(४१९)

कुशल क्षेम बूझी सुखसार, पहुँचे मन्दिर पवनकुमार।
प्रथम पौर की सीढी चढे, असकुन देख नही पग बढे।

(४२०)

ताते जिनवर मन्दिर आय, देव शास्त्र गुरु नमन कराय।
एक घडी लीनो विश्राम, मात-पिता के पहुँचे ठाम ॥

(४२१)

भेटी माता सह परिवार, बूझी कुशल बात व्यवहार।
सब जन अति सन्तोषित भये, पवनञ्जय अन्तःपुर तब गये ॥

वियोगी पवन की अन्तर्वेदना

(४२२)

देखो सूनो सब आवास, ऊँची-नीची लेंहि उसाँस ।
बूझो मित्र त्रिया कित गई, मेरे मन अति चिन्ता भई ।।

(४२३)

दृष्टि दिखाई न देवे नार, सूनो घर अरु शयनागार ।
अन्तःपुर वासी नर एक, कहो हाल सब पिछलो नेक ।।

(४२४)

भयो पवन सुन विकल शरीर, चिन्ता व्यापी अधिक प्रवीर ।
पवन कहे सुन मित्र विचार, चलो नगर माहेन्द्र कुमार ।।

(४२५)

अजनि बिन मुझ रहो न जाय, दाहे देह बहुत अकुलाय ।
दोऊ मित्र चले तत्काल, मात-पिता नहिं जानो हाल ।।

(४२६)

कालमेघ गज होय सवार, युगल सखा पहुँचे ससुरार ।
राय महेन्द्र आगमन जान, लेन कुंवर को कियो प्रयान ।।

(४२७)

कर सन्मान भवन में ल्याय, कनक सिंहासन पर बैठाय ।
घड़ी एक श्वसुर ढिग रह्यो, उठे पवन गृह भीतर गयो ।।

(४२८)

दासी सों यो पूंछन लगे, कहाँ अजिनी हे सुभगे ? ।
दासी सुन बोली तिंहि वार, कह्यो पाछिलो सब व्यौहार ॥

(४२९)

क्रमशः सुनी पवन सब बात, भयो हृदय पर वज्राघात ।
सास श्वसुर को भेद न दयो, गुप्त कुँवर गढ बाहर भयो ॥

(४३०)

दियो मित्र को घरे पठाय, मात-पिता मत कहियो जाय ।
मित्र प्रहस्त कियो प्रस्थान, पवन गयो वन निर्जन थान ॥

(४३१)

महा अरण्य देखियो जहाँ, दिनकर किरण न प्रसरै तहाँ ।
उत्तम क्षमा करी कर जोर, वन मे हाथी दीनो छोर ॥

(४३२)

सघन वृक्ष छाया हो रही, रात दिवस तहँ सूझे नही ।
पवनञ्जय तिस भीतर गयो, बैठि तहाँ दृढ आसन लयो ॥

(४३३)

ले सन्यास दृष्टि नासाग्र, मन-वच-काय किये एकाग्र ।
अजिनि खबर देय जब कोय, ग्रहण अन्न-पानी तब होय ॥

(४३४)

हाथी स्वामी भक्ति वशात्, फिरै पास ही दिन अरु रात ।
स्वामी की वह रक्षा करै, दुर्जन जीव न ढिग सचरै ॥

पवन प्राप्ति के प्रयास

(४३५)

मित्र गयो पुटभेदन थान, मात-पिता सों कियो बखान ।
समाचार सब क्रम से कह्यो, मात-पिता सुन दुख अति लह्‌यो ।।

(४३६)

राजा कहै प्रहस्त सुन बात, तुमते भयो कुँवर को घात ।
छोड अकेलो वन हि कुमार, मित्र योग्य नहिं यह व्यौहार ।।

(४३७)

कहे मित्र राजा सुन येहु, झूठो दोष नही हम देहु ।
जिस वन बिछुरे पवन कुमार, चलो तात ! उस अरणि मझार ।।

(४३८)

राजा पत्र दये सब लोक, मेले विद्याधर धर शोक ।
निकले ढूंढन हेतु समस्त, आगे-आगे चले प्रहस्त ।।

(४३९)

देखे वन पर्वत असमान, नदी गाँव को नाही मान ।
सिंह गुफा देखी धर ध्यान, दिठि नहिं परे कुँवर को थान ।।

(४४०)

प्रतिसूरज ने पत्री दई, नगर महिन्द्र पहुँचती भई ।
पहुँचो दूत जहाँ प्रहलाद, बाँचत लिखो भयो आह्लाद ।।

(४४१)

कछु यक चिन्ता छोडो शोक, पवनञ्जय ढूंढे सब लोक ।
सघन वृक्ष वन उत्तम छाँह, खेचर एक विराजो ताँह ॥

(४४२)

देखत ही हस्ती दिठि गई, काल-मेघ पवनञ्जय सही ।
सघन वृक्ष बिच पवन कुमार, फिरै सुहस्ती बारम्बार ॥

(४४३)

घडी एक विश्राम न लेय, दुष्ट जीव को जान न देय ।
सब राजा मिल करै विचार, हाथी की चतुराई निहार ॥

(४४४)

गज विलोक कीनो निरधार, इस ही वन है पवन कुमार ।
विद्याधर तहँ एक प्रवीण, चलो सु-गज करिबे आधीन ॥

(४४५)

रची एक हथिनी तत्काल, मायामयि गजगामिनि चाल ।
ताहि देख गज कामी भयो, पवन छोड हथिनी सग गयो ॥

मधुर-मिलन

(४४६)

देख्यो सुत राजा प्रहलाद, पायो मन मे अति आह्लाद ।
चूमै माथो बारम्बार, ध्यान मग्न देख्यो सु-कुमार ॥

(४४७)

राजा कहे-पुत्र सुन बात, खोलो नैन खडे तुम तात ।
ध्यान योग तुम नाही काल, उठि के वेग मिलो हे बाल ।।

(४४८)

हाथ-पाँव-तन रहे सुखोय, जैसे विधु पाथर को होय ।
मीचे नैन न बोले बात, हालै नही एक क्षण गात ।।

(४४९)

रहे बुलाय पिता सब लोग, बोले नही रहे धरि योग ।
चिंतै मन मे अति दुख पाय, तो लौ प्रतिसूरज प्रकटाय ।।

(४४०)

भेटि नृपति प्रतिसूरज कहे, सुत सह सुन्दरि मम गृह रहे ।
सुनकर प्रतिसूरज के बैन, पवन उघारे अपने नैन ।।

(४५१)

सावधान हो बूझी बात, कहो अजिनी की कुशलात ।
प्रतिसूरज सब व्योरो कह्यो, पवन आदि दे सब सुख लह्यो ।।

(४५२)

राजा लोग सुसज्जित भये, हनुवर द्वीप पवन सग गये ।
मिले सभी हनुमत कुमार, भयो महोत्सव मगलचार ।।

(४५३)

प्रतिसूरज कीनो सन्मान, कई दिन ठहराये महमान ।
भोजन वस्त्र देय उपहार, प्रात सब कर गये बिहार ।।

(४५४)

प्रतिसूरज घर पवन नरिन्द्र, भोगे भोग शची ज्यो इन्द्र।
बली पुत्र देख्यो सुकुमाल, सुख मे जात न जाने काल ॥

वरुण-पराजय

(४५५)

भार्या सह पवनञ्जय रहे, आय दूत रावण को कहे।
प्रतिसूरज अरु पवनकुमार, चलो वेग तुम हो असवार ॥

(४५६)

दशमुख लिखित पत्र अनुसार, सजी सैन्य बहु विविध प्रकार।
दियो राज्य हनुमन्त बुलाय, देश नगर सौपे हरषाय ॥

(४५७)

मात-पिता सों कहे कुमार, बिदा देहु मो पहली बार।
दशमुख की मैं सेवा करो, देश-धर्म पर तन परिहरो ॥

(४५८)

सुने वचन तब बोलो वायु, नहिं सग्राम योग्य तुम आयु।
बालक पुत्र महासुकुमार, तेरो गमन नही व्यौहार ॥

(४५९)

कर्कश वचन पिता तुम कहो, मो बालक को भेद न लहो।
बाल-सूर्य जब उदय कराय, अन्धकार सब जाय पलाय ॥

(४६०)

बालक सिंह होई अतिशूर, हस्ती घटा करै चकचूर।
सघन वृक्ष वन अति विस्तार, करे भस्म केवल चिनगार॥

(४६१)

बालक जो क्षत्री को होय, शूर स्वभाव न छोडे सोय।
मातुल-पिता करहु परतीत, आऊँ वेग वरुण को जीत॥

(४६२)

हनु सुन वचन पवन सुख लयो, कुंवर हस्त लै बीडा दयो।
वचन पुत्र तेरे परमान, चलो सैन्य सज लंका थान॥

(४६३)

पितृ प्रदत्त शस्त्र जब लये, तब हनुमत जिनालय गये।
देव-शास्त्र-गुरु वदन कियो, सब कुटुम्ब मिलि भोजन कियो॥

(४६४)

गमन हेतु हनु कियो प्रयान, हाथी घोडे धरे पलान।
मिले पिता मामा परिवार, चले लक प्रति हनू कुमार॥

(४६५)

भये शकुन शुभ चलती बार, बायें देवी करै फिकार।
बायें तीतर बाये व्याल, बायें सारस सुड सयाल॥

(४६६)

बायें घुघुआ घूमे घने, फल स्वरूप यह यशस्वी बनें।
बायें सुनहा ठोके कंध, मिलें कुशल सब भाई बध॥

(४६७)

बायें सिंह गर्जना करे, बाये गर्दभ स्वर अति भरे।
आई फिर बाये लोखरी, बाँधे शत्रु हनू इक घरी ॥

(४६८)

कुंभ-कलश दोऊ जल भरे, त्रिया सभारे शिर पर धरे।
पन्नग मल्ल लोह ना हिने, ऐते शकुन भये दाहिने ॥

(४६९)

भये शकुन रण-भेरी बजी, चली जाय सब सेना सजी।
रहे विमान गगन सब छाय, सूरज किरण न कहूँ दिखाय ॥

(४७०)

वेगि लंक पहुँचे हनुमत, रावण स्वागत कियो तुरत।
सन्मुख आय विनय अति कियो, कंठ लगाय हनू भेंटियो ॥

(४७१)

अर्द्धासन बैठन को दियो, दे तँबोल सन्मानित कियो।
रूप तेज अति देख्यो घनो, भयो हर्ष मन रावण तनो ॥

(४७२)

दिन गत भयो अस्तगत भान, सब मिल हर्षाये हनुमान।
पछी गये आपने थान, मुनिवर नाथ रहे धरि ध्यान ॥

(४७३)

गई रयन हो गयो प्रकाश, अंधकार को भयो विनाश।
सेना सहित चले दसशीष, वरुण नगर घेरयो चहुँ दीश ॥

(४७४)

वरुण राय सुभटन से कहे, पुत्र शतक तव साथे रहे।
सेना वाहन ले सब चढे, वेग आय दशमुख से भिड़े॥

(४७५)

स्वामी से ले ले आशीष, दोऊ दल काटें रिपु शीश।
करै परस्पर शस्त्र प्रहार, ज्यो वसत खेलें हुरिहार॥

(४७६)

वरुण तनय परचड कुमार, दशमुख सैन्य करी सहार।
रावण घोर सकट मे पर्यो, दीन्ही आज्ञा हनु शिर धर्यो॥

(४७७)

डारी जाय पाँस लग्गूर, बाधे कुँवर कियो दल चूर।
कपिध्वज जब पेल्यो रथ साजि गयो वरुण तब नगरी भाजि॥

(४७८)

सुनी नृपति की ज्यो ही हार, हुआ शोरगुल नगर मझार।
ढाहे कोट पौर आवास, लूटी वस्तु सुभट चहुँ पास॥

(४७९)

हनुमत बन्दी वरुण बनाय, सन्मुख ताहि लकपति लाय।
भयो वरुण को चित्त उदास, नत मस्तक हो खडो हताश॥

(४८०)

कहे वरुण सों यो लकेश, निरपराध हो आप विशेष।
क्योकि पीठ नहिं आप दिखाई, क्षत्री कुल की रीति निभाई॥

(४८१)

सुनी वरुण रावण की बात, छोड्यो शोक हरषियो गात।
हाथ जोड रावण से कह्यो, हम अपराध कर्‌यो तुम सह्यो ॥

(४८२)

तदनन्तर नृप हनु पै गयो, दीन वचन यों सन्मुख कह्‌यो ।
मुझ पर कृपा करहु हनुमान, मुक्त करो सुत दया निधान ॥

(४८३)

वरुण वचन सुनकर हनुमत, भये दया पूरित अत्यत ।
फास लागुरी लई बहोर, पुत्र शतक सब दीन्हे छोर ॥

प्रणय–बन्धन

(४८४)

देख्यो राय हनू बलवीर, रूप-कला-गुण-साहस धीर ।
दीनी पुत्री कर उत्साह, अगनि साक्ष्य दे भयो विवाह ॥

(४८५)

दशमुख दियो वरुण सन्मान, पुडरीक पुर कियो प्रदान ।
दलबल सैन्य अधिकतम दयो, रावण लका वापिस गयो ॥

(४८६)

हनूमान को कर वहु मान, धन धान्यादिक किये प्रदान ।
चन्द्रनखा पुत्री परिणाय, जो अनङ्ग पुष्पा कहलाय ॥

राज-कलश ढारे बहु मान, कुण्डलपुर दीनो शुभ थान।
रावण बोले सुन हनुमत, मम सेवा कीन्ही अत्यन्त ।।

(४८८)

तुम समान नाही बलवड, सेना शत्रु करो शत खड।
कठिन काम जो करै न कोय, वह सब क्षण मे तुम ते होय ।।

(४८९)

हनूमान को मस्तक नाय, मिले अक भरि दशमुख राय।
गयो वेग कुण्डलपुर थान, करै राज्य सो इन्द्र समान ।।

(४९०)

अन्तःपुर मे भोगे भोग, राखे सुखी नगर के लोग।
सेवा करे विविध भूपाल, सुख मे जात न जाने काल ।।

(४९१)

एक दिवस बैठे हनुमान, दूत एक आयो तिहिं थान।
करि जुहारु वह ठाडो भयो, लिखित पत्र हनुमन्तहिं दयो ।।

(४९२)

पुर किष्किधा द्वीप विशाल, राज करै सुग्रीव नृपाल।
ताके घर है सुन्दर नार, रूप-कला गुणवन्त अपार ।।

(४९३)

ताकी पुत्री पदमावती, विविध कला शुभ लक्षणमती ।।
तास रूप लावण्य निहार, करो विवाह चढ़ि हो असवार ।।

(४६४)

देख्यो हनू रूप समुदाय, पूछे मत्री सेवक राय।
सब कुटुम्ब की आज्ञा पाय, किष्किधापुर पहुँचो जाय॥

(४६५)

सब सुग्रीव सुन्यो व्यौहार, कियो बहुत शुभ-शिष्टाचार।
सह परिवार सामने गयो, कंठ लगाय हनू भेटियो॥

(४६६)

वेदी मडप रची विशाल, बाँधे तोरण मोतिन माल।
वर-कन्या हथ-जोरो भयो, विज्ञ साक्षि वैश्वानर दयो॥

(४६७)

झारी हाथ धरी सुग्रीव, हनु अञ्जुलिजल भर्यो अतीव।
पुत्री हस्ती हेम सुजान, ग्राम-देश-पुर-पट्टन थान॥

(४६८)

सज्जन जन बैठे तिहि ठाम, दान मान दे राख्यो नाम।
यथा युक्त कीनो आचार, गये कुड पुर हनू कुमार॥

(४६९)

करे राज अति इन्द्र समान, देश नगर गढ ग्राम निधान।
दुर्जन कोई धीर न धरे, भूचर खेचर सेवा करें॥

(५००)

जिनवर देव धर्म गुरु भक्ति, मल मिथ्यात्व व्यसन सब त्यक्त।
विधि पूर्वक दे चारों दान, नित्प्रति पात्र कुपात्र पिछान॥

(५०१)

व्रत-तप शीलाचार उपास, देव-शास्त्र-गुरु प्रति विश्वास ।
सिद्धालय पहुँचे जे जिना, तिनकी पूजा करे वन्दना ।।

(५०२)

चोर चुगल नहिं पलभर जियें, गाय सिंह जल साथहिं पियें ।
पालै प्रजा न्याय आचरै, हनू राज्य कुण्डलपुर करै ।।

सन्देश-वाहक

(५०३)

सभा सहित बैठे हनुमन्त, दूत एक तहँ आय तुरन्त ।
किष्किधा सुग्रीव नरेश, लिखित पत्र दीनो सन्देश ।।

(५०४)

बाँचो लिखो लेहि हनुमन्त, भयो शोक अति तव मन चिन्त ।
खरदूषण को सुनो निपात, अरु सवूक बदि की बात ।।

(५०५)

मन मे शोक कियो अति घनो, मरण जानियो स्वसुरा तनो ।
पुष्प अनग बहुत बेजार, पिता पिता कर रही पुकार ।।

(५०६)

स्वजन बन्धु समझावन आय, राखौ चित्त स्वस्थ करि ठाय ।
करि स्नान देव पूजिया, कीनी सबै पिता की क्रिया ।।

(५०७)

दूजे दिन इक आयो दूत, दियो पत्र इक पवन-सपूत।
सीता-हरण आदि सब बात, कही राम लछमन कुशलात॥

(५०८)

रामचन्द्र कृत जो उपकार, प्रति सुग्रीव कह्यो व्यवहार।
तारा मुक्त करी श्रीराम, सो सब सुनी बात अभिराम॥

(५०९)

हनूमन्त मन मे चिन्तयो, रामचन्द्र शुभ कारज कियो।
अपहर्ता को करि सहार, सुग्रीवहि सौंपे अधिकार॥

(५१०)

करे काम जो राघव कहे, क्षत्रिय धर्म हमारे रहे।
करहि न जो नर प्रत्युपकार, बने हास्य अपयश भंडार॥

(५११)

घोर कृतघ्नो वह कहलाय, तासु भार धरती थर्राय।
जीव-दया विन धर्म पलाय, मानुप जन्म निरर्थक जाय॥

(५१२)

दलवल सेना सजी अपार, किष्किंधापुर गये कुमार।
मिले आय सुग्रीव नरिन्द, वूझी कुशल भयो आनन्द॥

(५१३)

भूचर-खेचर जेते राय, हनू देख मन कियो उपाय।
तथा जुगल भेटियो लोग, समाधान कह योगायोग॥

(५१४)

सब राजा एव सुग्रीव, गये राम ढिग हनु चिरजीव ।
रामचन्द्र देख्यो हनुमन्त, तजि आसन उठियो विहसत ॥

(५१५)

हनू लगायो चरननि माथ, रामचन्द्र भरि भेटे हाथ ।
भयो हरष अति अग नमाय, अर्द्धासन दीनो रघुराय ॥

(५१६)

अति सकोचित हो हनुमत, बैठे राम समीप तुरन्त ।
अति विनम्र हो बारम्बार, पूछी कुशल प्रीति व्यौहार ॥

(५१७)

राजा सभी भये एकत्र, सीता की चिन्ता सर्वत्र ।
हँस बोले श्री लखनकुमार, जीतहु लका किसी प्रकार ॥

(५१८)

मारो रावण ले धनु-बान, ल्याओ सिया राम की आन ।
नल अगद बोले सुग्रीव, कारज धीरे होय सदीव ॥

(५१९)

बुबे बीज धीरे फल ल्याय, धीरे मुनिवर शिवपुर जाय ।
धीरे विद्या सीझे रिद्धि, धीरे होय काम सब सिद्धि ॥

(५२०)

पहिले चुन लो नेता एक, तब कछु काम करहु सविवेक ।
एक साथ बोले सब कोय, कारज यहै हनू तें होय ॥

(५२१)

दशमुख राखे याको मान, सिंहासन पर दे-स्थान ।
बोले हनू सुनो हे तात, सिर माथे पंचन की बात ।।

(५२२)

सुनो सुनो हे रघुपति राय, ल्याहों सिया वेग ही जाय ।
बोले राम सुनो हनुमत, तुम समान नहिं पौरुष वंत ।।

(५२३)

बालापन गिरि कीनो छार, बाधे सौ सौ वरुण कुमार ।
तुम प्रचण्ड अति साहस धीर, क्षत्रिन मध्य महा वरवीर ।।

(५२४)

क्रूर-कपट नहिं मन में भाव, पर उपकारी शुद्ध स्वभाव ।
करहु शीघ्र लका प्रस्थान, कारज सिद्ध करो हनुमान ।।

(५२५)

सीता प्रति संदेशो कहें, राम-लखन किष्किधा रहे ।
राम दुखी तुम तने वियोग, विष समान छोडे सब भोग ।।

(५२६)

रात-दिवस लें तुम्हरो नाम, घडी एक नहिं लें विश्राम ।
कहियो सिया छुड़ाऊँ तोय, सफल जन्म तब मेरो होय ।।

(५२७)

त्रिया हरण पै कछु नहिं करै, ताके भार धरणि धर हरै ।
और संदेशो कहो कुमार, जपो मंत्र निशि-दिन नवकार ।।

(५२८)

जिनवर वचन हिये मे धरो, मल मिथ्यात्व सबै परिहरो।
रहित अठारह दोष सुदेव, गुरु-निर्ग्रन्थ शास्त्र की सेव॥

(५२६)

वाणी जिनवर मुख तें खिरी, इनकी दृढता चित में धरी।
सयम शील सकल आचार, दान-भाव श्रावक व्यौहार॥

(५३०)

त्यागो मत, जो जाय शरीर, सिया सदेशो कहियो वीर।
हीरा रतननि कुन्दन जरी, निज निशानि दीनी मुन्दरी।

उपसर्ग-निवारण

(५३१)

हनू राम सों भयो जुहार, मिले स्वजन बान्धव परिवार।
णमोकार उच्चारण कर्‌यो, बैठि विमान गगन उड़ि गयो॥

(५३२)

लका-गढ परवत वन माल, लाँघी नदी-सरोवर-ताल।
जाय विमान गगन पथ चढ्‌यो, हनू दृष्टि दधिमुख वन पर्‌यो॥

(५३३)

शार्दूल-चीते विकराल, घूमें हिरन सुंअर अरु स्याल।
करे शव्द अति वन में घनें, देखे चारण मुनि दो जनें॥

(५३४)

तहँ दँवार लागी चहुँ पास, पँक्षो भाग चले आकाश।
धुंआधार छायो अँधियार, हनु मुनि देखे दृष्टि पसार॥

(५३५)

देख्यो कष्ट ऋषी द्वय तनो, जल समुद्र ते लायो घनो।
अग्नि ज्वाल को दई बुझाय, भाव शुद्ध कर वंदे पांय॥

(५३६)

कियो विनय बैठे तिहिं ठाम, मुनि उपदेश दियो अभिराम।
नमस्कार कर आगे बढ्यो, हनू विमान अचानक अड्यो॥

युद्ध और परिणय

(५३७)

करै कुमार हिये में चिन्त, कै मुनिवर कै कोई मिन्त।
कै जिन-भवन शत्रु को थान, कौन हेतु सों रुक्यो विमान॥

(५३८)

मंत्री बोले सुनहु कुमार, गढ़ इक दीखे अति-विस्तार।
खाई कोट सों घिरो विशाल, घूमे यक्ष सिह विकराल॥

(५३९)

सुनत वात अति उपज्यो कोप, आयुध लयो चक्र आरोप।
राक्षस मार कर्यो जहँ छार, ताहि दुर्ग में गयो कुमार॥

(५४०)

गुफा एक देखी भयभीत, निकस्यो सिंह महा विपरीत ।
प्रखर दंत नख रोमावली, जिह्वा जिमि अग्नि-प्रज्वली ॥

(५४१)

विद्यावलि सब करि निःशेप, कियो नगर में हनू प्रवेश ।
वैभव युक्त वज्रमुख नाम, देखत ही लूट्यो सब ग्राम ॥

(५४२)

चढि आयो राक्षस करि कोप, जैसे मेघ घटा-आटोप ।
दीरघ दंत महा विकराल, आयो जहाँ अंजनी-बाल ।

(५४३)

खड़ग वाण विद्या सों भिड्यो, बदर सेना दस गुनि कर्यो ।
देख्यो राक्षस अति बलवत, मन मे कष्ट भयो हनुमंत ॥

(५४४)

कर्यो रोष वानरपति घनो, हाथ चक्र लै राक्षस हनो ।
सुनी बात लका सुदरी, मरण पिता सुन अति दुख भरी ॥

(५४५)

कुपित होय वह ठाड़ी भई, वमकत-धमकत हनु पै गई ।
खोटो वचन जु मुख तें कह्यो, मास एक मैं भूखजु सह्यो ॥

(५४६)

अब मन वाँछित पूरे काज, तुम पहुँचे मरघट को आज ।
पवन-पूत बोल्यो किलकत, जैसे मदमात्यो गजदत ॥

(५४७)

तू नारी मै हूँ नरनाथ, तो पै नही उठाऊँ हाथ।
सुन कर लंका सुदरि क्रुद्ध, तत्पर हुई करन को युद्ध॥

(५४८)

घाले सुन्दरि बाण अनेक, हनू शरीर न लाग्यो एक।
बहुत भाँति बीत्यो सग्राम, सेना सुभट न छांड़े ठाम॥

(५४९)

देख्यो पौरुष क्षत्री तनो, मन में अचरज कीनो घनो।
सुभट लड़ाई जीती घनी, भई अधीन त्रिया इन तनी॥

(५५०)

सुन्दरि देख्यो रूप कुमार, जैसो कामदेव अवतार।
काम-वाण सों वेधी गई, वीतराग देख्यो सो भई॥

(५५१)

या सग भोग भोगऊँ घनो, सफल जन्म तव ही हम तनो।
भेजो पत्र वांध मुख वाण, होवहु कत वचें मम प्राण॥

(५५२)

वाण-पत्र जव पहुँच्यो तहाँ, वाँचि ताहि हनु प्रमुदित महाँ।
तज्यो कोप अति भयो सनेह, आग लगे ज्यो वरसे मेह॥

(५५३)

वैठे हनु-सुन्दरि एकान्त, वाह्योपचारों के उपरान्त।
काम-वाण से पीड़ित भई, पिता मरण की विस्मृति लई।

(५५४)

भाई पुत्र सगो नहिं तात, सजन कुटुम्ब न पुत्री मात।
कोई किसी को सगो न होय, स्वारथ अपनो साधै सोय।

(५५५)

लका सुन्दरि पूछ्यो कंत, आये कौन काज हनुमत।
मेरे मन उपज्यो सदेह, कहो वार्ता तुम सस्नेह॥

(५५६)

बोले हनू सुनो सुन्दरी, रामचन्द किष्किधापुरी।
दशमुख हरी राम की सिया, ताहि खोजनें निकले प्रिया॥

(५५७)

बीच हमारो रुक्यो विमान, देख्यो नगर तुम्हारो थान।
मम निमित्त पितु मृत्यु नियोग, हम तुम भयो प्रीति सयोग॥

(५५८)

सुदरि बोली सुनिये कत, रावण दुष्ट महा बलवंत।
यदि तुम करहु राम की बात, शीश तुम्हारो करिहै घात॥

(५५९)

चौदह सहस सुविद्या सिद्धि, भोगे अर्द्धचक्रि की रिद्धि।
भूचर-खेचर सेवक रहे, सो क्यो बोल तुम्हारे सहे॥

(५६०)

बोले हनू सुन्दरी सुनो, कथन तुम्हारो हमने गुनो।
कीजे सुकृत पर उपकार, धर्म अफल ज्यो रात अहार॥

(५६१)

दान बिना निरफल गृह देश, ज्यों आडम्बर युत मुनि-भेष ।
यही जान कीजे उपकार, दान-शील-संयम-आचार ॥

(५६२)

लेहि क्रिया सह सम्यक् ज्ञान, होय सुयश पावै निर्वान ।
दशरथ नन्दन गुण गंभीर, पर दुख भजन साहस धीर ।

(५६३)

तिनकी सेवा उत्तम धर्म, इससे वढकर क्या सत्कर्म ? ।
व्यापो दुख-सुख हमरी देह, कारज करे राम को येह ॥

(५६४)

सुन्दरि को समझा कर भव्य, तजि वैभव धरियो कर्त्तव्य ।
धीर चित्त करि चले महंत, लका मध्य गये हनुमत ॥

विभीषण-वार्त्ता

(५६५)

देखी लका हनू कुमार, योजन सप्त दीर्घ विस्तार ।
चौडाई योजन चहुं गुनी, सघन वसी अति शोभा घनी ॥

(५६६)

कोट वुर्ज लागे आकाश, फिरि परिखा आई चहुं पास ।
सप्त द्वार कगूरे तुग, चित्त चितेरे किये अभंग ॥

राजा के सतखने निवास, धन कचन से भरे अवास।
घर घर पुण्य बधाये होंय, अन्य शब्द नहिं सुनिये कोय॥

(५६८)

पवन-पुत्र मन मे चिन्तयो, गुप्त विभीषण मदिर गयो।
द्वारपाल पहुँचाय तुरन्त, जाय कहो ठाड़े हनुमन्त॥

(५६९)

द्वारपाल गृह भीतर गयो, आये हनू नृपति से कह्यो।
बोले हर्ष विभीषण राव, अन्दर हनू वेग ले आव॥

(५७०)

पवन-पुत्र पहुँचे तत्काल, सचिव समेत जहाँ भूपाल।
आवत देख्यो अंजिनि नद, आसन छोड़ मिले सानन्द॥

(५७१)

शिष्टाचार सहित सब हाल, पूछ्यो कुशल क्षेम भूपाल।
एकहि आसन युगल नरेश, बैठे जिमि नभ चन्द्र-दिनेश॥

(५७२)

बात विचार कही हनुमत, सुनो विभीषण राय महत।
तुम्हरो कुल निर्मल सुविशाल, उदै-बाहुभये आदि नृपाल॥

(५७३)

पुत्र राज दे सयम लियो, सुर-नर खेचर पूजन कियो।
ताहि वश जे भये नरिन्द, पहुँचे मुक्ति काट भवफन्द॥

(५७४)

उपज्यो कुल रावण बलिवंड, भोगे राज्य तीनहू खंड।
सहस अठारह जिसकी नार, इन्द्रजीत सम जेष्ठ कुमार ॥

(५७५)

कियो कुकर्म ठान मति बुरी, हर लायो राघव सुन्दरी।
राक्षस गोत्न समुज्ज्वल कहयो, हर कर त्रिया कलकित कर्यो ॥

(५७६)

देहु सीख दशमुख को जाय, नारि पराई देहु पठाय।
पर नारी की इच्छा करै, अपयश पाय नरक सचरै ॥

(५७७)

कहे विभीषण हनूकुमार, मैं समझायो बारम्बार।
तजे न सिय, कीनो हठ घनो, पाप उदय आयो तिस तनो ॥

जानकी-दर्शन

(५७८)

सुनें वचन धरियो अभिमान, सीता निकट गये हनुमान।
नंदन वन देख्यो तहँ जाय, फूली फली जहाँ वन राय ॥

(५७९)

कदली जामुन आम नारिंग, दाख छुहारे सेव लवग।
कमरख कटहर कैंथ अनार, ऐला श्रीफल अपरम्पार ॥

नदी सरोवर उत्तम नीर, कुआँ बावड़ी गहर-गभीर।
फूले मध्य कमल अति घनें, मधुकर नाद करें रुनझुने ॥

(५८१)

देख्यो हनू सिया को रूप, सुर रमणी तें अधिक अनूप।
मेरु समानहि शील अडोल, निश्चय हिये देव गुरु बोल ॥

(५८२)

गये हनू तव सिया समक्ष, देख सुमुखि तब हर्षित वक्ष।
दृष्टि अगोचर कियो उपाय, बैठे शीर्ष डाल पै जाय ॥

मुद्रिका-निक्षेप

(५८३)

देखी सीता तरुवर छाँह, डारी मुदरी गोदी माँह।
पडी मुद्रिका देखे सिया, विस्मित भई जनक की धिया ॥

(५८४)

लई मुद्रिका कठ लगाय, जैसे मिले वत्स को गाय।
चन्द्र-वदन सिय भयो अनद, मानो मिले स्वयं रघुनद ॥

(५८५)

सीता कहे मुद्रिका सुनो, कहो रहस्य गूढ जो बनो।
यामे लिखो राम को नाम, लायो पुरुष कौन इह ठाम ? ॥

(५८६)

राक्षस खड़े अडे जे द्वार, हर्षित वदन देख रघु-नार।
सेवक एक गयो तहाँ धाय, कही बात रावण सों जाय॥

(५८७)

सुनहु स्वामि बात हम तनी, सीता बहुत दिवस अनमनी।
बोलत विहसत देखी आज, मन वांछित अवह्वै है काज॥

प्रलोभन और फटकार

(५८८)

सुनत बात दशमुख सुख लयो, कारज सिद्ध हमारो भयो।
मदोदरि प्रेषित सिय पास, करे कपट धरि वाग् विलास॥

(५८९)

सहस अठारह है शुभ नार, तिनमे तुम बनि हो पटनार।
यह तुम्हरो पुण्योदय होय, स्वय दशानन मोहित होय॥

(५९०)

राज-भोग भोगो सुख येहु, राम कपटिया पानी देहु।
सुनी बात मंदोदरि कही, तव सीता खिसियानी सही॥

(५९१)

कहे सिया सुन मदोदरी, तेरी बात लगे अति बुरी।
रावण महापाप को मूल, और दुःख नहि तासम तूल॥

(५९२)

जो नारी पर पुरुषहिं सेय, सुकृत शील व्रत सब तज देय।
अपयश होय न पावे सुक्ख, जनम जनम तक भोगे दु.ख ॥

(५९३)

राघव बिना और नर नाथ, ते सब भाई अथवा तात।
इह भव राम-नाम आधार, मन वच काय राम भरतार ॥

(५९४)

सुनी बात बोले कपिपती, धन्य धन्य तुम सीता सती।
कत बात जे नारी भनें, तासम पावन किसके गिने ॥

(५९५)

ऊरध वाणी सीता सुनी, हर्ष और चिन्ता मे सनी।
कौन पुरुष बोले आकाश, दर्शन देहु होय परकाश ॥

(५९६)

सुनकर हनु तब हर्षित हियो, परगट रूप आपनो कियो।
सिय को घेरें बैठी नार, तिन विच कूँदे पवन-कुमार ॥

(५९७)

मदोदरि अवलोक कुमार, मन ही मन हँसि करे विचार।
शका रहित रूप अभिमान, आयो कौन अगोचर थान ॥

श्रीराम-सन्देश

(५९८)

हनू युगल कर मस्तक दियो, नमस्कार सीता को कियो।
तुम यश वृहत् सुनो निकलक, सो प्रत्यक्ष देख्यौ नि·शंक ॥

(५९९)

तुम समान रूप नहिं नार, सयम-व्रत अरु शीलाधार।
धन्य पिता-माता जिहिं जनी, रामचन्द्र से पाये धनी ॥

(६००)

रघुपति समाचार सुनि माय, लछमन सहित हमारे ठाँय।
करैं दु:ख तुम तनो वियोग, विष सम लगें विषय अरु भोग ॥

(६०१)

रात-दिवस है तुम्हरो नाम, लेय न घड़ी एक विश्राम।
राघव कही छुडावहुँ तोय, सफल जनम तव मेरो होय ॥

(६०२)

सुनी वात तव कपिध्वज तनी, उपजी अग उमगें घनी।
वूझी सीता करि आनन्द, कहो कुशल है दशरथ नंद ?

(६०३)

राम वृतान्त हनू सव कह्यो, सीता सुनत वहुत सुख लह्यो।
देहु पुत्र मेरे सिर हाथ, हो चिरजीव लखन रघुनाथ ॥

(६०४)

समाचार जब कपिध्वज कह्यो, मंदोदरि मन अचरज लह्यो ।
धन्य राम तेरी सद् बुद्धि, हनू दूत बिन होहि न सिद्धि ॥

(६०५)

सीता कहे सुनहु सुकुमार, पिछलो कहो सकल व्यवहार ।
लछमन युद्ध करन जब गयो, सिंहनाद तब वन में भयो ॥

(६०६)

शब्द कान राघव के पर्‌यो, दशरथ नंद कोप तब भर्‌यो ।
छोडी वन में एकाकिनी, गये नाथ जब लछमन भनी ॥

(६०७)

मुझ हर लायो लंकानाथ, जानो नहीं पाछिली बात ।
गढ पर्वत सागर-असराल, लंका गढ किमि आये बाल ॥

(६०८)

बोले हनू सुनो हे मात ! कहौं पाछिली बीती बात ।
लछमन धरि बॉध्यो संबूक, खरदूषण बध कियो अचूक ॥

(६०९)

लंकापति तब बाहर गयो, बीच रूप तेरो लख लयो ।
बूझी विद्या अवलोकिनी, या वन में स्त्री किंहि तनी ॥

(६१०)

विद्या कही जनक की धिया, सीता नाम राम की त्रिया ।
रचि प्रपंच लंकपति राय, विद्या दीनी एक पठाय ॥

(६११)

सिंह गर्जना विद्या करी, राम लक्ष्मण प्रति डग भरी ।
रावण तुम को इहि विधि लाय, निर्जन थान निवास कराय ॥

(६१२)

कीनो उज्ज्वल तुम रघुवश, जैसो उज्ज्वल सुकृत हंस ।
दंडक वन फिर आये राम, तुम बिन देख्यो सूनो ठाम ॥

(६१३)

अति अकुलायँ धीर नहिं धरै, पशु पक्षिन से वूझत फिरै ।
सीता सीता रटते नाम, वन अटवी देखे सब ठाम ॥

(६१४)

शीश धुनत घूमैं श्रीराम, समाचार वूझै अविराम ।
विलखै राम आपनें चित्त, यहाँ न उपस्थित कोई मित्त ॥

(६१५)

वहुत कलेश सहैं रघुनाथ, तव तहँ आये लछमन भ्रात ।
सीता-हरण वात तिन कही, दडक वन तें निकसे सही ॥

(६१६)

कतिपय काल दिवस जव गये, सुग्रीवहिं तव आवत भये ।
रामहिं मिले दियो अति मान, किहिं कारण आए इहि थान ॥

(६१७)

सुनो वात वोले सुग्रीव, विनती एक सुनो चिरजीव ।
कष्ट आपदा उपजी घनी, ता कारण आए तुम तनी ॥

(६१८)

दुष्ट रूप धरि मोहि समान, आयो जहाँ हमारो थान।
करी बुद्धि गृहणी हम तनी, किये कपाट बद तत्छिनी ॥

(६१९)

अति परचड अधिक अभिमान, नगर माँहि हम देहि न जान।
होहु सहायक करि उद्धार, फेरि मिलै हमको निज नार ॥

(६२०)

सुनी बात रघुपति तसु तनी, मन मे करुणा उपजी घनी।
सीता हरण बात बीसरी, तत्क्षण गये किष्किधा पुरी ॥

(६२१)

मायावी सुग्रीव भगाय, दियो राज्य सुग्रीव बुलाय।
लछमन राम युगल बलवीर, किष्किंधा पुरि रहें सुधीर ॥

(६२२)

विद्याधर भूमि गोचरी, बैठि एक मत बुद्धि उच्चरी।
बहुत विचार सबनि मिलि कियो, लंका प्रति मोकूं भेज्यो ॥

(६२३)

सार्थक भयो हमारो काज, श्वसुर हमारे दीनो राज।
प्रत्युपकार न जो अब करौ, अपयश होय नरक जा परौ ॥

(६२४)

सीता सुनो भली इक वात, तत्क्षण करो रावणहिं घात।
जिन पुराण माँहि इमि भनो, प्रति केशव को कैसे हनो ? ॥

(६२५)

वाणी वीर जिनेश्वर कही, येहु कथा तुम जानहु सही।
सोता सुनी हनू की बात, हरष्यो चित्त प्रफुल्लित गात ॥

(६२६)

स्वामि देव तुम भक्त सुजान, तुमरे वचन सही परमान।
तुम सम कोउ नही संसार, काज परायो सारनहार ॥

मंदोदरी-प्रताडना

(६२७)

सुनी वात सव मंदोदरी, कपिध्वज सो वोली रिसभरी।
तुम प्रचण्ड बल अधिक अपार, वरुण पुत्र के वांधन हार ॥

(६२८)

करी कृपा अति दशमुख राय, वहिन सुता तसु दीनी व्याय।
दियो नग्र हस्ती को दान, जामाता को करि सन्मान ॥

(६२९)

कर्म नियोग पवन को पूत, सो पुनि वनो राम को दूत।
अधिक चतुर नर का नहिं करै, करम फिरावे तेसो फिरै ॥

(६३०)

सुनकर मदोदरि के वैन, कपिध्वज वोले तत्क्षण येन।
विद्याधर कुल में उत्पन्न, रावण की रमणी सम्पन्न ॥

(६३१)

इन्द्रजीत सुन मदोदरो, सो पुनि कर्म कुट्टनी करी ।
सिया कहे सुन मदोदरी, व्यर्थ नाक कटि जे है अरी ॥

(६३२)

चित्त आपने देख विचार, गर्व न कीजे इह ससार ।
भरत गर्व कीनो अति घनो, बाहुवली भीज्यो तिहि तनो ॥

(६३३)

कैइक भूपति कीनो गर्व, कैसे नाम गिनावे सर्व ।
वज्रावर्त धनुष जिस हाथ, खरदूषण को करो निपात ॥

(६३४)

श्री लछमन जी ऐसे बली, तासो नही शत्रुता भली ।
को रावण ? को लका ग्राम ? कुभकरन है किसको नाम ?

(६३५)

जब कोपे रघुनन्दन राय, तब तहँ प्रलय शीघ्र हो जाय ।
सुन बोली रावण की नारि, अहो उठी अतिवाद निवारि ॥

(६३६)

तूरि काढ हू फलन विलेई, दिन दस रामहिं जीवन देई ।
सुन कर मदोदरि के बोल, उठे हनू करिवे भूडोल ॥

सीता की पारणा

(६३७)

जितनी थी दशमुख की नार, ते दई वन ते सर्व निकार ।
सीता सन्मुख जोडे हाथ, करहु पारणा उठि के मात ॥

(६३८)

शोक-विषाद सबै परिहरो, हम पर तुम अनुकम्पा करो ।
माने वचन हनू के सिया, कर स्नान देव पूजिया ॥

(६३९)

वृहत महोत्सव जिनवर कियो, दिवस बारवे भोजन लियो ।
देख पारणा हनुमत राय, सुमन सिया पर दिये गिराय ॥

उपालम्भ

(६४०)

मदोदरि रावण प्रति गई, ब्यौरो वार बात सब कही ।
स्वामी तुम भानेज दमाद, चढि आयो सीता प्रासाद ॥

(६४१)

भेज्यो राम गर्व कर घनो, तुम को तो तृण के सम गिनो ॥
सगो सहोदर करहि न कान, नन्दन वन मे बैठ्यो आन ॥

(६४२)

हनू करे सीता सो बात, काँधे बैठि चलो हे मात !
चलहु मात मुझ देहु अशीष, ताकि मिलें तुम को तुव ईश ॥

(६४३)

बोली सिया सुनहु हनुमत, यह तो योग्य नही हे सत !
जैसो कर्म उदय मे आय, तैसो ही फल देके जाय ॥

(६४४)

देवर लक्ष्मण राघव कत, जासु सहायक है हनुमत ।
देव शास्त्र गुरु जासु सहाय, सो सीता क्यों छिपके जाय ॥

इन्द्रजीत का ब्रह्मपास

(६४५)

कतिपय घडी सिया ढिग रह्यो, पाछे उपवन देखन चल्यो ।
वन-उपवन देखे चित लाय, वृक्ष जाति बहु गिनी न जाय ॥

(६४६)

स्त्री जन हनु देख्यो रूप, कामदेव सम अधिक अनूप ।
स्वर्ग इन्द्र या नागकुमार, या बल नारायण अवतार ॥

(६४७)

सुनत बात रावण दुख भयो, कुपित होय उठ ठाडो भयो ।
किंकर कतिपय दिये पठाय, वेग बाँध ल्यावहु इहि ठाँय ॥

(६४८)

बिदा लेय किंकर चल दिये, तत्क्षण नदन-वन मे गये ।
क्रीड़ा करै अजनी बाल, मानहु देख्यो परगट काल ॥

(६४९)

बोले किंकर क्यो रे ढीट, या वन क्यो आयो हे कीट !
महा कृतघ्नी वानर नीच, आई तेरी मृत्यु नगीच ॥

(६५०)

सुनें वचन हो कुपित कुमार, किंकर मार किये सहार ।
बचो एक रावण ढिग गयो, विवरण ज्यो को त्यों सब कह्यो ॥

(६५१)

समझ सोच लकापति राय, सेना बहुतक दई पठाय ।
जीवित बाध लाहु मो पास, नाक-कान कर अग विनास ॥

(६५२)

गये सुभट जहँ हनुमत ठोर, करो युद्ध अतिशय घनघोर ।
हुए हताहत वीर अनेक, भयो रक्त से भू अभिषेक ॥

(६५३)

मारयो कटक कियो सहार, बचो एक नर किसी प्रकार
दशमुख से जा करी पुकार, गई सब सेना यम के द्वार ॥

(६५४)

अहंकार वश वानर वश, वन-उपवन कीनो विध्वस ।
तरुवर जाति न जावे कही, डाल एक नहि ठाडी रही ॥

(६५५)

कुंआ वावडी पुष्कर ताल, तोरण मडप वेदी साल ।
तोडे मदिर ध्वजा विशाल, मानो आयो संकट काल ॥

(६५६)

नगर माँहि कोलाहल भयो, वन माली रावण प्रति गयो ।
स्वामी आयो हनू कुमार, वन विध्वस उडाई क्षार ॥

(६५७)

सुनी बात रावण परजर्‌यो, मानो वैश्वानर घृत पर्‌यो ।
धनुप-वाण कर लियो उठाय, गयो जहाँ कपिध्वज ठहराय ॥

(६५८)

तव तहँ आयो इन्द्रकुमार, मेघनाद वल अपरम्पार ।
जोड हाथ बोले द्वय पूत, देखहु पितु हमरी करतूत ॥

(६५९)

ले आशीष चले द्वय वीर, सेना सहित बढे बलवीर ।
रण दुन्दुभि बज उठी विशाल, सेना रौद्र रूप विकराल ॥

(६६०)

क्रुद्ध कपिध्वज कीनी गाज, मानो पक्षी झपटयो बाज ।
दशमुख नन्दन हनू कुमार, करे परस्पर दोऊ मार ॥

(६६१)

हाथी सो हाथी आ रहे, पालो ले पाले को गहे ।
पैदल को पैदल दे मात, रथी करे रथि को सघात ॥

(६६९)

कबहूँ नाव शकट पै रहे, कबहूँ शकट नाव पै बहे।
एक कहे झूठो आलाप, करि पाखड बधायो आप ॥

(६७०)

या सम सुभट न कोई धीर, क्षत्रिय मध्य महा वलवीर।
एक कहे तू झूठहि भनें, तेरे वचन असत से सनें ॥

(६७१)

कभी पुरुप सुख क्रीडा करे, कभी मागतो दर दर फिरे।
तव तक इन्द्रजीत ले गयो, रावण सन्मुख प्रस्तुत भयो ॥

(६७२)

लेहु पिता यह हनूकुमार, देहु सजा जैसो व्यवहार।
बोल्यो दशमुख सुन हनुमत, तुम हो मम भानेजन कत ॥

(६७३)

सम रिपु के बन आये दूत, तुम सम दूजो कौन कपूत।
सुन रावण के वचन कठोर, मुखर भये तब पवन-किशोर ॥

रावण-भर्त्सना

(६७४)

जिस कुल उपजे पुरुप-पुराण, पूर्वज गण पहुँचे निर्वाण।
ऐसो उज्ज्वल राक्षस वश, जैसो उज्ज्वल मानस-हंस ॥

(६८२)

सीख हमारी करहु प्रमान, भेजहु सिया राम के थान ।
और बात इक सुनियो देव ! रामचन्द्र शिवगामी एव ॥

(६८३)

सयम सदाचार मे दक्ष, हम क्यो छोडें ताको पक्ष ।
सुनि बोल्यो रावण धर मान, अरे चपल वानर नादान ॥

रावण का अहंकार

(६८४)

कहँ के लछमन कहँ के राम, मैं नही जानो इनको नाम ।
वन-फल भखै, कुटो में वास, दीनो दशरथ देश निकास ॥

(६८५)

शस्त्रहीन और राज्य विहीन, नि सहाय कायर अरु दीन ।
वन मे सदा वधिक सो फिरैं, सो लका कैसे सचरैं ॥

(६८६)

मुझ सम बली अन्य नृप नही, मम पौरुष तुम जानो सही ।
भाई कुंभकरण भटमल्ल, मानो दुष्टो के सिर सल्ल ॥

(६८७)

इन्द्रजीत अरु मेघ कुमार, जिनका विक्रम अपरम्पार ।
नर-विद्याधर सेवा करै, निशि वासर वे ठाढ़े रहैं ॥

(६६३)

ज्यो अँजुलि को झरि है नीर, क्रमश छीजै आयु-शरीर।
सगो न कोऊ पुत्री-मात, पुत्र-कलित्र मित्र अरु तात ॥

(६६४)

सगो न कोई किसी को होय, स्वारथ प्रीति करै सब कोय।
भये अनन्त चक्रि भूपाल, किन्तु तिन्हे भी खायो काल ॥

(६६५)

जानत जग को अस्थिर रूप, दीप हाथ रख कूदत कूप।
सीख सुनौ लकापति राय, सिया राम को देहु पठाय ॥

अशरण-भावना

(६६६)

आयु क्षीण होवै तब काल, ग्रसै जीव को रे भूपाल।
इन्द्र नाग जो रक्षक होय, तो भी यम के मुंह मे सोय ॥

(६६७)

जैसे कर्म उदय मे आयँ, तैसे तहाँ बाँध ले जायँ।
जीव बहुत जो लालच करै, कर्म बाँध फिर दोनो फिरै ॥

(६६८)

जब आवे यम को पैगाम, मत्र-तत्र नहिं आवे काम।
दलबल देई देव अपार, नही जीव को राखन हार ॥

(६६९)

हिरण एक जगल मे बसै, भय विपत्ति देखे दश दिशै।
सिंह तासु पै जब चढि आय, तव निरीह को कौन बचाय ? ॥

एकत्व-भावना

(७०६)

जीव गयो जिस जिस गति माँहि, रह्यो अकेलो दूजो नाँहि ।
एकाकी सुख-दुख भुगतत, एकाकी नव जन्म धरत ॥

(७०७)

एकाकी मरघट मे जाय, एकाकी ससार भ्रमाय ।
एकाकी ही बाँधै कर्म, एकाकी ही साधै धर्म ॥

(७०८)

ठाठ बाट आडम्बर युक्त, बना हुआ क्यो अरे विमुक्त ।
लाया नहिं कुछ वैभव साथ, खुले जायँगे दोनो हाथ ॥

(७०९)

तात-मात-सुत-भ्राता सगा, अन्त काल दे जाँहि दगा ।
आतम तेरो शास्वत एक, तिसको भज धर परम विवेक ॥

(७१०)

सोच सदा अपनौ एकत्व, तेरो केवल आतम तत्त्व ।
सीख सुनो लकापति राय, सिया राम को देहु पठाय ॥

अन्यत्व-भावना

(७११)

धन-कन-कचन-दासी दास, जिन पर तू करता विश्वास ।
ये तो भिन्न दिखे प्रत्यक्ष, इन पर क्यो तू करता लक्ष ॥

(७१२)

एक क्षेत्र अवगाही देह, तुझ से अलग सर्वथा येह ।
इस पर भी मत कर विश्वास, इसको निश्चित होय विनाश ॥

(७२०)

मृण्मय घट मे चिन्मय जीव, विष-रस तज अमृत-रस पीव ।
सीख सुनो लकापति राय, सिया राम को देहु पठाय ॥

आस्रव-भावना

(७२१)

आस्रव अनुप्रेक्षा का भाव, सीख सिखावै तुमको नाव ।
स्वय तरै पर तारन हार, बेडापार लगावन हार ॥

(७२२)

जो कहुँ छेद नाव मे होय, ले डूबे यात्री गण सोय ।
जीवन-नौका मे जो छेद, समझ दशानन पाचों भेद ॥

(७२३)

मिथ्यातम अवरति कापाय, योग प्रमाद जिनागम गाय ।
भावास्रव द्रव्यास्रव रूप, कर्म स्रोत दोनो भव-कूप ।

(७२४)

धरै शुभाशुभ जब तक भाव, तब तक डूबै जीवन-नाव ।
आस्रव छिद्र करै जब बद, नये कर्मनि को तब नहिं बध ॥

(७२५)

तुम हो परनारी हरतार, रावण पापास्रव करतार ।
सीख सुनो लकापति राय, सिया राम को देहु पठाय ॥

(७३२)

एक निर्जरा है सविपाक, दूजी है उत्तम अविपाक।
पहली तो सब ही के होय, फल दे के कर्मन को खोय॥

(७३३)

दूजी मे है अति पुरुषार्थ, सिद्धि इसी से हो सर्वार्थ।
पूर्व वद्ध कर्मों का नीर, भरी नाव मे नाव गहीर॥

(७३४)

तप करके जल देहु सुखाय, निर्जर यह अविपाक कहाय।
बारह तप जो कहे जिनेश, तिनको तपै दिगम्बर भेष॥

(७३५)

अपनी ओर निहारो जरा, ताकि कर्म की हो निर्जरा।
सीख सुनो लकापति राय, सिया राम को देहु पठाय॥

लोक-भावना

(७३६)

छह द्रव्यो का ही समुदाय, जहाँ दिखै सो लोक कहाय।
उर्ध्व मध्य एवं पाताल, चौदह राजू तुग विशाल॥

(७३७)

लोक पुरुप ज्यों शीर्ष विहीन, खडो कमर पै द्वय कर दीन।
नहि ब्रह्मा हैं सिरजन हार, विष्णू भी नहि पालन हार॥

(७३८)

नहि महेश करते सहार, है अनादि से यह ससार।
इसका कोई न करता है, इसका कोई न धरता है॥

(७४६)

'दंसण मूलो धम्मो' मान, 'वत्थु स्वभावो धम्मो' जान।
मात्र अहिंसा परमो धर्म, धर्म वही जो काटै कर्म ॥

(७४७)

ससारी दुख तै उद्धार, करि पहुचावै शिव के द्वार।
वही धर्म रत्नत्रय रूप, षड् दर्शन में प्रमुख अनूप ॥

(७४८)

तीन भुवन में सार महान, केवल वीतराग विज्ञान।
दिव्यध्वनि में जो उपदेश, निःसृत करते है तीर्थेश ॥

(७४९)

स्याद्वाद-निश्चय-व्यवहार, सप्त तत्त्व का जहँ विस्तार।
जैन धर्म की करौ प्रतीत, छोड़ो तुम मिथ्यात्व गृहीत ॥

(७५०)

भावनाएँ ये बारह भाव, निरखौ अपनो आत्म-स्वभाव।
सीख सुनो लकापति राय, सिया राम को देहु पठाय ॥

लंका–दहन

(७५१)

सुन कर कपिध्वज को उपदेश, भयो प्रकोपित अति लंकेश।
दियौ बधिक को यों आदेश, अस मारहु असु रहै न शेष ॥

(७५८)

बैठ विमान उडयो आकाश, तत् छिन गयो राम के पास।
लौटत देख्यो अजनि बाल, लक्ष्मण राम और भूपाल ॥

(७५९)

गाजे बाजे से अगवान, स्वागत कियो सभी हनुमान।
भेट्यों निज निज कठ लगाय, सिहासन दीनों पधराय ॥

(७६०)

हो सुचित्त रघु पूछै बात, कहो जानकी की कुशलात।
बोले कपिध्वज जोडे हाथ, समाचार सुनिये रघुनाथ ॥

(७६१)

सप्त समुन्दर कीनें पार, 'लका सुन्दरि' परणी नार।
गयो विभीषण गृह पश्चात्, जिसनें कही भेद की बात ॥

(७६२)

चल्यौ तहाँ तै धरि अभिलाष, पहुच्यो सीता के आवास।
दई मुद्रिका लीनी मात, पूंछी तब द्वय की कुशलात ॥

(७६३)

सो वियोग की सारी कथा, कही सिया सो क्रमश. यथा।
सीता ले बैठी सन्यास, राम बिना नहि लेवें ग्रास ॥

(७६४)

मैंने कुशल सदेशो कह्यो, बारहवे दिन भोजन लह्यो।
मदोदरि सीता के पास, बैठी थी सो दई निकास ॥

(७७१)

दूत वचन सुनि कर लंकेश, भयो जेठ को सूर्य विशेष ।
बाल्यो 'राम-लखन' बलवीर, भले पधारे भरिवे नीर ॥

(७७२)

यो कहि दूत हनन के अर्थ, उठ्यो दशानन शक्ति समर्थ ।
मत्री ने तब कियौ सचेत, दूत कदापि न मारन हेत ॥

(७७३)

सुन कर स्तभित लकेश, कह्यो दूत सो यो सदेश ।
राम-लखन पशु-पक्षि समान, जिनके पख पूंछ नहिं कान ॥

(७७४)

घास फूस वनवासी चरे, नर से विद्याधर क्यो डरे ? ।
रावण को उत्तर सुन दूत, गयौ जहाँ दशरथ के पूत ॥

(७७५)

ज्यो की त्यो कह दीनो बात, सुनी ध्यान से सब रघुनाथ ।
बात विभीषण ने भी सुनो, स्वय सैन्य लायो दस गुनी ॥

(७७६)

लका को बतलायो भेद, मानो भयो नाव मे छेद ।
कुभकर्ण ले रावण पक्ष, आयो सेना ले प्रत्यक्ष ॥

(७७७)

कुभकर्ण एव हनुमत, भिडे परस्पर द्वय बलवन्त ।
भयो युद्ध कई दिन पर्यन्त, कुभकर्ण को कीनो अन्त ॥

विरक्ति

(७८३)

सैना सेवक द्रव्य अपार, सज्जन मित्र बृहत परिवार ।
इन्द्र तुल्य वैभव भरपूर, मिल्यौ हनू को कुडल पूर ॥

(७८४)

तहाँ राज्य कीनो बहुकाल, न्याय नीति युत जनता पाल ।
एक दिवस हनु बैठि विमान, गये मेरु पै जिनवर थान ॥

(७८५)

देव-शास्त्र-गुरु पूजा कीन, धर्म चिन्तवन मे चित दीन ।
रहे जिनालय सारी रात, देख्यो एक विमान निपात ॥

(७८६)

उपजी मन मे घोर विरक्ति, रही न विषयो से आसक्ति ।
यह शरीर यह धन-यह धाम, सभी विनश्वर आठो याम ॥

(७८७)

त्रिया सम्पदा और कुटुम्ब, विष-रस भरे कनक के कुभ ।
ज्यो अजुलि जल टप टप गिरै, भाव-मरण नर छिन २ करै ॥

(७८८)

जब तक आतम ध्यान नहिं करै, तब तक लख चौरासी फिरै ।
मोह वशात् कर्म की पाँति, बाँधै यह नर नाना भाँति ॥

(७८९)

सर्व श्रेष्ठ है पद-निर्ग्रन्थ, दूजो नही मुक्ति को पथ ।
मन मे छायो घोर विराग, त्रिया-धाम-धन दीनै त्याग ॥

महाश्रमण—हनुमान

(७६५)

सात शतक नृप अधिक पचास, हनुमत सग लियो सन्यास।
धार्यो नग्न दिगम्बर भेष, करहिं तपस्या सह तन क्लेश ॥

(७९६)

रानी थी जितनी रनवास, ते सब गईं आर्यिका पास।
तज गृह मोह दीक्षा लीन, क्रमश. हुई सब स्वर्गासीन ॥

(७९७)

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र, पालै मुनि हनुमान पवित्र।
बारह तप आराधन चार, पच महाव्रत समिति विचार ॥

(७९८)

दशों धर्म, परिषह बाईस, यथाख्यात सब धरहि मुनीश।
ग्यारह अंग चौदहो पूर्व, पढ कर ज्ञानी बने अपूर्व ॥

(७९९)

धर्म ध्यान मय शुभ उपयोग, धारै हनूमान करि योग।
सप्तम गुण थानक के भाव, शुक्ल ध्यान अरु शुद्ध स्वभाव ॥

(८००)

धारै मुनिवर शुध उपयोग, तन-चेतन को करै वियोग।
क्षपक श्रेणि मॉडी हनुमान, पहुंचे बारहवे गुण थान ॥

(८०६)

है वजरग वली हनुमान, पर मेरो है यह अनुमान ।
हैं "वज्रागवली" बलवीर, पवनञ्जय सुत गुण गभीर ।।

(८०७)

वीतराग मुद्रा सयुक्त, ज्ञान शरीरी और विमुक्त ।
मान इन्हें जो पूज्य करेय, धर्म धरै बहु पुण्य भरेय ।।

(८०८)

जय जय वीतराग भगवान, जय जय अंजनि सुत बलवान ।
जय जय वायु पुत्र हनुमंत, जय अरिहत सिद्ध भगवत ।।

परिचय

(८०९)

मूल सघ भव तारण हार, गच्छ शारदा गुरु आचार ।
रत्नकीर्ति मुनि अधिक सुजान, तासु पाद मुनि गुर्णहि निधान ।।

(८१०)

है अनत कीर्ति शुभ नाम, कोर्ति अनंत प्राप्त अभिराम ।
वे मुनि ज्ञान गुणों के सिन्धु, उनकी स्तुति केवल बिन्दु ।।

(८११)

तासु शिष्य जिनवर लवलीन, 'ब्रह्मराय' अति प्रतिभा हीन ।
हनु गाथा को कियो प्रकाश, क्रियावंत मुनि को ह्वै दास ।।

(८१९)

सूरत को 'हनुमान-चरित्र', मिल्यो भेट में हमको मित्र ।
मुद्रा राक्षसों की कृपा, भगवन् जानें क्या क्या छपा ॥

(८२०)

हस्त लिखित प्रति मूल पुराण, सन्मुख रखकर पद्म-पुराण ।
कियौ शुद्ध सशोधन खूब, चारौ अनुयोगों मे डूब ॥

(८२१)

कुछ मौलिक कुछ प्रति आधार, लेकर कियौ चरित तैयार ।
मन गढत नहिं कीनी कथा, लिखी पुराणन भाषी यथा ॥

दोहा

(८२२)

कुमुद और पुष्पेन्दु ने, सशोधित कर ग्रन्थ ।
पाठक गण को सौंपियत, जयतु मोक्ष का पंथ ॥

(८२३)

पडित जन जब क्षम्य हैं, तो फिर हम अल्पज्ञ ।
बहुत क्षमा के पात्र हैं, हम कवि युगल कृतज्ञ ॥

कथा-वस्तु

चरम शरीरी चरित-नायक "श्री शैल हनुमान जी" का पावन जीवन-दर्शन स्वतन्त्र रूप से इस चरित काव्य मे निवद्ध है। इस कल्पकाल मे यदि परम लोक प्रियता के पद पर प्रतिष्ठित कोई कथा रही है तो वह है "श्री राम-कथा"।

रामायण अथवा पद्मपुराण वस्तुत. सम्प्रदायातीत ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थो मे सर्दभित प्राय सभी छोटे वडे पात्र श्रीराम को केन्द्र-विन्दु मानकर भी अपनी स्वतन्त्र मौलिक व्यक्तिमत्ता रखते हुए २०वे तीर्थंकर श्री मुनि सुव्रतनाथ जी के प्रशासन की ही प्रभावना करते है। उदात्त आदर्शों वाले पात्रो की इतनी अधिक भरमार इन ग्रन्थो मे रही है कि प्रत्येक ही अपनी गौणता की पर्याय छोडकर मुख्य नायकत्व की भूमिका पर उतरता हुआ दिखाई देता है।

वज्राङ्गवली हनुमान जी भी एक ऐसे ही अलौकिक आदर्श पात्र है जो सामान्यत "राम-दूत" होकर भी हमारे लिये "मुक्तिदूत" के रूप मे परम पूज्य वन गये हैं। चूंकि त्रेसठ शलाका के अतिरिक्त पुण्य-पुरुषो मे उनका नाम प्रात· स्मरणीय है, अत उनके नायकत्व मे जितने भी स्वतन्त्र ग्रन्थो का प्रणयन हो थोडा है। प्रस्तुत काव्य ग्रन्थ भी कवि श्री "ब्रह्मराय" जी का इसी दिशा मे एक लघु प्रयास है।

श्री शैल हनुमान जी के पूर्व भव—गर्भ, जन्म आदि के सुप्रसग जितने अधिक रोचक और रोमाचक तथा चमत्कारिक

"हाँ, कन्या की माँ महारानी हृदयवेगा यही है, सुख्यात झील पर सहेलियो सहित जल-क्रीडा हेतु गई हैं। आती ही होगी।"

"...... तो शाह महेन्द्रराय जी आपकी सुपुत्री के साथ मेरे पुत्र पवनकुमार का सबध मेरी ओर से तो सुनिश्चित है, अब आप अपना निश्चय प्रकट कीजिये। कुमार की माता केतुमती भी इस सुखद सबध से परम सतुष्ट हैं।"

"परम आदरणीय शाह श्री प्रह्लादराय जी! सर्वाङ्ग सुन्दर-सुशील एव शूरवीर किशोर पवनञ्जय जैसे श्रेष्ठ वर को पाकर मुझे अब अन्य किसी भी वर प्राप्ति की आकाक्षा नही। मैं कुमार पर पूर्णतया मुग्ध हूँ—अनुरक्त हूँ। मेरी ओर से भी यह सयोग सबध सुनिश्चित रहा।"

उपरोक्त वार्तालाप का शुभारम्भ तो दो अपरिचित व्यक्तियो से हुआ किन्तु समापन आत्मीयता के जिस मधुमय वातावरण में निष्पन्न हुआ वह परिचय की कृत्रिम सीमा लाँघ कर समधी युगल की स्निग्ध भूमिका पर स्थित होकर एकमेक हो गया। ये दो समधी हैं महेन्द्रपुर के राजा महेन्द्रराय एव आदित्यपुर के नृपति प्रह्लादराय!

अन्तत' कुमारी अजना एव कुमार पवन का सुखद वाग्दान स्वरूप प्रणय सबध युगल पक्षो के माता-पिता, सामन्त, सचिव आदि की उपस्थिति मे सुनिश्चित होगया। भले ही नायक नायिका की अनुपस्थिति इस सुखद सुखात दृश्य मे बनी रही हो!

× × ×

पवन-प्रिय मित्र प्रहस्त! राजकुमारी अजना रूप-गुण और प्रतिभा की साक्षात प्रतिमा है। किन्तु उसकी प्रशस्ति के आख्यान अव श्रुति के माध्यम से नही वलिक साक्षात् दर्शन

"कहाँ के सुन्दर वर ढूंढे हैं इनके पिताश्री ने ? इनसे अच्छे तो ·· ··।"

वस फिर क्या था ? रग मे भग हो गया—अमृत मे विष घुल गया । ·· ·और अधूरी आघात युक्त वात सुनकर ही भावावेश मे वे दोनो मित्र तत्क्षण ही उल्टे पैरो आदित्यपुर वापिस हो जाते हैं। रास्ते भर पवन का अन्तर्द्वन्द चलता रहता है ··।

आखिर उस दुष्टा अजना ने मेरी निंदा सुनकर भी उसका कोई प्रतीकार क्यो नही किया ? प्रत्युत्तर क्यो नही दिया ? क्या वह भी उस ढीट-दुष्टा दासी की वातो से सहमत थी ? ·· ·· ·इसका दण्ड तो उसे मिलना ही चाहिये । पवनकुमार ! अव यह शादी न होगी और विवशता मे हुई भी तो ·· · चिर वियोग ··· ·चिर परित्याग ।

दम्पत्ति अब एक तो घर मे रहेगे ही नही यदि रहे भी तो ३६ के अक बन कर ।

·· · · विवाह तो होना था, सो हो ही गया । किन्तु क्षण भर का वह सयोग एक दो नही प्रत्युत पूरे २२ वर्षीय चिर वियोग के रूप मे परिणत हो गया ।

अजना की इस चिर विरह व्यथा की अनुभूति उस कली से पूछिये जो खिलने के पहिले ही पददलित कर दी गई हो । एक ही घर में दोनो दम्पत्ति है किन्तु आश्चर्य ! अजना पर पवन का दृष्टि निक्षेप भी नही, सलाप तो रहा कोसो दूर ..।

लकाधिपति रावण के दूत ने एक सन्देश लाकर पवन को दिया । उसमे लिखा था .. ..

राजा वरुण ने हमसे शत्रुता मोल ली है अत युद्ध अनिवार्य है और इस युद्ध मे विजय केवल आप के ही साहाय्य पर निर्भर

अजना भूमि शय्या पर लेटी हुई करवटो पर करवटें बदल रही है और उसकी सखी वसतमाला उसकी परिचर्या मे तल्लीन है।

" ....खट..... खट... खट दरवाजे की खटखटाहट सुन कर युगल सखिया भयभीत हो जाती है।

इतनी रात गये किस पर पुरुष ने यहा आने का दुस्साहस किया ? वसतमाला ने वातायन से झाका तो प्रहस्त और पवन को खड़े पाया। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। दरवाजा खुल जाता है। पवन अजना के कक्ष मे और प्रहस्त तथा वसत-माला अपने २ अतिथि कक्ष मे पहुँच जाते है।

× × ×

"प्रिये! अब मुझे बिदा दो, ताकि मैं यहा आने के अपने गुप्त रहस्य को छिपाये रख सकू तथा समुचित समय पर ससैन्य रणभूमि मे पहुँच कर अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकूँ!"... पवन ने अजना से कहा।

नाथ! आपने मुझ अभागिनी पर महती कृपा की, मैं आ को सहर्ष बिदा करती हूँ . . .किन्तु मुझे ऐसा ज्ञात होता है कि मैं गर्भवती हो रही हूँ .. हमारा आपका सुखद सगम चूकि चिर-वियोग के अनन्तर प्रच्छन्न रूप से हुआ है, इसलिये भावी आशकाओ और कलको से बचने के लिये आप अपनी यह रत्न-जटित स्वर्ण-मुद्रिका मुझे देते जाईये, जो सदैव हमारे आपके सुखद सयोग की प्रतीक वनकर प्रत्येक आक्षेप का उत्तर अपनी मौन भाषा मे देती रहे।" .. अजना ने सकुचाते हुए अत्यन्त विनम्र शब्दो मे पवन से निवेदन किया।

× × ×

वाल-सूर्य के उदय होने की अग्रिम सूचना लालिमा द्वारा मिलती है, वैसे ही अजना भी दिन और मास वीतते-वीतते

और आतंक से भरा वायु मडल!

निदात एक अधेरी गुफा को आश्रय स्थल समझ कर वे दोनोवही ठहर जाती है। समीप ही चारण ऋद्धिधारी मुनिराज ध्यानमग्न अवस्था मे दृष्टिगत होते है। घटाटोप विपदाओ का अन्त करने वाले मानो सौभाग्य सूर्य के ही दर्शन हुए! भक्ति भाव पूर्वक वदना करके शान्तचित्त से उनके पादमूल में बैठ जाती हैं!

अजना के पूर्व भव कृत पाप कर्म की दृश्यावली दिखाते हुए महामहिम मुनिराज उन्हे तत्त्वोपदेश देते है और आश्वस्त करते है कि हे बालिके! तुम चिन्ता मत करो। शीघ्र ही तुम्हारे दु खो का अत होने वाला है, क्योकि तुम्हारी पावन कुक्षि से जिस दैदीप्यमान तेजस्वी पुत्र-रत्न का प्रादुर्भाव होने वाला है वह चरम शरीरी मोक्षगामी जीव वज्राङ्गवली हनुमान है। उनकी प्रखर पुण्य रश्मियो से तेरे पाप तिमिर का शीघ्र ही विध्वस होगा!

वाईस वर्षीय चिर वियोग एव मिथ्या कलक के कारणो के रहस्य का उद्घाटन करते हुये मुनिराज वोले—पूर्वभव मे तूने द्वेष वश जिन-प्रतिमा का अपहरण करके उसे वावडी मे फिकवा कर २२ घडी तक जल मग्न रखा था। उसी के विपाक स्वरूप तुझे अपने पति से २२ वर्ष का दीर्घकालीन विछोह हुआ। जिन विम्ब का घोर अविनय होने से तुझे भी कलकित होना पडा!

"धर्म वृद्धिरस्तु, कल्याणमस्तु" कहकर वे निस्पृह निग्रन्थ मुनि आकाश मार्ग से विहार कर गये।

वसतमाला गुफा के द्वार पर सजग प्रहरी वनकर बैठी है। भीतर गुरुता के भार से परिश्रान्त अजना क्षण भर को ही

से उडता हुआ उसी गुफा के ऊपर से गुजर रहा था कि अजना का अरण्य रोदन सुनकर नीचे उतरा। अबला युगल से पूर्व वृत्तान्त सुनकर अत्यन्त दुखी हुआ परन्तु ज्योही पारस्परिक परिचय का आदान-प्रदान का सुअवसर आया तो वह सहानुभूति वात्सल्य और ममता के आँसुओ से भरे समुद्र मे डूब गई !

"बेटी ! तुम्हारा नाम .... पता..... ?"

"अजना !"

"राजा महेन्द्रराय की बेटी, प्रहलादराय की पुत्र वधू ?"

"जी !"

"और आप का परिचय .....?"

"मैं हनुवर द्वीप का राजा प्रतिसूर्य.. तुम्हारा मामा।"

मामा ! मामा !! मामा !!! सारा गगन-समग्र भू-मडल एक माँ की ममता से नही, बल्कि सैकडो माँ माँ की ममता से गूँज गया।

× × ×

नीले निर्मल आकाश मे उडान भरता हुआ प्रतिसूर्य का तेजगामी विमान पवन से अठखेलिया करता हुआ हनुवर द्वीप की ओर वढा जा रहा है। अतीत की धुधली छायाओ और भविष्य की स्वर्णिभ मायाओ मे खोई हुई पुलकित मना अजनी अपनी सखी-सहचरी वसतमाला तथा मामा-मामी के साथ उसी विमान मे आरूढ है। इन चारो प्राणियो का आकर्षण केन्द्र बिन्दु वना हुआ है—वह नवजात शिशु, जिसकी चापल्य पूर्ण शारीरिक विविध सुन्दर चेष्टाएँ उमगो की सीमाएँ लाँघ जाने को आतुर हो रही हैं। उसकी मृदुल किलकारियो से विमान का अन्तरग आनन्द से भर गया है। जिस भाँति भेद विज्ञानियो की निर्बन्ध आत्माएँ शरीर के बधनो को तोडकर मुक्ति के

अंजना के दर्शनो मे समर्पित करने वापिस अपने घर पुटभेदन प्रत्या-वर्तित होते है तो वहाँ की सारी कथा उनके वियोगी हृदय पर सौ सौ हथोडो की चोट करती है; फिर वियोगी का अन्तर्द्वन्द वियोगी ही जानता है। उसे कवि भी अपनी वाणी द्वारा व्यक्त करने मे असमर्थ होता है। फलत विक्षिप्त पवन अपने माता-पिता राज नगर परिवार सव की घोर उपेक्षा करके अपने श्वसुरालय महेन्द्रपुर पहुँचता है। वहाँ भी अजना को न पाकर वियावान वीहड वन मे अनशन धारण कर सन्यास की मुद्रा मे बैठ जाता है। वहाँ पवन का एक मात्र साथी उनका हाथी ही था जो किसी को भी अपने स्वामी के समीप नही जाने देता था।

अव खोये हुए पवन की खोज होती है—उभय पक्ष से अर्थात् पितृ पक्ष से और श्वसुरालय की ओर से। अन्तत राजा प्रतिसूर्य द्वारा पवन को अजनी की क्षेम कुशलता का कर्णप्रिय शुभ सवाद सुनाया जाता है। जिससे जगल का विषाद मय वातावरण आनन्द मगल के उल्लास से निनादित हो उठता है।

समधी सबधियो का यह सुखद सम्मेलन हनुवरद्वीप पहुँचता है। युगल दम्पत्ति के मधुर मिलन से अवनी अम्बर पुलकायमान हो उठते हैं।

× × ×

वस्तुत हमारे चरित्र नायक हनुमान जी की कथा को उनके जनक जननी के वियोग-सयोग-शृङ्गारो ने जितना करुण और रोचक वनाया है। उतनी ही शौर्य एव विरक्ति पूर्ण स्वय उनकी अपनी ही जीवन गाथा है।

× × ×

इतर सम्प्रदायो में कामदेव श्री शैल हनुमान जी को वाल

परन्तु वहां भी हनुमान जी ने द्वादश अनुप्रेक्षाओं द्वारा ससार का वास्तविक स्वरूप समझाकर अभिमानी रावण को सबोधित ही किया जो कि एक न्याय नीति पूर्वक जीवन यापन करने वाले सद्गृहस्थ का प्रधान-पुनीत धर्म है।

हमारे चरित नायक शैल हनुमान के इस उद्बोधन ने रावण की प्रज्वलित कोपाग्नि मे घृत का कार्य किया। फलस्वरूप बधिक को इनके बध करने का आदेश दिया गया; किन्तु बध प्रयास विफल रहे। स्वय अपनी मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन करते हुए वे कहते हैं '—कि यदि मेरी लगोटी मे रुई गुच्छ की पुच्छ सलग्न कर उसे तेल-घृत युक्त करके मशाल का रूप दिया जावे तो अवश्य ही तुम्हे सफलता मिलेगी। अन्तत ऐसा ही किया गया। फल क्या हुआ सो आप सव जानते ही है कि सारी सोने सी लका मे अग्नि काड का वीभत्स दृश्य उपस्थित हो गया। जिससे लका का सारा जन-जीवन त्रस्त हो उठा।

तत्पश्चात् घमासान राम-रावण युद्ध होता है। नियमानुसार नारायण लक्ष्मण द्वारा प्रतिनारायण रावण का सहार होता है। सोने सी लका का घोर पतन होता है। विभीषण को नव निर्मित लकोपनिवेश का उत्तराधिकारी घोषित कर उसका राज्याभिषेक किया जाता है। श्री सीताजी पुन श्री राम को प्राप्त होती हैं। इत्यादि।

दूसरे आगे के प्रसग भले ही श्री रामचन्द्र जी के नायकत्व मे अन्यान्य पात्रों द्वारा उपस्थित किये गये हो परन्तु श्री हनुमान जी द्वारा और क्या सेवायें श्री रामचन्द्र जी के प्रति अर्पित की गई उनका वर्णन इस ग्रथ मे देखने को नही मिलता। सभवत. वे प्रसग श्री ह[illegible] से असबद्ध हो [illegible]

कवि श्री ब्रह्मराय जी ने उनके [illegible]स्थ जीवन का